pb
प्रवासी भारतीय
अप्रैल २०१२। वर्ष ५। अंक ४

भारत को उसके प्रवासी समुदाय से जोड़ते हुए

लक्ष्य है आकाश

अप्रैल में भारत के अंतरिक्ष एवं प्रक्षेपास्त्र वैज्ञानिकों ने रिसैट-१ और अग्नि-५ बैलिस्टिक मिसाईल का प्रक्षेपण कर देश को दोहरा गौरव प्रदान किया। सफलताओं के इस सफर पर एक नज़र

प्रवासी भारतीय
कार्य मंत्रालय

साथ में

दूसरी ज़िंदगी। खेल में शाहरुख का जलवा। जीवन के लिए आहार

GLOBAL – INDIAN NETWORK OF KNOWLEDGE (GLOBAL–INK):

"THE VIRTUAL THINK TANK"

AN INITIATIVE OF THE MINISTRY OF OVERSEAS INDIAN AFFAIRS

Global –INK positioned as a strategic "virtual think tank" connects Overseas Indians (knowledge providers) with the development process (knowledge receivers) in India and empowers them to partner in India's progress.

Being a next generation knowledge management, collaboration and business solution platform, Global-INK provides context to connect knowledge experts with knowledge seekers Consequently, these connections enable flow of knowledge and expertise from the Diaspora back into India and facilitate collective action.

Global – INK will catalyze Diaspora ability and willingness into well thought out projects and programs for development, transform individual initiatives into community action and achieve critical mass in chosen verticals.

The portal can be accessed only by registered users. Registration request can be submitted by filing out the registration form located on the Global-INK homepage (www.globalink.in)

Confederation of Indian Industry

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय
Ministry of Overseas Indian Affairs

OIFC
Overseas Indian Facilitation Centre

pb
प्रवासी भारतीय

भारत को उसके प्रवासी समुदाय से जोड़ते हुए

सत्यमेव जयते

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय
Ministry of Overseas Indian Affairs
www.moia.gov.in
www.overseasindian.in

एन. सिम्टे द्वारा प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय के लिए प्रकाशित एवं मुद्रित
अकबर भवन, चाणक्यपुरी
नई दिल्ली-११००२१
वेबसाइटः http://moia.gov.in
www.overseasindian.in

प्रवासी भारतीय मासिक जर्नल है। इस जर्नल में प्रकाशित लेख और विचार लेखकों के हैं और ये आलेख प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय (एमओआईए) के विचार को पूरी तरह प्रक्षेपित नहीं करते। सर्वाधिकार सुरक्षित है। एमओआईए की अनुमति के बगैर जर्नल के किसी भी अंश का न तो इस्तेमाल किया जा सकता है और न ही इन्हें प्रकाशित किया जा सकता है। मंत्रालय की अनुमति के बगैर इन अंशों का इलेक्ट्रॉनिक व यांत्रिक प्रकाशन के लिए इस्तेमाल भी नहीं किया जा सकता है। प्रतिलिपि तैयार करने के लिए भी पूर्वानुमति जरूरी है।

संपादकीय पत्र व्यवहार और संपर्क के लिए *pravasi.bharatiya@gmail.com* का इस्तेमाल करें।

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय की ओर से आईएएनएस (www.ianspublishing.com) द्वारा डिजाइन और तैयार।

अनित प्रिंटर्स
१८९१, ज्ञानी बाजार,
अपोजिट डी-५६ एन.डी.एस.ई
पार्ट-१,कोटला मुबारकपुर,
नई दिल्ली-११०००३ **में मुद्रित**

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय
Ministry of Overseas Indian Affairs
www.overseasindian.in

विषय-वस्तु

10

लक्ष्य है आकाश
अप्रैल में भारत के अंतरिक्ष एवं प्रक्षेपास्त्र वैज्ञानिकों ने रडार इमेजिंग सैटेलाइट (रिसैट-१) और ५,००० किलोमीटर रेंज की अग्नि-५ बैलिस्टिक मिसाइल का प्रक्षेपण कर देश को दोहरा गौरव प्रदान किया है। सफलताओं के इस सफर पर एक नज़र

18

दूसरी ज़िंदगी
विशेष पेंशन एवं जीवन बीमा योजना से विदेशों, खासकर, खाड़ी देशों में रह रहे पचास लाख से अधिक अकुशल एवं अर्ध-कुशल कामगारों को लाभ मिलेगा

20

येल में शाहरुख का जलवा
इस आईवी लीग संस्थान ने बॉलीवुड बादशाह शाहरुख खान को येल के सर्वश्रेष्ठ सम्मानों में से एक चब फेलोशिप देकर सम्मानित किया

38

रे के कामरेड
शिखर सिने पुरुष सत्यजीत रे के साथ काम करने का मतलब क्या था, इस पर अपुर संसार के मुख्य अभिनेता सौमित्र चटर्जी ने रोशनी डाली

40

लाड़ली
अभी ना जाना छोड़कर...कि केक अभी कटा नहीं...कि पेट अभी भरा नहीं... अपने १००वें जन्मदिन पर मनोरंजन दुनिया की 'लाड़ली' जोहरा सहगल इसी अंदाजा में गुनगुनाईं

41

मुंबई और मंटो
महज ४३ साल की अपनी छोटी ज़िंदगी में मंटो अपने पीछे जो साहित्यिक विरासत छोड़ गए, उसे उर्दू अदब के सर्वाधिक गंभीर और लोकप्रिय अवदानों में से एक माना जाता है

यात्रा

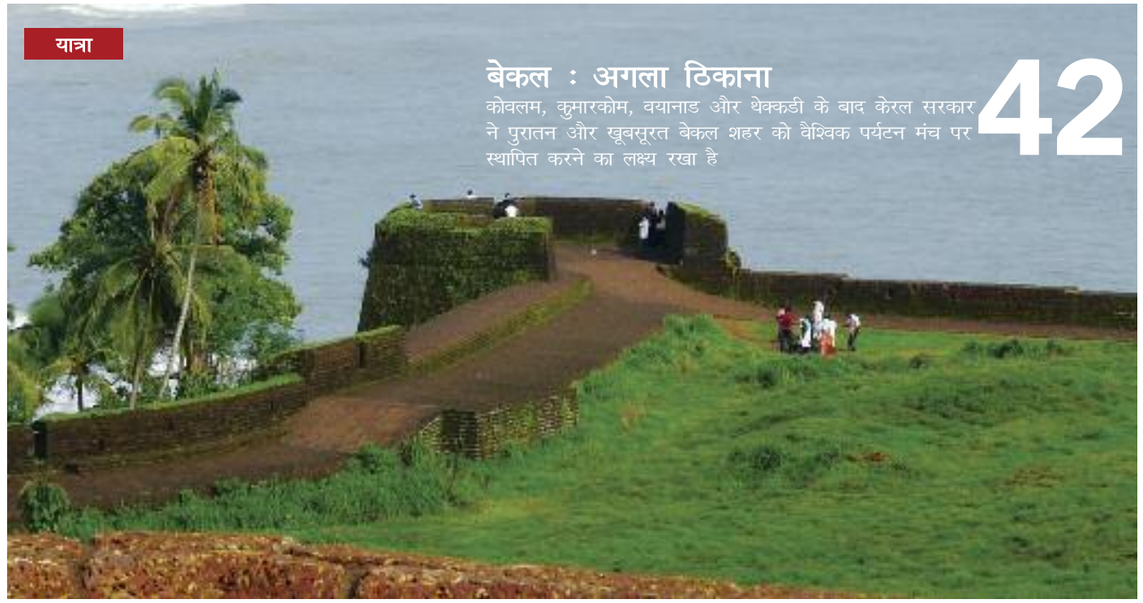

बेकल : अगला ठिकाना
कोवलम, कुमारकोम, वयानाड और थेक्कडी के बाद केरल सरकार ने पुरातन और खूबसूरत बेकल शहर को वैश्विक पर्यटन मंच पर स्थापित करने का लक्ष्य रखा है

42

व्यंजन

44

जीवन के लिए आहार
'रसोईघर में कोई गोपनीयता नहीं', यही है सेलेब्रिटी शेफ विकास खन्ना का मूल मंत्र, जिनका खास व्यंजन गोबी का पकोड़ा हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को परोसा गया था

32

सिर्फ भुजिया भर नहीं....
राजपूती जागीरदारी व्यवस्था के सबसे पुराने गढ़ों में से एक बीकानेर ने पुराने ज़माने की अपनी संवेदनाओं और मूल्यों से समझौता किए बगैर खुद को समय के हिसाब से ढाला है, यह कहना है राज्यश्री कुमारी बीकानेर का

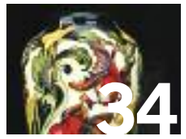

34

नए ज़माने के संग्राहक
वेजवुड कटलरी से लेकर मूरक्रॉफ्ट ग्लास मूर्तियां आदि जैसे आकर्षक यूरोपीय एवं अमेरिकी 'आंतरिक सज्जा उत्पाद' भारतीय बाजार में दस्तक दे रहे हैं

36

मंज़िल आस्ट्रेलिया
ब्रिटेन का नुकसान आस्ट्रेलिया का लाभ है। ब्रिटेन के सख्त वीजा कानून भारतीय छात्रों को आस्ट्रेलिया की ओर रुख करने को प्रेरित कर रहे हैं

स्वच्छ ऊर्जा : भारत की लंबी छलांग

भारत ने स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में लंबी छलांग लगाई है और इसकी पुष्टि इससे होती है कि २०११ में इस क्षेत्र में निवेश में ५४ फीसदी का इजाफा हुआ। एक नए अध्ययन के मुताबिक सिर्फ एक साल में भारत इस क्षेत्र में जी-२० देशों के बीच १०वें से छठे स्थान पर पहुंच गया। इस क्षेत्र में तेज विकास का नेतृत्व पवन ऊर्जा क्षेत्र ने किया, जिसकी भारत में कुल १०.२ अरब डालर के निवेश में कुल ४.६ अरब डालर की भागीदारी रही और एक साल के भीतर २.८ जीडब्ल्यू पावर का अतिरिक्त सृजन हुआ, जो पवन ऊर्जा उत्पादन में शानदार ३८ फीसदी की वृद्धि है। द प्यू चैरिटेबल ट्रस्ट्स की रिपोर्ट में यह कहा गया है। प्यू के क्लीन एनर्जी प्रोग्राम की निदेशक फाइलस कटीनो ने कहा, ''कई कदमों के बूते भारत २१ सदी में स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्र के विकास के मामले में अग्रणी देश बन गया है, जिसने पांचवीं सर्वाधिक पंचवर्षीय निवेश विकास दर और संस्थापित अक्षय ऊर्जा क्षमता विकास के क्षेत्र में आठवीं सर्वाधिक पंचवर्षीय विकास दर हासिल करने वाले देश की हैसियत हासिल कर ली है।''

उन्होंने कहा, ''यह देश एशिया/ओसेनिया क्षेत्र में इस उद्योग की उच्च संभावना वाला देश बन गया है और इस साल भी निजी निवेश के लिए टॉप ठिकाना बना रहेगा।''

भारत शीर्ष उड्डयन बाजार बनेगा

भारत में विमानन यातायात में तेज वृद्धि को देखते हुए इसके तीसरा सबसे बड़ा उड्डयन बाजार बनने की संभावना है। एक शीर्ष अधिकारी ने हाल ही में इसके बारे में यह कहा।

ब्यूरो ऑफ सिविल एविएशन सिक्योरिटी में सुरक्षा आयुक्त (नागरिक उड्डयन) गुरजोत सिंह माल्ही ने कहा, ''विमानन यातायात के लिहाज से भारती उड्डयन बाजार का तेज विकास हो रहा है। भारत वैश्विक उड्डयन बाजार में ९ वें पायदान से तीसरे पायदान पर पहुंच सकता है। ऐसे में इसके लिए और अधिक सशक्त सुरक्षा प्रणाली की जरूरत पड़ेगी।''

उन्होंने कहा, ''ब्यूरो ने अत्याधुनिक तकनीकों की उपलब्धता, सुरक्षा कर्मियों के कौशल विकास, उन्नत तकनीकी के इस्तेमाल के प्रशिक्षण के बूते उड्डयन सुरक्षा से जुड़े सभी भागीदारों की भूमिका को सशक्त बनाने की कोशिश की है।''

पिछले सात वर्षों में नागरिक उड्डयन क्षेत्र में १८.४ फीसदी की वृद्धि दर्ज हुई है।

दोनों सूडान में भारतीय तेल निवेश सुरक्षित

सूडान एवं दक्षिण सूडान दोनों ने भारत को आश्वस्त किया है कि उनके तेल उद्योग में उसका २.५ अरब डालर का निवेश पूरी तरह सुरक्षित है और दोनों देशों के बीच तेल राजस्व को लेकर गहराते विवाद का इस पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

सूडान के लिए भारत के विशेष दूत एवं विदेश मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव अमरेंद्र खतुआ को खार्तून एवं जुबा में हाल ही में इन देशों के शीर्ष मंत्रियों एवं अधिकारियों के साथ मुलाकात के दौरान यह आश्वासन दिया गया।

ओएनजीसी विदेश लिमिटेड (ओवीएल), जो भारतीय तेल कंपनी ओएनजीसी की विदेश इकाई है, ने ग्रेटर नील पेट्रोलियम ऑपरेटिंग कंपनी, जिसमें इसकी २५ फीसदी भागीदारी है, के तहत अविभाजिक सूडान में पेट्रोलियम खोज एवं उत्पादन में २.५ अरब डालर का निवेश किया था।

दोनों सूडान के बीच संघर्ष के कारण सूडान को रोजाना १२,००० बैरल तेल की आपूर्ति करने की प्रतिबद्धता खतरे में पड़ गई है, जिससे ८ मिलियन डालर से अधिक का नुकसान हो चुका है।

अब भारत से अमेरिका में तारों का दर्शन!

दिल्ली के करीब ८० स्कूलों के छात्रों को भारत बैठे अमेरिका में रात में तारों का दर्शन करने का मौका मिलेगा। इंटरनेशनल एस्ट्रोनॉमिकल सर्च कोलैबोरेशन के साथ गठजोड़ वाली एक परियोजना के तहत इन छात्रों को एक इंटरनेट दूरबीन की मदद से इस दृश्य को निहारने का मौका मिलेगा।

भारत में अपनी मेज पर बैठे छात्र रिमोट कंट्रोल संचालित दूरबीनों की मदद से रात में अमेरिका में तारों का दर्शन करेंगे और वे आकाश गंगाओं, उल्काओं, नीहारिकाओं और तारा गुच्छों की बेहतर तस्वीरें भी ले सकेंगे।

इंटरनेशनल स्पेस साइंस परियोजना - इंटरनेट टेलीस्कोप - को भारत में स्पेस (साइंस पोपुलराइजेशन एसोसिएशन ऑफ कम्युनिकेशंस एवं एडुकेटर्स) नामक एक ऐसे संगठन द्वारा लाया गया है जो युवाओं में खगोल विद्या के बारे में जागरूकता फैलाने का प्रयास कर रहा है।

इंटरनेट टेलीस्कोप स्कूली छात्रों को नई दिल्ली में आयरनवुड नॉर्थ ऑब्जर्वेटरी में लगी १० इंच और १६ इंच की स्किमिड्ट कैसेग्रेन दूरबीनों को नियंत्रित करने में समर्थ बनाता है।

स्पेस के सी.बी. देवगन ने कहा, ''यह पहला मौका है जब इतने बड़े पैमाने पर भारत में इस तरह की परियोजना लाई गई है। चुनिंदा छात्रों को प्रशिक्षित होने एवं इस रोमांचक वास्तविक विज्ञान परियोजना में भागीदार बनने का मौका मिलेगा।''

केरल के विज्ञापन को प्राग में प्रतिष्ठित पुरस्कार

केरल पर्यटन विभाग के विज्ञापन अभियान 'योर मोमेंट इज वेटिंग' को प्रतिष्ठित प्राग इंटरनेशनल एडवरटाइजिंग फेस्टिवल (प्लैफ) में 'स्टेट एज एन एडवरटाइजर' श्रेणी में पुरस्कृत किया गया। केरल के पर्यटन मंत्री ए.पी. अनिल कुमार ने कहा, ''हमारे लिए यह अप्रत्याशित पुरस्कार है। यह ब्रांड केरला के प्रबंधन में केरला टूरिज्म की कड़ी मेहनत एवं उसकी असरदार विपणन रणनीतियों का सुखद परिणाम है।''

केरला टूरिज्म के साथ यह मंच शेयर करने वालों में मैकडोनल्स जर्मनी, सोनी पिक्चर्स, हीनेकेन एवं लेगो जैसे नामी ब्रांड शामिल हैं। प्लैफ वैश्विक विज्ञापन कैलेंडर का एक विशेष आयोजन माना जाता है।

विदेशों में भारतीय घरेलू कामगारों की मांग : रवि

खाड़ी देशों, मलेशिया, सिंगापुर और कुछ यूरोपीय देशों समेत विदेशों घरेलू नौकरानियों, नर्सों आदि जैसे कुशल कामगारों की भारी मांग है। प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री वायलार रवि ने यह कहा।

लोक सभा में सवालों का उत्तर देते हुए रवि ने कहा कि १०वीं पास से अधिक की शैक्षिक योग्यता वाली होम नर्सों और आव्रजन अनुमति जरूरी नहीं (ईसीएनआर) श्रेणी के देशों की ओर आव्रजन करने वाले कामगारों की भर्ती की प्रक्रिया आव्रजन कानून, १९८३ के अंतर्गत विनियमित नहीं है। इस मामले में मंत्रालय के पास कोई आंकड़ा उपलब्ध नहीं है।

उन्होंने यह भी कहा कि सरकार की नीति है महिलाओं समेत सभी भारतीय कामगारों का सुव्यवस्थित एवं कानूनी आप्रवासन सुनश्चित करना, गैर-कानूनी एवं अनियमित आव्रजन को हतोत्साहित करना और आव्रजन कानून एवं १७ ईसीआर अधिसूचित देशों के लिए आव्रजन अनुमति जरूरी (ईसीआर) पासपोर्ट धारक के आव्रजन के लिए बने कानूनों के मुताबिक आप्रवासियों की सुरक्षा एवं कल्याण को सुनिश्चित करना।

वेस्टमिनिस्टर यूनिवर्सिटी भारत से रिश्ता प्रगाढ़ करेगा

ब्रिटेन स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टमिनिस्टर ने अपने भारतीय छात्रवृत्ति कार्यक्रम का विस्तार करने के लिए मुंबई के एचआर कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड इकोनॉमिक्स के साथ एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया है। अधिकारियों ने इसकी पुष्टि की।

वेस्टमिनिस्टर यूनिवर्सिटी के समकुलपति मिसज़का गुज़कोव्स्का ने इसकी घोषणा करते हुए कहा, ''भारत हमारे यहां अध्ययन के लिए आने वाले भारतीय छात्रों, हमारे साथ अनुभव बांटने के लिए आने वाले भारतीय अध्यापकों के जरिए एवं शोध भागीदार के रूप में वेस्टमिनिस्टर यूनिवर्सिटी का पुराना भागीदारी बना रहा है।''

विश्वविद्यालय ने नई दिल्ली स्थित जामिया मिल्लिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी के साथ नई भागीदारी की भी घोषणा की है।

गुज़कोव्स्का ने कहा, ''हम भारत के साथ वर्तमान रिश्ते को अधिक से अधिक सशक्त, टिकाऊ और परस्पर लाभकारी बनाना चाहते हैं।''

देश की प्रथम वित्तीय नगरी

वित्तमंत्री प्रणब मुखर्जी ने देश की प्रथम वित्तीय नगरी, जिसे बेंगलुरु से ३० किलोमीटर दूर बंगालुर में अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास हार्डवेयर पार्क में सरकार संचालित आईएफसीआई इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट लिमिटेड (आईआईडीएल) द्वारा विकसित किया जा रहा है, की आधारशिला रखी। आईएफसीआई के मुख्य कार्यकारी एवं आईआईडीएल चेयरमैन अतुल कुमार राय ने इस मौके पर कहा, ''हम कर्नाटक सरकार द्वारा मुहैया ५० एकड़ जमीन पर भारत की पहली वित्तीय नगरी का विकास कर रहे हैं, जो अग्रणी शहरी ढांचागत सुविधा होगी। शीर्ष बैंकों एवं संस्थानों की मदद से इसका विकास किया जा रहा है।''

इस नगरी का प्रारूप ज़ेन जियोमैंसी अवधारणा पर आधारित है, जिसमें प्रभावशाली प्रवाह एवं गतिविधि पैटर्नों का इस्तेमाल होगा।

केरल में वाणिज्य दूतावास खोलेगा यूएई

संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) ने केरल की राजधानी में अपना वाणिज्य दूतावास स्थापित करने का फैसला किया। विदेश राज्यमंत्री ई. अहमद ने इस पर रोशनी डालते हुए यह कहा।

उन्होंने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''तिरुवनंतपुरम को वाणिज्य दूतावास के लिए चुने जाने के पीछे यह प्रावधान है कि इसकी स्थापना सिर्फ राज्य की राजधानी में हो सकती है।''

मंत्री ने कहा कि यह वाणिज्य दूतावास अगले कुछ महीनों में काम करना शुरू कर देगा।

यह फैसले की घोषणा पिछले साल जुलाई तब की गई थी जब भारत में यूएई के राजदूत मोहम्मद सुल्तान अब्दल्ला अल ओवैस ने केरल के मुख्यमंत्री ऊमेन चैंडी से मुलाकात की थी।

इस नए दूतावास से केरल के उन लोगों को फायदा होगा जो काम के लिए यूएई जाना चाहते हैं। फिलहाल उन्हें नई दिल्ली में यूएई दूतावास एवं मुंबई में यूएई वाणिज्य दूतावास से अपने दस्तावेज़ों को प्रमाणित करवाना पड़ता है।

इससे केरल एवं यूएई के बीच व्यापार को बढ़ावा मिलेगा।

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय द्वारा किए गए एक अध्ययन के मुताबिक राज्य के १० लाख से अधिक लोग यूएई में कार्यरत हैं।

भारत से सेशेल्स को ५ करोड़ डालर की वित्तीय सहायता

इसका ज़िक्र करते हुए कि भारत सेशेल्स का हमेशा 'विश्वसनीय भागीदार' बना रहेगा, राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने हिंद महासागर स्थित इस द्वीप राष्ट्र के लिए ५ करोड़ डालर के कर्ज एवं २.५ करोड़ डालर के अनुदान की घोषणा की।

सेशेल्स के अपने समकक्ष जेम्स एलिक्स माइकल से बातचीत के बाद एक प्रेस

बयान में पाटिल को यह कहते हुए उद्धृत किया गया है, ''भारत सेशेल्स का विकास भागीदार बना रहेगा।'' द्विपक्षीय आर्थिक-व्यावसायिक रिश्तों की मौजूदा स्थिति पर संतोष प्रकट करते हुए दोनों देशों ने भविष्य में भी रिश्तों में विस्तार, खासकर व्यापार एवं आर्थिक सहयोग के क्षेत्र में, की संभावना पर सहमति जताई।

गांधीवाद के मिशन पर गुजराती बच्चे

गुजरात के अहमदाबाद की मलीन बस्तियों के १६ बच्चे जून में अमेरिका जायेंगे, जहां वे ६० मिनट के एक डांस-ड्रामा के जरिए 'एकता' का गांधीवादी संदेश फैलायेंगे।

'एकत्व' (एकता) नामक यह नृत्य-नाट्य प्यार, प्रेरणा का संदेश फैलाएगा और दुनिया से एकत एवं शांति का आह्वान करेगा। इसका मंचन शिकागो, वाशिंगटन डी.सी., सैन फ्रांसिस्को, लॉस एंजिलिस, ह्यूस्टन, ऑस्टिन, अटलांटा और न्यूजर्सी में किया जाएगा।

आयोजकों के मुताबिक 'एकत्व' इसी तरह की एक परियोजना 'एकता' से प्रेरित है, जिसे महात्मा गांधी आश्रम स्थित गैर-लाभकारी संगठन मानव साधना द्वारा वर्ष २००० में सृजित किया गया था। इसमें दर्पण एकेडमी ऑफ परफार्मिंग आर्ट्स के शिक्षकों की खास भूमिका थी।

एकत्व के निदेशक निमेश पटेल, जो ह्यूस्टन बिजनेस स्कूल के स्नातक एवं पूर्व हिप-हॉप कलाकार रह चुके हैं, ने कहा,'' मैंने ऐसे बच्चों के साथ रोज़ाना काम करने का अनुभव हासिल किया है और मेरा अनुभव तो यही कहता है कि ये बच्चे किसी भी सूरत में छोटे नहीं हैं। वे काफी सक्षम हैं।''

प्रथम टैगोर पुरस्कार रवि शंकर को

विश्व विख्यात सितार वादक रवि शंकर को प्रथम टैगोर अवार्ड फॉर कल्चरल हार्मनी के लिए चुना गया है। नोबल पुरस्कार विजेता टैगोर की १५० वीं जयंती के मौके पर यह फैसला प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह की अध्यक्षता वाली जूरी ने लिया।

टैगोर जयंती समारोह के लिए राष्ट्रीय कार्यान्वयन समिति, जिसके अध्यक्ष प्रणव मुखर्जी हैं, ने कहा कि रवि शंकर को सांस्कृतिक सद्भाव के क्षेत्र में शानदार योगदान के लिए यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

इस पुरस्कार के तौर पर १ करोड़ रुपये की नगद राशि, एक प्रशस्ति पत्र, एक पट्टिका और एक विशेष सुसज्जित हस्तशिल्प स्मृति चिन्ह दिया जाता है।

भारतीय सैलानियों को लुभाने के लिए रणनीति बनाएगा आस्ट्रेलिया

आस्ट्रेलिया जाने वाले पर्यटकों की संख्या में वृद्धि से उत्साहित एक प्रभावशाली पर्यटन प्रोत्साहन निकाय ने आस्ट्रेलिया सरकार से अगले दशक में भारत और दूसरे एशियाई देशों से सैलानियों को आकर्षित करने के लिए १ अरब डालर राशि का निवेश करने को कहा है।

भारत के अलावा, टूरिज्म एंड ट्रांसपोर्ट फोरम (टीटीएफ) ने आस्ट्रेलिया के शीर्ष पर्यटन स्रोत देश चीन एवं दूसरे एशियाई देशों पर भी फोकस करने को कहा है।

फोरम की रिपोर्ट 'आस्ट्रेलिया इन द एशियन सेंचुरी' में कहा गया है, ''एशिया के फलते-फूलते मध्य वर्ग से सैलानियों का आना जारी रहेगा और उनकी बढ़ती खरीद क्षमता उन्हें आस्ट्रेलियाई उत्पादों, सेवाओं, स्वास्थ्य एवं तकनीकी के लिए प्रमुख बाजार बनाए रखेगी।''

टीटीएफ के अनुमान के मुताबिक एशियाई मध्य वर्ग की आबादी २००६ के ५०० मिलियन से २०३० में ३.२ अरब पर पहुंच जाएगी।

टीटीएफ एवं अन्य पर्यटन प्रोत्साहन निकायों के चीन, भारत एवं अन्य देशों पर फोकस करने की वजह है, क्योंकि १९९९ की तुलना में अब एशियाई सैलानियों की संख्या में ४० फीसदी बढ़ोतरी हो चुकी है। दूसरी ओर गैर-एशियाई स्रोत बाजारों से निर्यात आय में इस अवधि में बमुश्किल २ फीसदी की ही वृद्धि हुई है।

पिछले तीन वर्षों में आस्ट्रेलिया के लिए सैलानियों के स्रोत के तौर भारत ११वें स्थान से सातवें स्थान पर पहुंच गया है। अगर प्रतिशतता के आधार (३१५ प्रतिशत) पर इसका आकलन किया जाए तो परिदृश्य और संभावनापूर्ण लगता है।

जल : भारत से मदद मांगी अफगानिस्तान ने

लंबे समय तक संघर्ष के कारण सिंचाई के दायरों के सिकुड़ने से परेशान अफगानिस्तान ने अपने बुनियादी जल नेटवर्क के निर्माण एवं प्रबंधन के लिए भारत एवं अन्य 'मित्र देशों' से मदद मांगी है। देश के ऊर्जा एवं जल मंत्री अल्हाज एम. इस्माइल ने यह कहा।

अप्रैल में भारत की यात्रा के दौरान जल संसाधन मंत्री पवन कुमार बंसल से मुलाकात के दौरान अफगानिस्तान ने भारत से उसकी जल क्षमता के विकास में मदद मांगी। इसमें तकनीकी कर्मचारियों का प्रशिक्षण भी शामिल है।

इस्माइल ने कहा, ''भारत से हम उम्मीद करते हैं कि वह हमारे कर्मचारियों के प्रशिक्षण ... और जल संसाधनों के प्रबंधन में मदद देगा।'' मंत्री ने यह भी कहा कि अफगानिस्तान में ३० वर्षों के संघर्ष के कारण ढांचागत जल नेटवर्क के विकास के लिए भारी प्रयास करने की जरूरत है।

उन्होंने कहा, ''न सिर्फ भारत, बल्कि दूसरे देश भी इसमें हमारे मददगार हो सकते हैं।''

भारत में सामुदायिक कालेजों की अमेरिकी पैरोकारी

अमेरिकी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता विक्टोरिया नुलैंड के मुताबिक अमेरिका भारत में सैकड़ों सामुदायिक विश्वविद्यालयों की स्थापना के लिए भारत के साथ मिलकर काम कर रहा है। उन्होंने पब्लिक फंडों से ऐसे दो वर्षीय संस्थानों की स्थापना की गुंजाइश तलाशने के लिए भारत के कई राज्यों से शिक्षामंत्रियों के दौरे के बारे में पूछे गए एक सवाल के जवाब में कहा कि हम निश्चित तौर पर ऐसी पहल का समर्थन करते हैं। उन्होंने कहा कि इस राष्ट्रपति बराक ओबामा एवं प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह के बीच इस मसले पर बनी सहमति को अमली जामा पहनाने के लिए विदेश मंत्रालय अपने भारतीय समकक्ष के साथ संपर्क में है। यह पूछे जाने पर कि क्या भारतीय डिग्रियां अमेरिका में स्वीकार्य हैं तो उन्होंने कहा कि यह इस पर निर्भर करता है कि ये डिग्रियां किन संस्थानों से हैं और उन्हें किनकी मान्यता चाहिए।

एनएसजी में भारत की मदद करेगा आस्ट्रेलिया

भारतीय के 'बेहतरीन अप्रसार रिकार्ड' का हवाला देते हुए आस्ट्रेलिया ने परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) समेत सभी अंतर्राष्ट्रीय परमाणु निर्यात नियंत्रण निकायों में भारत की सदस्यता का समर्थन करने का वादा किया है।

भारत में आस्ट्रेलियाई उच्चायुक्त पीटर वर्गीज ने कहा, ''सैद्धांतिक तौर पर हम भारत के आवेदन (एनएसजी) पर गंभीरता से विचार कर सकते हैं।''

उन्होंने कहा कि अप्रसार के क्षेत्र में भारत का रिकार्ड काफी अच्छा रहा है। हम एनएसजी के स्तर पर भारत को लेकर पूरी तरह सहज हैं। भारत इस मामले में एक भरोसेमंद देश रहा है।

वर्गीज ने चार ब्लॉकों – एनएसजी, मिसाइल टेक्नोलॉजी कंट्रोल रेजिम (एमटीसीआर), वेजेनार अरेंजमेंट और आस्ट्रेलिया ग्रुप – में भारत की सदस्यता की चर्चा करते हुए कहा, ''अगर भारत यह कर दिखाने में सक्षम है कि वह निर्यात नियंत्रण की प्रणालियों के प्रभावकारी प्रबंधन के लिए नियम कानूनों का पालन कर सकता है... तो इसका कोई कारण नहीं है कि भारत को इन समूहों में शामिल नहीं किया जाए।''

उन्होंने कहा कि जोर देकर कहा कि आस्ट्रेलिया चाहता है कि भारत अप्रसार संधि (एनपीटी) का हिस्सा बने, जिससे वैश्विक स्तर पर अप्रसार प्रयासों को भारी बढ़ावा मिलेगा।

उन्होंने अप्रसार के क्षेत्र में भारत की भूमिका की जमकर सराहना की।

ओडिशा तट के व्हीलर आइलैंड से अग्नि-५ के प्रक्षेपण का दृश्य।

गौरव की उड़ान

अप्रैल महीने में भारत के अंतरिक्ष एवं प्रक्षेपास्त्र वैज्ञानिकों ने हर मौसम में काम करने वाले रडार इमेजिंग सैटेलाइट (रिसैट-१) और ५,००० किलोमीटर रेंज की अग्नि-५ बैलिस्टिक मिसाइल का प्रक्षेपण कर देश को दोहरा गौरव प्रदान किया है। **एन.सी. बिपिंद्रा** ने इन सफलताओं के पीछे की कहानी पेश की है

अप्रैल, २०१२ भारत के इतिहास में मील के पत्थर के तौर पर शामिल हो गया, क्योंकि इस महीने देश के वैज्ञानिक समुदाय ने आकाश को गौरव से छूआ और नापा दोनों है। यही वह महीना है जब भारत के अंतरिक्ष एवं प्रक्षेपास्त्र वैज्ञानिकों ने हर मौसम में काम करने वाले रडार इमेजिंग सैटेलाइट (रिसैट-१), जिसका सैन्य एवं असैन्य दोनों तरह का इस्तेमाल हो सकता है, और ५,००० किलोमीटर रेंज की अग्नि-५ बैलिस्टिक मिसाइल, जो चीनी के भीतरी इलाकों एवं पूरे पाकिस्तान में अपने निशाने को बेध सकती है, का प्रक्षेपण कर देश को दोहरा गौरव प्रदान किया है। आइए, भारत के इस मिशन पर ग़ौर करें :

रिसैट-१

देशी तकनीकी से विकसित रिसैट-१ को २६ अप्रैल को चेन्नै से करीब ८० किलोमीटर दूर आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा अंतरिक्ष केंद्र से लांच किया गया। इस प्रक्षेपण के साथ ही भारत अमेरिका, कनाडा और उन कुछ यूरोपीय देशों की जमात में शामिल हो गया है जो ऐसी तकनीकी से लैस हैं।

रिसैट-१ को कक्षा में पहुंचाने वाले १,८५८ किलोग्राम का यह रॉकेट ४४.५ मीटर लंबा एवं ३२१ टन भारी पोलर सैटेलाइट लांच वीकिल सी १६ (पीएसएलवी-सी १६) है, जिसे आप दूर अंतरिक्ष का एकतरफा टिकट कह सकते हैं। रिसैट-१ को १६६३ के बाद पीएसएलवी द्वारा अंतरिक्ष में ले जाया जाने वाला सबसे भारी सैटेलाइट कहा जा सकता है। इसने इसे ४८० किलोमीटर की ऊंचाई पर स्थित पोलर सर्कुलर ऑर्बिट में स्थापित किया। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के चेयरमैन के. राधाकृष्णन ने लांच के बाद कहा, ''पीएसएलवी-सी १६ मिशन बेहद सफल कहा जा सकता है। यह पीएसएलवी का लगातार २०वां सफल प्रक्षेपण है। भारत के प्रथम रडार इमेजिंग सैटेलाइट को कक्षा में स्थापित करने में हम सफल रहे। यह हमारा ३० वर्ष पुराना प्रयास है।''

यह दूर संवेदी उपग्रह तस्वीरें एवं अन्य डेटा भेजता है। भारत के पास दुनिया में दूर संवेदी उपग्रहों का सबसे बड़ा समूह है, जो विविध रेजोलूशन में तस्वीरें उपलब्ध कराते हैं। ये आकाशीय तस्वीरें एक मीटर से ५०० मीटर तक के रेजोलूशन में खींची जाती हैं।

ऐसे में जब भारत के ११ दूर संवेदी/भू प्रेक्षण उपग्रह अंतरिक्ष में हैं, भारत दूर संवेदी डेटा मार्केट का विश्व नेता है। ये ११ दूर संवेदी उपग्रह हैं टीईएस, रिसोर्ससैट-१, कार्टोसैट-१, २, २ए और २बी, आईएमएस-१, रिसैट-२, ओसनसैट-२, ओसनसैट-२, रिसोर्ससैट-२ एवं मेघा-ट्रॉपिक्स। रिसैट-१ का सिंथेटिक एपर्चर रडार (एसएआर) सी-बैंड में डेटा प्राप्त कर सकता है और दिन में यह १४ बार धरती का चक्कर लगा सकता है।

53
उपग्रह अब तक पीएसएलवी द्वारा प्रक्षेपित

27
विदेशी उपग्रहों को भारत ने अब तक कक्षा में स्थापित किया है

11
दूर संवेदी/भू-प्रेक्षण उपग्रह भारत द्वारा स्थापित

इसरो के चेयरमैन डा. के राधाकृष्णन और उनकी टीम रिसैट-१ द्वारा भेजी गई उच्च क्वा. लिटी की तस्वीरें प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह को नई दिल्ली में दिखाते हुए।

वर्ष २००६ में, इसरो ने इजराइल द्वारा निर्मित एसएआर से रिसैट-२ को प्रक्षेपित किया और यह उपग्रह सभी मौसमों एवं दिन और रात की स्थितियों में काम कर सकता है। इस लांचिंग के साथ ही, पीएसएलवी रॉकेट अब तक ५४ में ५३ रॉकेटों को कक्षा में स्थापित कर चुका है, जिनमें से अधिकांश भारतीय एवं विदेशी दूर संवेदी/भू प्रेक्षण उपग्रह हैं और ये इसरो की कमाई के मुख्य जरिया रहे हैं। इसकी एकमात्र विफलता १९९३ की है, जब यह उपग्रह कक्षा में पहुंचने में सक्षम नहीं हुआ।

जिस रॉकेट ने रिसैट-१ को अंतरिक्ष में स्थापित किया, वह इसरो का चार चरणों वाला संशोधित पीएसएलवी संस्करण है जिसे पीएसएलवी-एक्सएल नाम दिया गया है। यहां एक्सएल का मतलब एक्स्ट्रा लार्ज से है। इसे यह नाम इसलिए दिया गया है, क्योंकि छह स्ट्रैप-ऑन मोटर इस रॉकेट के बॉटम से संलग्न हैं, जो बेस संस्करण वाले मोटर की नौ टन क्षमता की तुलना में १२ टन ठोस ईंधन ढो सकते हैं। पीएसएलवी के चारों स्टेज ठोस एवं तरल प्रणोदकों से लैस हैं। प्रथम एवं तीसरा स्टेज जहां ठोस ईंधन से लैस हैं, वहीं दूसरा एवं चौथा स्टेज तरल ईंधन से युक्त हैं। इसरो ने २००८ में अपने चंद्रयान-१ चंद्र मिशन के लिए अपने पीएसएलवी-एक्सएल संस्करण का इस्तेमाल किया था। २०११ में जीसैट-१२ संचार उपग्रह की लांचिंग के लिए भी इसका इस्तेमाल हुआ था।

अग्नि-५

१९ अप्रैल को ओडिशा तट के व्हीलर आइलैंड से अग्नि-५ की लांचिंग के साथ ही भारत दुनिया की एक ऐसे ताकतवर मिसाइल शक्ति के तौर पर उभरा है, जिसने एक टन की युद्ध सामग्री के साथ हजारों किलोमीटर दूर स्थित निशाने को बेधने की क्षमता लगभग देशी तकनीकी से पिछले करीब चार सालों में हासिल की है।

इस सफलता के साथ ही भारत उस विशिष्ट क्लब में शामिल हो गया है, जिसमें संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सभी सदस्य देश - अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस और ब्रिटेन - इस क्षमता के साथ शामिल रहे हैं।

प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने इस कामयाबी को पुख्ता सुरक्षा तैयारी और विज्ञान के मोर्चों पर कामयाबी की दिशा में एक और मील का पत्थर करार दिया है।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के प्रमुख वी.के. सारस्वत ने कहा, ''थर्ड-स्टेज अग्नि-५ मिसाइल के संपूर्ण प्रदर्शन को सफलतापूर्वक साबित कर दिया गया है। सभी मिशन उद्देश्यों एवं संचालन लक्ष्यों को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया है।'' उत्साहित और प्रसन्न दिख रहे सारस्वत ने कहा, ''भारत अब लंबी दूरी तक मार करने वाले प्रक्षेपास्त्रों की डिजाइन, विकास एवं निर्माण की क्षमता से लैस है। अब भारत एक अग्रणी मिसाइल ताकत है।''

चीन की ओर से भी इस पर त्वरित प्रतिक्रिया आई, जहां विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता लियू विमीन ने परीक्षण पर संयत टिप्पणी करते हुए कहा, ''चीन और भारत दोनों उभरती हुए देश हैं। हम प्रतिद्वन्द्वी नहीं, बल्कि सहयोगी हैं।''

टेस्ट के दौरान १७.५ मीटर लंबे, ५० टन वजनी अग्नि प्रक्षेपास्त्र ने ७,००० मीटर प्रति सेकंड के वेग से आकाश में ६०० किलोमीटर तक की दूरी तय की, जिसने इसके लक्ष्य तक सटीकता से साथ पहुंचने में मदद दी। इस मिसाइल सिस्टम को रेल एवं सड़क दोनों मार्ग से ढोया जा सकता है।

अग्नि-५ मिसाइल की रेंज आईसीबीएम की रेंज से महज ५०० किलोमीटर कम है। आईसीबीएम की न्यूनतम रेंज ५,५०० किलोमीटर होती है। चीन की डोंगफेंग-३१ए आईसीबीएम मिसाइल की रेंज ११,५०० किलोमीटर है और यह पूरे एशिया और यहां तक कि यूरोप तक मार कर सकती है।

इस टेस्ट के बाद अग्नि-५ के कई और टेस्ट होंगे, तब इसके २०१४ के अंत में या २०१५ के शुरू में सशस्त्र सेना में शामिल किया जाएगा। भारत 'पहले हमला नहीं' के सिद्धांत पर अमल करता रहा है। अग्नि-५ एवं ३,५०० किलोमीटर तक मार करने वाली अग्नि-४ मिसाइल, जिसका २०११ में सफल परीक्षण हुआ, भारत के सशस्त्र बलों को दुश्मन की ओर से परमाणु हमले की सूरत में 'सेकंड स्ट्राइक' क्षमता प्रदान करती हैं।

उपलब्धियों का सफर

चर्च का इस्तेमाल नियंत्रण कक्ष, बिशप हाउस का इस्तेमाल कार्यालय, साइकिल का इस्तेमाल वाहन, केरल के थुंबा में खुली आंखों से उपग्रहों के अंतरिक्ष सफर को निहारने के अनुभव और बेंगलुरु में एक शौचालय का इस्तेमाल उपग्रहीय डेटा प्राप्तकर्ता केंद्र के तौर पर करने के यादगार जमाने से लेकर अब तब भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम ने चंद्र मिशन तक के सफर को पूरा कर लिया है और आज वह मंगल मिशन पर काम कर रहा है, वहीं विदेशों उपग्रहों को कक्षा में छोड़ने की क्षमता का भी बखूबी परिचय दे रहा है।

इसरो के पूर्व प्रमुख यू.आर. राव ने कहा, ''उन दिनों ढांचागत सुविधाओं का घोर अभाव था। जो भी उपलब्ध था उसका हम इस्तेमाल करते थे। बेंगलुरु में हमने अपने प्रथम उपग्रह आर्यभट्ट को छोड़ने के लिए शौचालय का इस्तेमाल डेटा हासिल करने के लिए किया था।'' आज भारत को वैश्विक सैटेलाइट लांच एवं निर्माण उद्योग का गंभीर सदस्य माना जाता है, जबकि वह दूर

पूर्णतः समेकित ४४.५ मीटर लंबे एवं ३२१ टन वजनी पीएसएलवी-सी१९ का नजारा।

मील के पत्थर

१९६२ परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा नेशनल कमिटी फॉर स्पेस रिसर्च की स्थापना और थुंबा इक्वेटोरियल राकेट लांचिग स्टेशन (टीईआरएलएस) का निर्माण कार्य शुरू।

१९६३ प्रथम साउंडिंग राकेट लांच।

१९६५ केरल के थुंबा में स्पेस साइंस एंड टेक्नोलॉजी सेंटर सीपित।

१९६८ अहमदाबाद, गुजरात में एक्सपेरिमेंटल सैटेलाइट कम्युनिकेशन अर्थ स्टेशन सीपित।

१९६९ परमाणु ऊर्जा विभाग के अंतर्गत भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना।

१९७१ आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा में सतीश धवन स्पेस सेंटर सीपित।

१९७२ अंतरिक्ष विभाग स्थापित और इसरो को

डीओएस के तहत लाया गया। इसरो सैटेलाइट सेंटर बेंगलुरु में स्थापित और अहमदाबाद में स्पेस एप्लीकेशंस सेटर सीपित।

१९७५ अमेरिक उपग्रह की मदद से सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरिमेंट पूरा।

१९७६ भारत का प्रथम उपग्रह आर्यभट्ट लांच।

१९७९ एक भू प्रेक्षण अनुसंधान उपग्रह भाष्कर-१ लांच। सैटेलाइट लांच वीकल (एसएलवी-३) रोहिणी को स्थापित करने के लिए छोड़ा गया।

१९८० रोहिणी सैटेलाइट के साथ एसएलवी-३ लांच। मिशन सफल।

१९८१ पीएसएलवी-३ की प्रथम लांचिंग।

१९८२ किसी अमेरिकी राकेट द्वारा इनसैट-१ए संचार उपग्रह की लांचिंग।

डीआरडीओ के प्रमुख वी.के. सारस्वत (दायें से दूसरे) अपनी टीम के साथ अग्नि-५ के सफल प्रक्षेपण पर विजय मुद्रा।

संवेदी/भू प्रेक्षण उपग्रहों तस्वीरों की प्राप्ति के मामले में अगुआ माना जाता है।

अब तक २७ विदेशी उपग्रहों को कक्षा में स्थापित कर चुका इसरो अगस्त २०१२ में ८०० किलोग्राम के एक फ्रेंच उपग्रह (भारतीय राकेट द्वारा अब तक के सबसे भारी विदेशी पेलोड का प्रक्षेपण) का प्रक्षेपण अंतरिक्ष एजेंसी के पीएसएलवी राकेट को लेकर बढ़ते भरोसे की पुष्टि करेगा।

इसरो ने फ्रेंच एजेंसी ईड्स आस्ट्रियम के लिए दो भारी उपग्रह - ३,४५३ किलोग्राम का डब्ल्यू२एम और २,५४१ किलोग्राम का हाइलस - भी संयुक्त रूप से विकसित किए हैं।

भारत अपने उपग्रहों का इस्तेमाल असैनिक (भू प्रेक्षण/दूर संवेदन, संचार और मौसम भविष्यवाणी) और सैनिक उद्देश्यों दोनों के लिए करता है। हाल ही में सरकार ने संसद को सूचित किया कि नौसेना एवं वायु सेना के लिए संचार उपग्रहों की लांचिंग दो साल के भीतर होगी।

भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम में २००८ का चंद्र मिशन मील का पत्थर बन गया, जब इसके तहत चंद्रयान मिशन-१ को लांच किया गया। रसियन फेडरल स्पेस एजेंसी के संयुक्त चंद्र मिशन चंद्रयान-२ का प्रक्षेपण २०१४ में किया जाएगा।

लेकिन इसरो ने रॉकेट एवं उपग्रह प्रक्षेपण के क्षेत्र में १९९० के दशक से जो तेज उपलब्धियां हासिल की हैं, उसके पीछे इस कार्यक्रम के संस्थापकों के त्याग, संघर्ष एवं विजन की भूमिका है। यूं तो इसरो १९६३ से ही थुंबा से साउंडिंग रॉकेट (प्रायोगिक राकेटों) का प्रक्षेपण करता रहा है, लेकिन अपेक्षाकृत अधिक भारी पेलोड के साथ राकेट प्रक्षेपित करने का प्रयास १९८० में सैटेलाइट लांच वीकल-३ (एसएलवी-३) के प्रक्षेपण के साथ शुरू हुआ। वैसे, तब तब इसरो ने दो उपग्रह - ३५८ किलोग्राम के आर्यभट्ट और ४४४ किलोग्राम के भास्कर-१ - का निर्माण एवं परीक्षण पूरा कर लिया था।

राव कहते हैं, ''शून्य से शुरू करते हुए हमारे सामने पहली सबसे बड़ी चुनौती आर्यभट्ट परियोजना को लेकर पैदा हुई। अधिकांश टीम सदस्य इस मामले में नए थे। हमें रूसी राकेट में इसे छोड़ने के लिए महज ढाई साल की ही मोहलत दी गई थी। क्लीन रूम, थर्मो वैक्यूम रूम और अन्य सुविधाओं का विकास करना बड़ी जिम्मेवारी थी।''

भास्कर-१ के बाद भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी ने एपल संचार उपग्रह बनाया जिसने इनसैट श्रृंखला की प्रोसेसिंग मल्टीपल कैपेसिटी - दूरसंचार, टीवी, मौसम विज्ञान एवं इमेजिंग - के लिए जमीन तैयार की। इनसैट के लिए प्रथम परियोजना निदेशक प्रमोद काले ने कहा, ''फोर-इन-वन सैटेलाइट बनाना वाकई चुनौती भरा काम था। जहां हमने इसकी डिजाइन तैयार की, वहीं फोर्ड एयरोस्पेस ने इसे बनाया एवं इसे एक अमेरिकी रॉकेट द्वारा छोड़ा गया।''

वैसे, राव के मुताबिक इनसैट-१बी के बाद सफलता ने इसरो पर मुस्काना शुरू किया, जब भारत ने संचार क्रांति के युग में प्रवेश किया। इसके बाद भारत ने कभी पीछे मुड़ के नहीं देखा और एक से बढ़कर एक मंज़िल बनती गई। तिरुवनंतपुरम स्थित विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र (वीएसएससी) के वैज्ञानिकों को उस जमाने में अपने रॉकेट को मिशन के लिए उपयुक्त बनाने में काफी मेहनत करनी पड़ती थी, क्योंकि एसएलवी एवं ऑगुमेंटेड एसएलवी (एएसएलवी) मिशन के मिश्रित परिणाम निकलते थे।

वीएसएससी के पूर्व निदेशक एस.सी. गुप्ता ने कहा, ''पीएसएलवी राकेट को फिट बनाने के लिए पहले की दो एसएलवी विफलताएं वास्तव में बड़ी परीक्षा थीं। राकेट के अचानक गिर जाने, राकेट के मुख्य बलों की मॉनिटरिंग, हवा की गहन प्रोफाइलिंग और दूसरे मसलों का निपटा लिया गया था।''

स्ट्रेट्च्ड रोहिनी सैटेलाइट सीरीज (एसआरओएसएस) के साथ तीसरा एएसएलवी सफल रहा, पर १९९३ में प्रथम पीएसएलवी का नतीजा नकारात्मक रहा। इसकी वजह सॉफ्टवेयर संबंधी चूक थी, जिसे बाद में सुलझा लिया गया।

जहां तक पीएसएलवी राकेट की बात है तो इसरो के लिए यह तेज सफर रहा है। अंतरिक्ष एजेंसी के अब तीन पीएसएलवी संस्करण हैं। गुप्ता कहते हैं, ''चूंकि तकनीकी उपलब्ध नहीं थी, हमने अपनी नेविगेशनल प्रणालियां खुद विकसित कीं।''

लेकिन, इसरो के सामने बड़ी चुनौती है अधिक भारी-भरकम रॉकेट - जियोसिंक्रनस सैटेलाइट लांच वीकल (जीएसएलवी) - के लिए तकनीकी को और उपयुक्त बनाना, ताकि भारी संचार उपग्रहों को लांच किया जा सके और अधिक भारी, थर्ड-पार्टी पेलोड के लिए रॉकेट का इस्तेमाल किया सके।

वीएसएससी के पूर्व निदेशक बी.एन. सुरेश ने कहा, ''इसरो के लिए चुनौती है अपने क्रायोजेनिक इंजिन की व्यवस्था करना जो जीएसएलवी राकेट के अंतिम चरण को पावर प्रदान कर सके।'' देशी क्रायोजेनिक इंजिन से लैस एक जीएसएलवी राकेट एक बार विफल भी हो चुका है। २०१० में जीएसएलवी राकेट की विफलता ने इसरो को जीएसएलवी पर ब्रेक लगाने के लिए बाध्य किया। इसरो चेयरमैन के. राधाकृष्णन के मुताबिक अंतरिक्ष एजेंसी जीएसएलवी को पावर प्रदान करने के लिए अपना क्रायोजेनिक इंजिन हासिल करने की प्रक्रिया में है।

मिसाइल यात्रा

मिसाइल तकनीकी में भारत का सफर उतार-चढ़ाव से भरा रहा है, जिस पर उसके अपने दो परमाणु परीक्षणों (१९७४ और १९९८ में) के कारण देश के अलग-थलग होने की घटनाओं का साया भी पड़ता रहा है। निश्चित तौर पर किसी पड़ोसी द्वारा भारत के खिलाफ दुस्साहस की काट के तौर पुख्ता जवाबी हमले एवं मुंहतोड़ जवाब के लिए मिसाइल विकास कार्यक्रम के क्षेत्र में भारत का प्रवेश १९८३ में तब हुआ जब डा. ए.पी.जे अब्दुल कलाम को इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम (आईजीएमडीपी) का नेतृत्व करने का जिम्मा सौंपा गया। २००७ में इसका सफल समापन हो गया। इसका प्रथम कदम था १९८८ में १५० किलोमीटर क्षमता की सिंगल-स्टेज, तरल-प्रणोदित एवं सतह से सतह पर मार करने वाली पृथ्वी मिसाइल का निर्माण। मई १९९९ में ७००-९०० किलोमीटर तक मार करने वाली अग्नि-१ मिसाइल का सफल परीक्षण हुआ। मिसाइल तकनीकी नियंत्रण प्रणाली (एमटीसीआर) ने निश्चित तौर पर भारत के मिसाइल कार्यक्रम की गति धीमी की, लेकिन इससे इसका विकास लंबे समय तक प्रभावित नहीं हुआ।

भारत ने अपना सफर जारी रखा। यह यात्रा डीआरडीओ की 'कंसोर्टियम रणनीति' के कारण सफल रहा, क्योंकि इसके तहत इसने अपनी कई प्रयोगशालाओं को विशेष तकनीकी पर काम करने में लगाया और निजी उद्योगों को तकनीकी हस्तांतरण के तहत जरूरी कल-पुर्जा विकसित करने एवं विश्वविद्यालयों को नई अवधारणाओं के काम पर लगाया गया।

लंबी छलांग

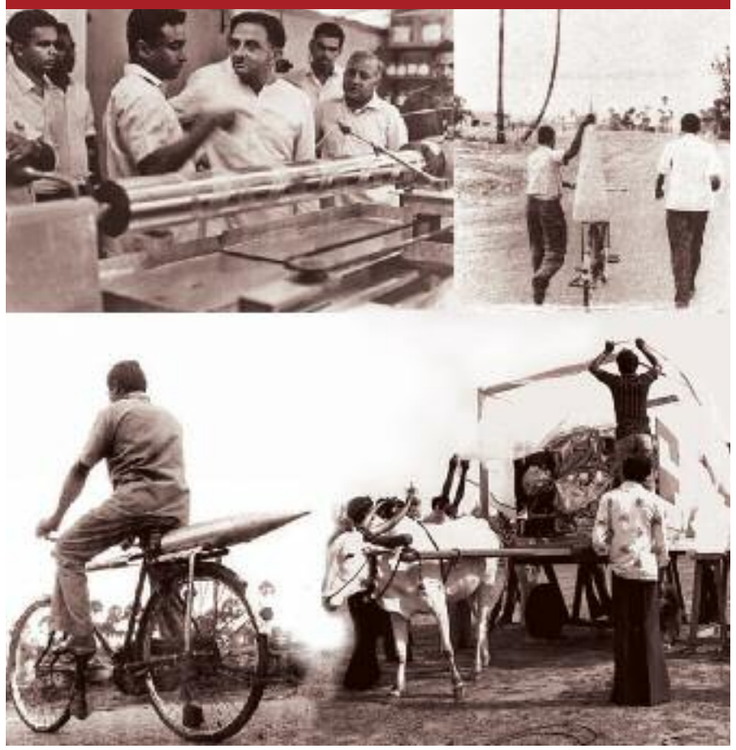

मिसाइलों के कल-पुर्जों की ढुलाई के लिए साइकिलों एवं बैलगाड़ियों के इस्तेमाल के जमाने से लेकर अब तब भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का सफर गौरवपूर्ण रहा है।

मील के पत्थर

१९८३ एसएलवी के दूसरे विकास प्रक्षेपण ने रोहिणी को कक्षा में पहुंचाया। इनसैट-१बी सैटेलाइट के साथ ही इनसैट प्रणाली का शुभारंभ।

१९८४ प्रथम भारतीय अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा ने रूसी अंतरिक्ष स्टेशन 'सालयुत ७' में प्रवेश किया।

१९८७ ऑगमेंटेड एसएलवी (एएसएलवी) का सैटेलाइट एसआरएसएस-१ के साथ लांचिंग। मिशन विफल।

१९८८ भारतीय दूर संवेदी (आईआरएस) सैटेलाइट - आईआरए -१ ए- का रूसी राकेट के जरिए प्रक्षेपण। मिशन विफल।

१९९१ दूसरे संचालन दूर संवेदी उपग्रह आईआरएस-१बी का प्रक्षेपण।

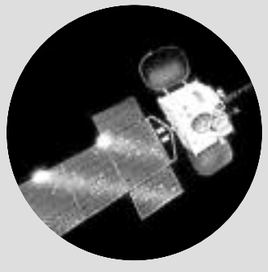

१९९२ एएसएलवी का प्रथम सफल प्रक्षेपण, जिससे एसआरओएसएस-सी सैटेलाइट को कक्षा में स्थापित किया गया।

१९९३ आईआरएस-१ई के साथ ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी) का प्रथम प्रक्षेपण। मिशन विफल।

१९९४ एसआरओएसएस-सी२ के साथ एएसएलवी का चौथा प्रक्षेपण। मिशन सफल। आईआरएस-पी२ को कक्षा में पहुंचाने के साथ ही पीएसएलवी का लांच सफल।

१९९६ आईआरएस-पी३ के साथ पीएसएलवी का तीसरा प्रक्षेपण।

१९९७ आईआरएस-१डी के साथ पीएसएलवी का प्रथम संचालन प्रक्षेपण।

१९९९ पीएसएलवी विदेशी पेलोड (कोरियाई एवं

प्रक्षेपण की नारी शक्ति

टेसी थॉमस

परियोजना निदेशक (मिशन) अग्नि-५
उम्र : ४६ साल
नियोक्ता संगठन : डीआरडीओ
कार्य : १९८८ से
परिवार : पति भारतीय नौसेना में, बेटे का नाम तेजस
रुचि : खाना बनाना

एन. बलारमथी

रिसैट-१ के लिए परियोजना निदेशक
उम्र : ५२ साल
नियोक्ता संगठन : इसरो
कार्य : १९८४ से
परिवार : पति पेशे से बैंकर, एक बेटा और एक बेटी
रुचि : प्रकृति, किताबें

उन्हें किसी महिला के लिए अग्नि-५ पर काम करना विरोधाभासी नहीं लगता। सभी अग्नि श्रृंखलाओं से जुड़ी टेसी थॉमस ने अग्नि-५ का नेतृत्व वाहनों एवं मिशन के लिए परियोजना निदेशक के तौर पर किया और वे अग्नि-४ के लिए परियोजना निदेशक (मिशन) भी थीं। थॉमस ने कहा, ''विज्ञान के क्षेत्र में कोई लैंगिक भेदभाव नहीं है, क्योंकि विज्ञान को मालूम नहीं कि उसके कौन काम रहा है। जब मैं वहां काम के लिए पहुंचती हूं तो महिला नहीं रह जाती। मैं सिर्फ वैज्ञानिक की भूमिका में होती हूं।'' वे उस वक्त ८वीं कक्षा में थीं, जब उनके एकाउंटेंट पिता को लकवे का दौरा पड़ा वे ताउम्र घर तक सीमित रह गए। वे कहती हैं, ''मेरे पिता गणित में अच्छे थे और ज्ञानी व्यक्ति थे। मेरी मां एक प्रशिक्षित शिक्षक हैं, पर वे कभी अध्यापन के लिए किसी स्कूल में नहीं गई। उन्होंने अपनी छह संतानों - पांच बेटियों एवं एक बेटे - को पढ़ाने में पूरा समय दिया।''

जहां उनके भाई-बहन इंजीनियर, प्रबंधक और बैंक अधिकारी बन गए, वहीं थॉमस ने रक्षा वैज्ञानिक के तौर पर नाम कमाया। वे कहती हैं, ''मैं बचपन से इंजीनियर बनना चाहती थी, पर पता नहीं ऐसा क्यों। मैंने अपनी इंजीनियरिंग पूरी की और गाइडेड मिसाइल में एम.टेक करने का फैसला किया।''

वैज्ञानिकों में भारतीय मिसाइल कार्यक्रमों के पिता ए.पी.जे. अब्दुल कलाम मेरे प्रेरणा स्रोत हैं। वे कहती हैं, ''जब मैंने १९९८ में ज्वाइन किया तो कलाम डीआरडीएल के निदेशक थे और वे उन लोगों में से थे जिन्होंने मुझे इनर्शियल नेविगेशन ग्रुप में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।''

वलारमथी का सफर

उपग्रह वैज्ञानिक ५२ वर्षीया एन. वलारमथी की उस वक्त खुशी का ठिकाना नहीं था जब उनकी देखरेख में विकसित रिसैट-१ ने अंतरिक्ष की ओर उड़ान भरनी शुरू की। वे कहती हैं, ''वह वाकई सुखद अनुभव था। मैं गौरवान्वित महसूस कर रही थी।''

तमिलनाडु के अरियालुर जिले, जहां से उन्होंने अपनी स्कूली पढ़ाई पूरी की, रहने वाली वलारमथी प्रथम महिला हैं जिन्हें किसी दूर संवेदी परियोजना का नेतृत्व करने का मौका मिला है। अन्ना यूनिवर्सिटी से इंजीनियरिंग में स्नातकोत्तर डिग्रीप्राप्त वलारमथी ने १९८४ में बेंगलुरु के इसरो सैटेलाइट सेंटर से जुड़ गईं। उन्होंने इनसैट २ए, आईआरएस आईसी, आईआरएस आईडी, टीईएस और अंततः रिसैट जैसी उपग्रह परियोजनाओं पर काम किया है।

एक बैंकर जी. वासुदेवन की पत्नी एवं दो बच्चों की मां वलारमथी रिसैट-१ परियोजना से २००२ में जुड़ीं और उन्होंने उप परियोजना निदेशक एवं एसोसिएट प्रोजेक्ट डायरेक्टर जैसे पदों पर रहते हुए काम किया है। अब वे परियोजना निदेशक हैं।

— मोहम्मद शफीक के साथ वी. जगन्नाथन

गरिमापूर्ण शुरुआत

भारत अपने अब तक के सर्वाधिक भारी-भरकम विदेशी उपग्रह को कक्षा में स्थापित करने की तैयारी में है, इसरो प्रमुख के. राधाकृष्णन ने **वी. जगन्नाथन** को यह बताया।

आगामी अगस्त महीने में एक भारतीय राकेट ८०० किलोग्राम के एक फ्रेंच सैटेलाइट स्पॉट-६ - अब तक का सर्वाधिक भारी-भरकम विदेशी उपग्रह - को कक्षा में स्थापित कर एक इतिहास रचेगा। इस प्रक्रिया में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की व्यावसायिक शाखा को मोटी कमाई भी होगी। इससे भी अधिक दिलचस्प बात यह है कि यह करार इसरो के पोलर सैटेलाइट लांच वीकल (पीएसएलवी) की सटीक उपग्रह प्रक्षेपण क्षमता में दूसरे पक्षों के बढ़ते भरोसे की निशानी है।

इसरो प्रमुख के. राधाकृष्णन ने कहा, ''आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को उपग्रह स्थापित करने वाले प्रमुख देशों की जमात में गिना जाता है। निश्चित तौर पर इससे हमारी क्षमता की पुष्टि होती है कि फ्रेंच सैटेलाइट निर्माता ईड्स आस्ट्रियम ने इसी श्रेणी के दूसरे वीकल की तुलना में पीएसएलवी को प्राथमिकता दी है। आपको याद दिलाना चाहूंगा कि हमने ईड्स के सहयोग से यूरोपीय आपरेटर ईयूटेलसैट एवं अवंती कम्युनिकेशंस के लिए दो व्यावसायिक संचार उपग्रह बनाए थे।'' हम भविष्य में भी उपग्रहों के लिए अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अपने लिए संभावनाएं तलाशते रहेंगे। ६२ वर्षीय राधाकृष्णन भारत के अपने रडार इमेजिंग सैटेलाइट (रिसैट-१) की पोस्ट-लांच गतिविधियों में सक्रिय थे। उन्होंने अधिक वजनी उपग्रह तैयार करने व ट्रांसपोंडर की क्षमता बढ़ाने की योजनाओं आदि पर बातचीत की। पेश हैं उनसे हुई बातचीत के अंशः

अधिक ट्रांसपोंडरों से युक्त भारी उपग्रहों के निर्माण की इसरो योजना पर...

वर्तमान में इसरो ३-३.२ टन वजनी एवं ८केडब्ल्यू पावर श्रेणी के उपग्रहों का विकास करता है। फिलहाल हम ४-टन वर्ग के संचार उपग्रह जीसैट-११ का विकास कर रहे हैं, जो करीब १४ केडब्ल्यू पावर एवं केए/केयू बैंड हाइब्रिड पेलोड से युक्त हो। इस सैटेलाइट की प्रवाह क्षमता हमारे द्वारा अब तक विकसित उपग्रहों से तीन-चार गुना ज्यादा होगी। हम उच्च पेलोड क्षमता से युक्त ६-टन वर्ग का संचार उपग्रह भी विकसित करना चाहते हैं।

इनसैट क्षमता के तौर पर संचालित वर्तमान ट्रांसपोंडर क्षमता करीब २५० है। इसमें इसरो के उपग्रह एवं पट्टे के ट्रांसपोंडर भी शामिल हैं। इनसैट क्षमता १२वीं योजना तक ३०० के बिंदु पर पहुंच सकती है।

इस मसले पर कि भारत को इंटर-प्लेनेटरी मिशनों से पहले अपने भारी राकेट जियोसिंक्रनस सैटेलाइट लांच वीकल (जीएसएलवी) को दुरुस्त करना होगा...

भारी राकेट लांच करना एवं इंटर-प्लेनेटरी मिशन को अंजाम देना परस्पर जुदा बातें नहीं हैं। देश के लिए दोनों पर एक साथ काम किया जा सकता है। हम जल्द ही देशी क्रायोजेनिक इंजिन से जीएसएलवी का अगला प्रक्षेपण करेंगे। हमारा जीएसएलवी मार्क ३ विकास के उन्नत चरण में है और इसके प्रायोगिक परीक्षण की योजना बनाई जा रही है।

अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत एवं चीन के बारे में

दोनों देशों के अंतरिक्ष कार्यक्रम अपने-अपने प्रयासों के बूते नई ऊंचाई पर पहुंच चुके हैं। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम राष्ट्रीय प्राथमिकताओं एवं देश के लोगों के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान पर केंद्रित है। भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का भविष्य उज्ज्वल है और बहुत कम समय में हमने कई सफल मिशन को अंजाम दिया है जो हमारी अप्रत्याशित सफलता का सबूत है।

मील के पत्थर

२००३ जीसैट-२ का जीएसएलवी एवं रिसोर्ससैट-१ का पीएसएलवी द्वारा प्रक्षेपण।

२००४ जीएसएलवी के प्रथम प्रक्षेपण द्वारा एडुसैट की लांचिंग।

२००५ श्रीहरिकोटा में दूसरा लांचिंग पैड। कार्टोसैट-१ लांच, पीएसएलवी द्वारा एचएमसैट लांच

२००७ स्पेस कैप्सूल रिकवरी एक्सपेरीमेंट एवं दो विदेशी उपग्रहों के साथ कार्टोसैट-२ लांच और कैप्सूल की सफल रिकवरी।

२००८ पीएसएलवी द्वारा इजरायली सैटेलाइट टेकसार लांच। एक ही पीएसएलवी द्वारा १० उपग्रह लांच - दो भारतीय और ८ विदेशी। पीएसएलवी द्वारा भारत का पहला चंद्र मिशन चंद्रयान-१ नियोजित।

२००९ पीएसएलवी द्वारा रडार इमेजिंग उपग्रह (रिसैट-२) एवं अन्ना यूनिवर्सिटी का आनूसैट (किसी भी भारतीय विश्वविद्यालय का पहला उपग्रह) लांच।

२०१० दो जीएसएलवी मिशन विफल। पीएसएलवी द्वारा कार्टोसैट-२बी, स्टडसैट एवं तीन छोटे विदेशी उपग्रहों का प्रक्षेपण।

२०११ पीएसएलवी द्वारा रिसोर्ससैट-२ एवं दो छोटे उपग्रहों का प्रक्षेपण। पीएसएलवी द्वारा जीसैट-१२ लांच। पीएसएलवी द्वारा मेघा ट्रॉपिक्स एवं तीन छोटे उपग्रहों की लांचिंग।

२०१२ पीएसएलवी द्वारा रिसैट-१ लांच।

दूसरी ज़िंदगी

विशेष पेंशन एवं जीवन बीमा योजना से विदेशों, खासकर, खाड़ी देशों में रह रहे पचास लाख से अधिक अकुशल एवं अर्ध-कुशल कामगारों को लाभ मिलेगा। **सानू जार्ज** की रिपोर्ट

विशाल अप्रवासी भारतीय (एनआरआई) समुदाय में अपेक्षाकृत सुविधाविहीन तबके से सरकार द्वारा किए गए वादे को निभाते हुए प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री वायलार रवि ने हाल ही में कोच्चि में पेंशन एवं जीवन बीमा कोष (पीएलआईएफ) लांच किया।

इस अत्यावश्क 'लाइफलाईन', जो लाखों लोगों की सुरक्षा जरूरतों को पूरी करेगी, की घोषणा जनवरी में जयपुर में आयोजित १०वें प्रवासी भारतीय दिवस में प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह द्वारा की गई थी।

१८-५० वर्ष उम्र वर्ग के लोगों पर फोकस करने वाली यह योजना उन लोगों के लिए है जिनके पासपोर्ट पर 'आव्रजन अनुमति अनिवार्य' की मुहर लगी है और जिनमें पास वैध कार्य परिमिट या आव्रजन अनुबंध है।

यह योजना ६० वर्ष उम्र के बाद लाभ देगी और इसके सदस्य के विदेश से लौटने के बाद एक्सीडेंटल कवर की सुविधा होगी।

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय (एमओआईए) के अनुसार इस योजना के लिए एनआरआई समुदाय के गरीब तबके के ५० लाख से अधिक लोग योग्य हैं।

संयोग से यह योजना मुख्य रूप से मध्य-पूर्व में कार्यरत भारतीय के लिए है। मंत्री रवि ने कहा, ''यह जीवन बीमा योजना है, जो बुढ़ापे एवं पुनर्वास के लिए वित्तीय बचत की सुविधा भी प्रदान करती है। मेरा मंत्रालय अपने बजट से पीएलआईएफ में योगदान करेगा।''

जो व्यक्ति इस योजना से लाभान्वित होना चाहता है, उसे ५,००० रुपये का भुगतान करना पड़ेगा, वहीं एमओआए पुरुष कामगारों के लिए २,००० रुपये और महिला कामगारों के लिए ३,००० रुपये का भुगतान करेगा।

मंत्री ने कहा, ''इस योजना में लाइफ इंश्योरेंस कारपोरेशन एवं बैंक ऑफ बड़ौदा दोनों भागीदार हैं। इसे चुनने वाले व्यक्तियों को एक यूनीक नंबर दिया जाएगा और सदस्यों के सभी विवरण कंप्यूटर पर उपलब्ध होंगे।''

रवि ने कहा, ''संयोग से यह एक पायलट परियोजना है जिसे लांच किया गया है और यह निश्चित तौर पर एनआरआई के जीवन में कुछ स्थिरता लाएगी। हमें ऐसे गैर-निवासी संगठनों से भी अपील करनी चाहिए जो इस योजना को प्रोमोट करने में रुचि लेते हैं।''

उन्होंने इस योजना को हकीकत में तब्दील करने के लिए केंद्रीय वित्तमंत्री प्रणब मुखर्जी की तारीफ़ की।

इस योजना के शुभारंभ के दौरान मौजूद केरल के मुख्यमंत्री ऊमेन चैंडी ने कहा कि यह आम एनआरआई वर्ग को सर्वश्रेष्ठ उपहार कहा जा सकता है।

उन्होंने कहा, 'विदेशों में काम करने वाले निर्धनतम भारतीय कामगारों में से कई को वतन खाली हाथ लौटना पड़ता है। ऐसे में घर, शिक्षा और शादी से जुड़ी उनकी जरूरतें एक सपना ही बनी रहती हैं। इस योजना के अमल में आने के बाद किसी को भी अपने भविष्य के बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है।''

केरला प्रवासियों पर सेंटर फॉर डेवलपमेंट स्टडीज के हालिया अध्ययन के अनुसार २०११ में विदेश में रहने वाले केरला अप्रवासियों की संख्या २२.८ लाख थी, जो २००८ में २१.६ लाख, २००३ में १८.४ लाख और १९९८ में १३.६ लाख थी।

रिपोर्ट में कहा गया है कि केरल को भेजी गई कुल अप्रवासी विप्रेषित राशि ४६,६९७ करोड़ रुपये थी, जबकि १९९८ में यह ४३,२८८ करोड़ रुपये थी।

केरल के करीब ४० फीसदी अप्रवासी यूएई और २५ सऊदी अरब में रहते हैं। पिछले तीन वर्षों में, खासकर वैश्विक संकट के बाद, सऊदी अरब ने करीब २ फीसदी प्वाइंट हासिल किए है, वहीं यूएई ने इतने ही फीसदी प्वाइंट खोये हैं।

बायें से, राज्य के आबकारी मंत्री के. बाबू, सीपीआई सांसद के.ई. इस्माइल, राज्य के नन-रेजीडेंट केरलाइट मामलों के मंत्री के.सी. जोसेफ, प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री वायलार रवि, केरल के मुख्यमंत्री ऊमेन चैंडी और विधायक हिबी ईडेन।

सेवानिवृत्ति के बाद नई ज़िंदगी

- एमओआए विदेशों में काम करने वाले पुरुष कामगारों के लिए सालाना २,००० रुपये तक और महिला कामगारों के लिए ३,००० रुपये तक का भुगतान करेगा।
- कामगारों को अपने पेंशन एवं पुनर्वास रिटर्न खर्च के लिए आंशिक भुगतान करना पड़ेगा।
- यह योजना ६० वर्ष उम्र के बाद लाभ देगी और इसके सदस्य के विदेश से लौटने के बाद एक्सीडेंटल कवर की सुविधा होगी।
- यह योजना कामगारों को भारत लौटने के बाद पुनर्वास खर्च के लिए बचत की सुविधा देगी।
- यह सामान्य मौत की सूरत में भी जीवन बीमा कवर की सुविधा देती है।
- इसे चुनने वाले व्यक्तियों को एक यूनीक नंबर दिया जाएगा और सदस्यों के सभी विवरण कंप्यूटर पर उपलब्ध होंगे।

येल की छात्रा नतालिया खोसला के साथ 'छम्मक छल्लो' की धुन पर नाचते शाहरुख खान।

येल में शाहरुख का जलवा

आईवी लीग संस्थान ने बॉलीवुड बादशाह शाहरुख खान को येल के सर्वश्रेष्ठ सम्मानों में से एक चब फेलोशिप देकर सम्मानित किया

बॉलीवुड स्टार शाहरुख खान ने उस वक़्त येल यूनिवर्सिटी के छात्रों को अपनी अदाओं से सम्मोहित कर लिया जब वे इस आईवी लीग संस्थान के सर्वश्रेष्ठ सम्मानों में से एक चब फेलोशिप स्वीकार करने के लिए संस्थान में आए।

१३ अप्रैल को शाहरुख खान की झलक पाने के लिए कनेक्टीकट के न्यू हेवेन स्थित शुबर्ट थिएटर के बाहर भीड़ इकट्ठा हुई और जैसे-जैसे दिन ढलता गया कतार लंबी होती गई। उनके चाहने वालों की भीड़ अलबामा और कैलिफोर्निया जैसे दूरदराज़ इलाकों से भी इकट्ठा हुई। न्यू हेवेन एवं येल समुदाय व दूसरे इलाकों के कुल १,७०० से अधिक लोगों की भीड़ अपने चहेते स्टार को देखने-सुनने के लिए जमा हुई।

शाहरुख ने कामयाबी और नाकामयाबी एवं जीवन को पूरी जीवंतता से जीने के अपने दर्शन के बारे में बोलकर लोगों को खूब प्रभावित किया। उन्होंने युवा पीढ़ी को रचनात्मकता में परिपूर्णता तलाशने के लिए प्रेरित किया और कहा कि लोगों में खुद पर हंसने का माद्दा होना चाहिए एवं अपनी ज़िंदगी के प्रति दोषदर्शी होने की जरूरत नहीं है।

उन्होंने कहा, ''असफलता सबसे प्रिय दोस्त है जो आपको अधिक आशावादी, मेहनती और अपने प्रति सच्चा बनकर सफलता हासिल करने को प्रेरित करती है।'' उन्होंने दार्शनिक अंदाज में कहा कि किसी की दोस्ती की ताकत की परीक्षा बुरे समय में होती है।

उनके व्याख्यान ने उस वक़्त अचानक मस्ती भरा सुखद मोड़ लिया जब उन्होंने येल की छात्रा नतालिया खोसला के साथ 'छम्मक छल्लो' की धुन पर अपने चिर अंदाज में डांस किया।

खान ने अपने अनुभव के बारे में कहा, ''हाल के महीनों में मैंने इतनी मस्ती कभी नहीं की थी।'' शाहरुख खान का परिचय येल की छात्रा इशा अंबानी ने कराया, जो येल में साउथ एशियन सोसायटी की अध्यक्ष हैं। शाहरुख ने मंच पर अंडरग्रेजुएट दाखिला के येल डीन एवं टिमोथी ड्विट कालेज, येल का वह आवासीय कालेज जो चब फेलोशिप का संचालन करता है, के स्नातकोत्तर जेफरी ब्रेंजेल, येल कालेज की छात्रा रहीं सारिका आर्या और येल लॉ स्कूल के छात्र निखिल सूद के साथ एक वाद-विवाद में भाग लिया।

येल चब फेलोशिप से जुड़े कार्यक्रम के तहत शाहरुख ने टिमोथी ड्विट कालेज में आयोजित एक स्वागत कार्यक्रम एवं भोज में हिस्सा लिया, जिसमें येल में साउथ एशियन सोसायटी के सदस्यों, टिमोथी ड्विट के फेलो और येल समुदाय के सदस्यों समेत १२० येल छात्रों ने भाग लिया।

पूर्व चब फेलो में पूर्व राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश, रोनाल्ड रीगन और जिमी कार्टर, लेखक ऑक्टिवियो पाज़, कार्लोस फुएंटेस और टोनी मॉरिसम, फिल्म निर्माता सोफिया कोपोल्ला, आर्किटेक्ट फ्रैंक गेहरी, कोरियोग्राफर मिखाइल बेरिश्नीकोव और पत्रकार वाल्टर क्रोंकिट जैसी हस्तियां शामिल रही हैं। pb

नन्हा पर्यावरण मित्र

यूएई में भारतीय मूल का १० वर्षीय नन्हा बालक **अब्दुल मुकीत** प्रतिबद्ध पर्यावरण मित्र है, जो खुद पेपर बैग बनाकर लोगों में वितरित करता है

संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में १० वर्षीय भारतीय बच्चा अब्दुल मुकीत पर्यावरण की रक्षा के लिए अपनी ओर से सराहनीय एवं प्रेरक प्रयास कर रहा है। हर रोज़ वह पेपर बैग बनाकर सुपरमार्केटों, स्टोरों एवं मॉलों को वितरित करता है।

उसने यह मिशन तब शुरू किया था जब महज आठ साल का था। उसे इसकी प्रेरणा तब मिली जब पिता ने उसे प्रकृति पर नॉन-बायोग्रेडेबल प्लास्टिक बैगों के बुरे प्रभाव के बारे में बताया।

इससे मुकीत को पर्यावरणानुकूल विचारों पर अमल करने की प्रेरणा मिली। उसने निजी स्तर पर अपने प्रयास को आगे बढ़ाने और लोगों को प्रेरित करने का फैसला किया।

स्कूल के बाद मुकीत हर रोज पुराने अखबारों से बैग बनाने लगा। दो वर्षों में उसने सुपरमार्केटों, स्टोरों एवं मॉलों को करीब ४,५०० पेपर बैग बनाकर बांटे।

'पेपर बैग ब्वॉय' के रूप में चर्चित मुकीत ने कहा, ''मैं रोज़ाना १०-१५ बैग बनाता हूं। मेरे स्कूली दोस्तों ने इन बैगों को अब्दुल मुकीत बैग्स नाम दे दिया है।''

मुकीत को किसी सुपरमार्केट में किसी भी अजनबी को रोककर अपना संदेश देने में कोई हिचक नहीं होती। वह चेक-आउट काउंटर पर इंतज़ार करता है और किसी भी आगंतुक से उसकी बात सुनने के लिए एक मिनट का समय मांगता है। वह उन्हें पर्यावरण के बारे में बताता है। वह कहता है, ''मैं उन्हें बताता हूं कि एक टन पेपर की रिसाइकिलिंग से १७ वृक्षों की रक्षा होती है।''

वह मेरिना मॉल, अबू धाबी मॉल, खालिदिया मॉल, अल आइन के जिम्मी मॉल, दुबई फेस्टिवल मॉल और दुबई मेरिना मॉल में अपने इस मिशन का प्रदर्शन कर चुका है। उसकी मां अंदलीब फातिमा ने बताया कि मुकीत को पर्यावरण संरक्षण के लिए कई पुरस्कार मिल चुके हैं।

अब उसकी प्रस्तुति के दौरान उसके माता-पिता भी साथ में होते हैं। उसकी मां कहती हैं, ''जब हम उसका उत्साह देखते हैं तो हमें उसकी रुचि को और तराशने का मन करता है। मैं सभी माताओं से कहना चाहती हूं कि हर बच्चा समाज को कुछ न कुछ दे सकता है।'' pb

(दायें) अब्दुल मुकीत एक पौधे को सींचते हुए, अपने मिशन के लिए पुरस्कृत किए जाने के बाद यूएई के उद्योगपति डा. बी.आर. शेट्टी (बायें से दूसरे) के साथ और एक पेपरबैग प्रदर्शन के दौरान।

शीर्ष प्राप्तकर्ता

ऐसे में जब वर्ष २०११ में भारत में ६३ अरब डालर विप्रेषित राशि प्राप्त हुई, भारत दुनिया भर में फैले अपने अप्रवासियों से रकम प्राप्ति के मामले में नंबर एक देश बना हुआ है

वर्ष २०११ में भारत में ६३ अरब डालर की विप्रेषित राशि की प्राप्ति के साथ भारत दुनिया भर में फैले अपने प्रवासियों से रकम प्राप्ति के मामले में नंबर एक देश बना हुआ है। विश्व बैंक के एक आंकड़े के अनुसार यह रकम भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का ३ फीसदी है। आव्रजन एवं रेमिटेंस पर एक आंकड़े के मुताबिक विश्व बैंक ने कहा है कि भारत में रेमिटेंस के प्रवाह में तेजी की वजह रुपये का कमजोर होना एवं खाड़ी देशों में तेज आर्थिक गतिविधियां।

विश्व बैंक ने पिछले साल नवंबर के आकलन की तुलना में २०११ में इस प्रवाह में ५.८ फीसदी की वृद्धि की पुष्टि की है। रिपोर्ट में कहा गया है, ''२०११ में इस प्रवाह में इस वृद्धि की प्रमुख वजह है रुपये का कमजोर होना एवं खाड़ी सहयोग परिषद के देशों, जो

रेमिटेंस में वृद्धि की वजह है खाड़ी देशों में तेज आर्थिक गतिविधियां।

कि हालिया आप्रवासियों के प्रमुख ठिकाने रहे हैं, में तेज आर्थिक गतिविधियां।''

पिछले साल एक रिपोर्ट विश्व बैंक ने कहा था कि भारत की ओर कुल ५८ अरब डालर का निवेश प्रवाह होगा।

वैसे, वाशिंगटन स्थित इस एजेंसी ने इस आंकड़े को अब ६३.६६ अरब डालर के बिंदु पर नियत किया है।

भारत ने २०१० में ५४.०३ अरब डालर रकम प्राप्त की। २०११ में ६२.४६ अरब डालर की रकम प्राप्ति के साथ चीन प्रवासियों से रकम प्राप्त करने के मामले में दूसरे नंबर पर है। पर रकम चीन के जीडीपी का सिर्फ ०.८ फीसदी ही है।

वर्ष २०११ में विकासशील देशों की ओर कुल रेमिटेंस प्रवाह के ३७२ अरब डालर के बिंदु पर पहुंचने की संभावना है, जो २०१० की तुलना में १२.१ फीसदी का इज़ाफा है। वैश्विक रेमिटेंस प्रवाह, जिनमें उच्च आय वाले देश भी शामिल हैं, २०११ में ५०१ अरब डालर के बिंदु पर पहुंच गया।

नस्लवाद के खिलाफ तकनीकी हस्तक्षेप

एक अभिनव मोबाइल प्रणाली फ्लाइराइट्स प्रयोक्ताओं को नस्लीय आधार पर तलाशी की शिकायत के बारे में सही समय पर जानकारी देने का मौका देगी

अमेरिका स्थित एक सामुदायिक समूह द सिख कोएलिशन ने एक अनूठी मोबाइल प्रणाली फ्लाइराइटस लांच की है, जो प्रयोक्ताओं को हवाई अड्डों पर नस्लीय आधार पर तलाशी की घटनाओं के बारे में सही समय पर सूचित करने में सक्षम बनाएगी।

फ्लाइराइट्स द्वारा भेजी गई रिपोर्ट को ट्रांसपोर्टेशन

आईफोन या एंड्रोऑइड पर फ्लाइराइट्स डाउनलोड हो सकता है।

सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेशन (टीएसए) और डिपार्टमेंट ऑफ होमलैंड सिक्योरिटी (डीएचएस) समूह द्वारा आधिकारिक तौर पर स्वीकृत कर उन पर कार्यवाही के योग्य माना जाएगा।

सिख संगठन ने कहा है, ''फ्लाइराइट्स तकनीकी एवं नागरिक अधिकार सक्रियता का एक अनूठा मेल है।''अपने समर्थकों को अपने मोबाइल फोन पर फ्लाइराइट्स डाउनलोड करने एवं हवाई अड्डों पर भेदभाव के खिलाफ शिकायत पहुंचाने की सलाह देते हुए समूह ने कहा है।

अमेरिका में रोजगार पैदा कर रहे हैं भारतीय : सर्वे

अमेरिका के ४० प्रांतों में कारोबार कर रही भारतीय कंपनियों ने अमेरिका की निर्माण सुविधाओं के विकास में ८२० मिलियन डालर से अधिक का निवेश कर हजारों नौकरियों का सृजन किया। २०१२ के लिए इंडिया बिजनेस फोरम (आईबीएफ) के सर्वेक्षण में यह कहा गया है।

'इंडियन रूट्स, अमेरिकन स्वायल : एडिंग वैल्यू टू यू. एस. इकोनॉमी एंड सोसायटी' नामक इस सर्वेक्षण की रिपोर्ट कैपिटॉल हिल में आयोजित एक रिसेप्शन पार्टी में भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) द्वारा पेश की गई। अमेरिका में भारत की राजदूत निरूपमा राव ने कहा, ''तेजी से फलते-फूलते भारत-अमेरिका व्यापारिक रिश्ते और तेज आर्थिक गतिविधियों के कारण दोनों मुल्कों के बीच रणनीतिक भागीदारी को खास दिशा मिली है।'' सीआईआई प्रमुख एवं निदेशक संध्या सतवड़ी ने कहा, ''इसका उद्देश्य है अमेरिका में भारतीय निवेश के बारे में बताना एवं भारतीय कंपनियों से जुड़ी गलत धारणाओं को दूर करना।''

इस कार्यक्रम में इंडिया कॉकस ऑन सीनेट एंड हाउस के चार सह-अध्यक्षों ने भाग लिया। वे हैं- सीनेटर जॉन कॉर्निन, सीनेटर मार्क वार्नर, कांग्रेस सदस्य जोसेफ क्राउली एवं एड रॉयस।

प्रमुख निष्कर्ष

- सर्वेक्षण में शामिल कंपनियों में से ७० फीसदी ने २००५ के बाद से अपने कर्मचारियों की संख्या बढ़ाई है।
- सर्वे में शामिल कंपनियों में से ३४ फीसदी से ज्यादा ने अमेरिका में निर्माण सुविधाएं विकसित की हैं और ८२० मिलियन डालर का निवेश किया है।
- २००५ से, सर्वेक्षित शामिल कंपनियों ने अमेरिका में ७२ विलय एवं अधिग्रहण को अंजाम दिया।
- २०१०-२०११ के लिए उनका समग्र राजस्व २३ अरब डालर से अधिक था।
- सर्वेक्षित कंपनियों द्वारा २०१२ में अनुमानित शोध एवं विकास निवेश १६० मिलियन डालर था।
- करीब ६५ फीसदी कंपनियां सीएसआर गतिविधियों में शामिल

खाड़ी क्षेत्र की नामी हस्ती हैं यूसुफअली

केरल में जन्मे एम.ए. यूसुफअली को गल्फ कोऑपरेशन काउंसिल (जीसीसी), छह मध्य-पूर्वी देशों - सऊदी अरब, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात, कतर, बहरीन एवं ओमन - का राजनीतिक एवं आर्थिक गठबंधन, के सर्वाधिक प्रभावशाली भारतीय सदस्यों में से एक गिना जाता है। वे अबू धाबी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के प्रथम निर्वाचित गैर-अरब सदस्य हैं।

त्रिचूर में जन्मे यूसुफअली मध्य-पूर्व की अग्रणी रिटेल कंपनी इमके लुलु ग्रुप के प्रबंध निदेशक हैं। इस साल कंपनी २० फीसदी आर्थिक विकास दर हासिल करने की राह पर है। ५.४ अरब डालर के बिंदु पर पहुंचकर यह इस दर को हासिल करेगी। यूएई का यह देशी ब्रांड अपने आउटलेटों की संख्या १०० पर पहुंचा चुका है, वहीं इसने अपने नव-निर्मित मॉल में एक हाइपर मार्केट भी खोला है।

यूसुफअली ने कहा कि सुपरमार्केट एवं डिपार्टमेंट स्टोर चेन के तौर पर स्थापित लुलु ने धीरे-धीरे बिग फार्मेट के हाइपरमार्केट (ऐसे रिटेल स्टोर जिसमें डिपार्टमेंट स्टोर एवं ग्रोसरी सुपरमार्केट दोनों होते हैं) क्षेत्र में भी सेंध लगाने में सफलता पाई। आज वह जीसीसी में १० शॉपिंग मॉल का संचालन करती है।

जीसीसी में खुदरा कारोबार के ३२ फीसदी हिस्से पर यह कंपनी काबिज है और आर्थिक मंदी के बावजूद इसने बिक्री के मामले में १६ फीसदी की वृद्धि दर अर्जित कर ४.५ अरब

डालर का कारोबार अर्जित किया।

जीसीसी के तकरीबन सभी प्रमुख शहरों में इसके हाइपरमार्केट एवं शापिंग मॉल खुल चुके हैं और इनकी संख्या २३ हो चुकी है। उन्होंने कहा कि इस साल मध्य-पूर्व एवं

एम.ए. यूसुफअली।

भारत में कई और आउटलेटों के खुल जाने से यह रफ़्तार और ज़ोर पकड़ेगी।

उन्होंने कहा कि उनकी कंपनी २०१२ में जीसीसी और मिस्र में चार और नए स्टोर खोलोगी और २०१२ के अंत में एक हाइपरमार्केट के उद्घाटन के साथ ही भारत में भी रिटेल कारोबार क्षेत्र में प्रवेश कर जाएगी।

कंपनी की अगली पहल होगी 'वेबस्टोर' की स्थापना।

उन्होंने कहा, ''क्षेत्र के सर्वाधिक लोकप्रिय एवं खास पहचान वाले ब्रांडों के तौर पर लुलु आज उन सभी देशों में मार्केट लीडर बन चुकी है, जहां उसका कारोबार है।''

परिवर्तन कारक

ये हैं अमेरिकी कांग्रेस का चुनाव लड़ने वाली प्रथम भारतीय-अमेरिकी महिला **रेशमा सौजानी** जो न्यूयार्क सिटी में अप्रवासियों के लिए अवसर पैदा करना चाहती हैं। **अरुण कुमार** की रिपोर्ट

अमेरिकी कांग्रेस का चुनाव लड़ने वाली प्रथम भारतीय-अमेरिकी महिला रेशमा सौजानी उन आप्रवासियों के लिए अधिक अवसर पैदा करना चाहती हैं जिन्होंने न्यूयार्क को अपना घर बना लिया है

भलेही पेशे से वकील, राजनीतिज्ञ और उद्यमी सौजानी को न्यूयार्क से नौ बार संसद का चुनाव जीतने वाली कैरोलिन मैहोनी के खिलाफ २०१० की अपनी चुनावी मुहिम में सफलता नहीं मिली, वे अब '२०१३ में होने वाले संसदीय चुनाव' में फिर से अपनी उम्मीदवारी पेश करने की तैयारी में हैं।

निगरानी निकाय पब्लिक एडवोकेट ऑफिस में विशेष पहल के लिए उप एडवोकेट जनरल सौजानी ने कहा, ''इस कार्यालय में १५ महीनों का मेरा कार्यकाल मेरे जीवन का सर्वश्रेष्ठ काल है।'' उन्होंने कहा, ''पब्लिसिटी एडवोकसी के लिए फंड के जरिए हमने जो भी हासिल करने की कोशिश की, जिसमें आप्रवासी उद्यमिता से लेकर गैर-पंजीकृत छात्रों को छात्रवृत्तियां प्रदान करना शामिल था, वह वाकई बेहद सशक्त कदम था।''

उन्होंने कहा, ''मैं न्यूयार्क सिटी के भविष्य के निर्धारण में नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाना चाहती हूं। मैं चाहती हूं कि यहां रहने वाले लोगों के लिए मौकों का सृजन होता रहे।''

यह पूछे जाने पर कि आपको अमेरिकी चुनाव में किस्मत आजमाने की प्रेरणा कहां से मिली, उन्होंने कहा, ''वाशिंगटन में सब कुछ ठीक

रेशमा सौजानी

नहीं था और मैं कांग्रेस में नेतृत्व एवं राजनीतिक साहस की कमी से व्यथित थी।''

उन्होंने कहा, ''मैंने महसूस किया कि हमारे आप-पास के लोग निराश हैं और मैं इस स्थिति को बदलना चाहती थी।''

सौजानी ने कहा, ''इस देश में अभिनवीकरण को प्रेरित करने के लिए नए विचारों की काफी महत्ता रही है और मैं अपने विचारों को यहां आजमाना चाहती थी एवं न्यूयार्क सिटी के लोगों से उनकी नियति के बारे में बात करना चाहती थी।''

सौजानी ने कहा, ''लेकिन मतदाताओं से बातकर मुझे जो अनुभव हासिल हुआ, उससे साबित हुआ कि किसी महत्वपूर्ण केंद्र या स्थानीय मेले में उपस्थित होकर या समाज में बदलाव के लिए काम करने वाले लोगों के साथ मिलकर काम करने से परिवर्तन का रास्ता वाकई साफ किया जा सकता है।''

उन्होंने कहा, ''मैं हमेशा से एक सक्रिय आयोजक रही हूं और आप्रवासी माता-पिता की पुत्री होने के नाते मैं उन लोगों के साथ काम करने को लालायित रही हूं जो राजनीतिक प्रक्रिया से बाहर रहे हैं या जिन्हें यह महसूस होता रहा है कि उनकी आवाज सुनी नहीं जाती।''

उन्हें 'द लाइट ऑफ इंडिया अवार्ड्स' शुरू करने का श्रेय जाता है जो भारतीय अमेरिकियों के कार्यों को सराहने एवं उनकी उपलब्धियों व उनके द्वारा किए जाने वाले अभिनवीकरण को प्रदर्शित करने का एक सशक्त मंच है। उन्होंने कहा कि ऐसे लोग सरकार में हर स्तर पर नीति निर्माता से लेकर कार्यकर्ता एवं परिवर्तन कारक के तौर पर अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

इस पुरस्कार की दूसरी कड़ी के लिए लेखिका झुंपा लाहिरी, टीवी शख्सियत पद्मा लक्ष्मी और सीएनएन के कंट्रीब्यूटर एवं सर्जन संजय गुप्ता को नामित किया गया है। यह विदेशों में भारतीयों की विशिष्ट उपलब्धियों के एवज में दिया जाता है।

शिक्षा, कारोबार, विज्ञान एवं तकनीकी, कला, उद्योग, साहित्य एवं पत्रकारिता क्षेत्र में विजेताओं की घोषणा न्यूयार्क में १ जून को एक भव्य पार्टी में की जाएगी।

जादुई स्पर्श

बायें से, अनील भूश्री, नीरज अग्रवाल, रॉब चंद्रा, सुब्रत मित्रा और विनोद खोसला।

नौ भारतीय अमेरिकियों ने फोर्ब्स की 'मिडास लिस्ट ऑफ टेक्नोलॉजीज बेस्ट इनवेस्टर' में जगह बनाई है

नौ भारतीय अमेरिकियों ने अपनी नव-स्थापित कंपनियों के लिए बेहतर निवेश नीति के बूते बुल मार्केट को सहारा देने में अग्रणी भूमिका निभाकर फोर्ब्स की 'मिडास लिस्ट ऑफ टेक्नोलॉजी'ज बेस्ट इनवेस्टर' में जगह बनाई है।

भारतीय-अमेरिकी सूची का नेतृत्व ग्रेलॉक पार्टनर्स के अनील भूश्री ने किया है, जो इस सूची में २५वें नंबर (२०११ में १५वें नंबर पर) पर हैं। भूश्री वर्कडे के सह-सीईओ हैं। यह क्लाउड केंद्रित वित्तीय एवं मानव संसाधन सॉफ्टवेयर कंपनी है।

मिडास सूची में लगातार चार बार जगह बनाने वाले बेसेमर वेंचर पार्टनर्स के रॉब चंद्रा २८वें नंबर (२०११ में २६वें नंबर पर) पर हैं। भारतीय पब्लिक मार्केट्स पर कई आईपीओ लाने वाले चंद्रा भारत स्थित भारत मेट्रीमॉनी एवं समिट माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स कंपनियों के कर्ताधर्ता हैं।

एक्सेल पार्टनर्स के समीर गांधी इसमें ३३वें स्थान पर हैं (२०११ में ८१वें स्थान पर)। फोर्ब्स के मुताबिक फाइल-शेयरिंग कंपनी ड्रॉपबॉक्स में उनका २००८ का सीरिज ए निवेश काफी उम्दा प्रदर्शन कर रहा है और कहा जाता है कि २०११ में इसका वैल्यूएशन ४ अरब डालर हो गया। उन्होंने हाल ही में एक भारतीय ऑनलाइन शॉपिंग साइट फ्लिपकार्ट में निवेश किया है। खोसला वेंचर्स के विनोद खोसला ३४वें स्थान (२०११ में ७१वें) पर हैं। खोसला को अभिनव क्लीन-टेक निवेश के लिए जाना जाता है।

सूची में जगह बनाने वाले अन्य भारतीय-अमेरिकी हैं बैटरी वेंचर्स के नीरज अग्रवाल (३६ वें) (२०११ में ५१ वें), मेफील्ड फंड के नवीन चड्ढा (४६वें), बेन कैपिटल वेंचर्स के अजय अग्रवाल (६५वें), ग्रेलॉक पार्टनर्स के अशीम चंदना (६६) और एक्सेल इंडिया के सुब्रत मित्रा (६६वें)।

मेधा की ताकत

(बायें से) इंद्र सेन, जसमीत अहूजा, रीना थॉमस, साहिल सिंह ग्रेवाल, विक्टर रॉय और विनीत सिंघल।

छह भारतीय अमेरिकी २० देशों के उन ३० अप्रवासियों एवं अप्रवासियों के बच्चों की जमात में शामिल हैं, जिन्हें '२०१२ के पॉल एंड डेजी सोरोस न्यू अमेरिकन फेलोशिप' के लिए चुना गया है। यह फेलोशिप उन्हें एडवांस्ड डिग्री की पढ़ाई के लिए दी गई है।

टेक्सास स्थित साहिल सिंह ग्रेवाल इस अनुदान का इस्तेमाल लॉ डिग्री करने या एमबीए की पढ़ाई पूरी करने के लिए करेंगे। ह्वाइट हाउस में इंटर्न के तौर पर प्रशिक्षण के दौरान सिंह ने स्वास्थ्य से जुड़े मसलों पर काम किया।

जसमीत अहूजा येल लॉ स्कूल में लॉ की डिग्री पूरी करने पर यह रकम खर्च करना चाहते हैं। न्यूजर्सी में जन्मे विक्टर रॉय इस राशि का इस्तेमाल नॉर्थ-वेस्टर्न यूनिवर्सिटी के फीनबर्ग स्कूल ऑफ मेडिसीन में एमडी की पढ़ाई के लिए करना चाहते हैं।

नॉर्विक, कनेक्टिकट में भारतीय पिता एवं चीनी मां की संतान इंद्र सेन हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में पब्लिक पॉलिसी में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पर इस राशि को खर्च करना चाहते हैं। भारत में जन्मे विनीत सिंघल इस रकम को मेयो क्लिनिक स्कूल ऑफ मेडिसीन में मेडिकल की पढ़ाई पर खर्च करने की योजना बना रहे हैं। लुसियाना में जन्मी रीना थॉमस, जिन्होंने आर्थिक विकास, टैक्स और बजट पॉलिसी पर लुसियाना के गवर्नर बॉबी जिंदल का सलाहकार बनने के लिए हार्वर्ड लॉ स्कूल में अपना दाखिला टाल दिया, इस अनुदान का इस्तेमाल अपनी लॉ डिग्री पूरी करने के लिए करेंगी।

टॉपर की तमन्ना

आईसीएसई ग्रेड १२ की वैश्विक परीक्षा में टॉप करने वाले दुबई मॉडर्न हाई स्कूल के विज्ञान छात्र **रोहन** को उम्मीद है कि एक दिन वे भारत जरूर लौटेंगे, **मालविका वेट्टाथ** की रिपोर्ट

इस १७ वर्षीय छात्र को यह तो मालूम था कि उनकी १२वीं की परीक्षा अच्छी जाएगी, पर उन्होंने यह नहीं सोचा था कि वे इंडियन सर्टिफिकेट ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन (आईसीएसई) की परीक्षा में ९९.५ फीसदी अंक हासिल कर वैश्विक स्तर पर टॉप कर जायेंगे। भारत में जन्मे रोहन संपथ स्टैंफर्ड यूनिवर्सिटी में अपनी पारी की शुरुआत का इंतज़ार कर रहे हैं और दुबई में पले-बढ़े दूसरे छात्रों के विपरीत उनका सपना है भारत लौटना।

दुबई मॉडर्न हाई स्कूल के छात्र रोहन ने आईएएनएस के साथ एक साक्षात्कार में कहा, ''जब मुझे यह ख़बर मिली तो सहसा भरोसा नहीं हुआ। मुझे लगा कि टाइप की गलती है। मैंने इतने बेहतर परिणाम के बारे में सपने में भी नहीं सोचा था।''

मुंबई में जन्मे रोहन ने गणित में १०० फीसदी, भौतिकी में १०० फीसदी, कंप्यूटर विज्ञान में १०० फीसदी, अंग्रेजी में ९८ फीसदी हासिल कर खुद को आईसीएसई परीक्षाओं के इतिहास में अब तक सर्वाधिक अंक हासिल करने वाले रिकार्डधारी के तौर पर स्थापित कर लिया।

उनके माता-पिता, जो १८ वर्षों से दुबई में रह रहे हैं, स्वाभाविक तौर पर काफी खुश हैं, पर उनका कहना है कि उन्हें ज्यादा खुशी तब हुई जब उसे अमेरिका के स्टैंफर्ड एवं येल दोनों विश्वविद्यालयों की ओर से मौका मिला। उसकी मां संध्या संपथ ने कहा, ''हम उसके अंक को लेकर चिंतित नहीं थे। उसने सभी स्कूली परीक्षाएं अब तक औसतन ९८ फीसदी अंक के साथ पास की हैं। मुझे तब ज्यादा खुशी हुई जब उसे येल और स्टैंफर्ड दोनों से ऑफर मिले। बाद में उसके आईसीएसई में विश्वस्तर पर टॉप करने की ख़बर मिली। हमारी खुशी और बढ़ गई।''

रोहन ने स्टैंफर्ड में अर्थशास्त्र या इंजीनियरिंग में से कोई एक विषय पढ़ने का फैसला किया है। प्राइवेट ट्यूशन रोहन की रणनीति में कोई स्थान नहीं रखता, जबकि अधिकांश भारतीय परिवारों में ट्यूशन का प्रचलन रहा है।

रोहन कहते हैं, ''मैं ट्यूशन का विरोधी रहा हूं। मेरी सफलता में मेरे स्कूल शिक्षकों की भूमिका रही है। चूंकि मैं अपने शिक्षकों पर पूरा भरोसा करता हूं, इसलिए प्राइवेट ट्यूशन को उनका अपमान समझता हूं। मैं समझता हूं कि ट्यूशन पर समय खर्च करने की बजाए स्व-अध्ययन पर या एक्स्ट्रा करिकुलर गतिविधियों पर उस समय का इस्तेमाल हो। आपको अधिक ध्यान केंद्रित होने की जरूरत है।''

किसी भी टॉपर की छवि के विपरीत, रोहन को घंटों पुस्तकों में डूबे रहना पसंद नहीं। दरअसल, यह छात्र अपनी परीक्षाओं से महज एक सप्ताह पहले तक एक अंतर्राष्ट्रीय वाद-विवाद प्रतियोगिता के आयोजन में मशगूल था।

अपने स्कूल की डेबेटिंग सोसायटी के अध्यक्ष इस चश्माधारी मेधावी छात्र ने कहा, ''मैं मॉडर्न वर्ल्ड डिबेट्स' की तैयारी में सक्रिय थे, जिसमें यूके, भारत, कतर और सिंगापुर की टीमों ने भाग लिया। यह एक बड़ी जिम्मेवारी थी, जिसे हमें बेहतरीन ढंग से पूरा करना था।''

भलेही रोहन परीक्षा को लेकर ज्यादा चिंतित नहीं थे, पर मां जरूर चिंतित थी। इसका ज़िक्र करते हुए कि रोहन तैराकी एवं टेनिस में भी कुशल हैं, उनकी मां ने आईएएनएस को बताया, ''विश्वास कीजिए, मैं काफी चिंतित थी, लेकिन हमारे सामने कोई विकल्प नहीं था।''

रोहन ने स्टैंफर्ड में अर्थशास्त्र या इंजीनियरिंग में से कोई एक विषय पढ़ने का फैसला किया है।

रोहन के स्कूल शिक्षक डेरिल ब्लाउड भी उनकी तारीफ करते नहीं थकते। ब्लाउड ने कहा, ''रोहन ने आईएससीई परीक्षा २०१२ में ऐसा शानदार प्रदर्शन कर मॉडर्न स्कूल का नाम रौशन किया है और 'पूर्ण संभावना' को फिर से परिभाषित कर दिया है। मैं मॉडर्न स्कूल के इस गौरवशाली सदस्य को सलाम करना हूं।''

दुबई में लालन-पालन के बावजूद रोहन का दिल भारत में बसता है। उनका कहना है कि भारत के साथ उनका विशेष रिश्ता है। पिछले साल एक एनजीओ 'आकांक्षा' के लिए बतौर स्वयंसेवक मुंबई के गरीब बच्चों को पढ़ाते हुए अपने दादा जी के साथ छुट्टियां मनाने के अपने अनुभव की चर्चा करते हुए रोहन कहते हैं कि उनकी तमन्ना है भारत लौटना।

वे कहते हैं, ''मैं हमेशा से यही चाहता रहा हूं कि पढ़ाई के बाद भारत लौटूं। मुझे नहीं लगता कि भारत में एडजस्ट होने में अधिक परेशानी होगी। मेरे और भारत में मेरी उम्र के बच्चों के बीच ज्यादा फर्क नहीं है, सिवाय इसके कि मैं उनकी तरह हिंदी नहीं बोल पाता।''

'वैश्विक परिप्रेक्ष्य से युक्त भारतीय संस्कार' पाने का श्रेय वे अपने माता-पिता और अपने स्कूल को देते हैं।

प्रेरक पथ प्रदर्शक

राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अमेरिका के निर्माण में एशियाइयों के योगदान की प्रशंसा करते हुए दिलीप सिंह सौंद की मिसाल दी, **अरुण कुमार** की रिपोर्ट

सौंद १९५६ में २९वें डिस्ट्रिक्ट ऑफ कैलोफोर्निया से अमेरिकी कांग्रेस के लिए १९५७ से १९६३ तक के लिए चुने गए।

अमेरिकी कांग्रेस के प्रथम भारतीय-अमेरिकी सदस्य दिलीप सिंह सौंद का उदाहरण देते हुए राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अमेरिका के निर्माण में एशियाई अमेरिकियों एवं प्रशांत क्षेत्र के द्वीप वासियों के योगदानों की जमकर सराहना की। वाशिंगटन डीसी में एशियन पैसिफिक अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ कांग्रेसनल स्टडीज के १८वें वार्षिक समारोह में ओबामा ने कहा, ''इस समुदाय में दिलीप सिंह सौंद - एक युवा व्यक्ति जो कृषि की पढ़ाई करने के लिए भारत से १९२० अमेरिका आया, बतौर किसान काम किया और दक्षिण एशियाई मूल के लोगों को नागरिकता प्रदान करने की मुहिम को आगे बढ़ाया, जैसे पथ प्रदर्शक थे।''

ओबामा ने कहा, ''जब दिलीप को अपनी नागरिकता हासिल हो गई तो उन्होंने उस देश की सेवा करने की ठानी जिससे वे प्यार करते थे और इस तरह अमेरिकी कांग्रेस के लिए चुने जाने वाले प्रथम एशियाई अमेरिकी बन गए।''

पंजाब के छजूलवादी में जन्मे सौंद ने १९५७ से १९६३ तक २९वें डिस्ट्रिक्ट ऑफ कैलोफोर्निया का प्रतिनिधित्व किया।

ओबामा ने जज्बाती स्वर में कहा, ''जब मैं एशियाई अमेरिकियों एवं प्रशांत द्वीप वासियों के बारे में सोचता हूं तो मैं अपने परिवार - अपनी बहन माया, अपने बहनोई कोनार्ड, अपनी भतीजी सुहैला और सविता - के बारे में भी सोचता हूं। मैं उन सभी लोगों के बारे में सोचता हूं जिनके साथ मैं होनोलुलु में बड़ा हुआ।''

उन्होंने कहा, ''मैं उन वर्षों के बारे में सोचता हूं जो मैंने इंडोनेशिया में बिताए। सो आपके बीच आकर मुझे ऐसा लग रहा है जैसे अपने घर में आया हूं। यह वह समुदाय है जिसने मुझे वह बनने में मदद दी जो आज मैं हूं। यह वह समुदाय है जिसने अमेरिका को अमेरिका बनाने में योगदान दिया।'' उन्होंने कहा, ''एशियाई अमेरिकी यहां सिर्फ खुद के लिए मौके की तलाश में नहीं आए थे, बल्कि अपने बच्चों के बच्चों के लिए भी और आने वाली सभी पीढ़ियों के लिए।''

उन्होंने कहा, ''इनमें से कुछ के पास तो पैसे थे, पर अधिकांश के पास पैसे नहीं थे। लेकिन उनकी सबसे बड़ी संपदा यह अटूट भरोसा था कि इस देश कमें कोई भी व्यक्ति अपनी मेहनत के बल पर मुकाम हासिल कर सकता है।''

संगीत के माध्यम से टैगोर को याद किया पोलैंड ने

रबींद्रनाथ टैगोर को उनके १५०वें जन्मदिन पर याद करते हुए पोलैंड ने उनकी साहित्यिक विरासत की थीम पर एक यादगार संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया।

पोलैंड के कोज़ोव स्थित डांस समूह 'ताल' ने इस मौके पर क्राकोव एवं वारसा में हाल ही में दो शानदार कार्यक्रम पेश किए। इसने इसके लिए टैगोर के डांस म्युजिकल 'श्यामा', जो एक त्रासद रूमानी प्रस्तुति है और जिसमें दरबारी नृत्यांगना श्यामा एवं विदेशी व्यापारी बोजरोशन की दो प्यार कहानियां शामिल हैं, का चयन किया। ताल ग्रुप की निदेशक एवं कोरियोग्राफर सबीना श्वेता सेन ने कहा, ''इस म्युजिकल प्ले का मंचन हमारे लिए बड़ी चुनौती थी। इसके लिए मंच पर भरपूर फोकस एवं प्रतिबद्धता की जरूरत थी।'' सेन को इसके लिए २० युवा डांसरों को बंगाली एवं टैगोर की विरासत से अवगत कराना पड़ा। इसकी तैयारी में पोलिश कलाकारों को छह महीने लगे। इन कलाकारों को मंच पर नर्तकों के साथ टैगोर के गीत गाने का प्रशिक्षण दिया गया। निर्देशक ने ओभी चटर्जी की फिल्म 'श्यामा' के संगीत का इस्तेमाल इसके लिए किया।

सेन ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''हम इस डांस म्युजिकल को न सिर्फ यूरोप के कई शहरों, बल्कि पश्चिम बंगाल एवं बांग्लादेश में भी प्रदर्शित करना चाहते हैं। हम कई स्थलों एवं प्रायोजकों की तलाश कर रहे हैं।''

सेन ने कहा, ''क्राकोव में इंडो-पोलिश कल्चरल कमिटी (आईपीसीसी) के अध्यक्ष उमेश नौटियाल एवं पोलैंड में भारतीय राजदूत मोनिका कपिला मोहता ने वाकई हमें ऐसे कई और शास्त्रीय कार्यक्रम तैयार करने के लिए प्रेरित किया है।''

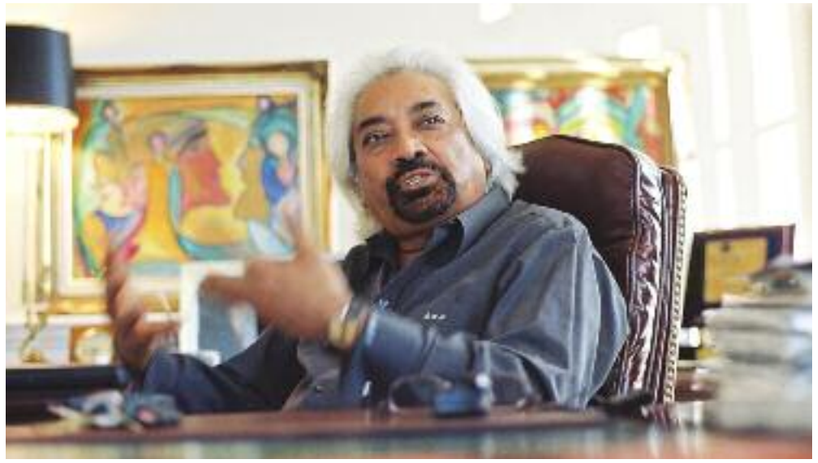

आतिथ्य उद्योग पर फोकस

ऐसे में जब भारतीय अमेरिकी होटल कारोबारी अमेरिका में अपनी जोरदार छाप छोड़ रहे हैं, उनसे भारत में भी आतिथ्य उद्योग में क्रांति लाने का अनुरोध किया जा रहा है

पब्लिक इनफार्मेशन इंफ्रास्ट्रक्चर एंड इनोवेशंस पर प्रधानमंत्री के सलाहकार सैम पित्रोदा ने अटलांटा में एशियन अमेरिकन होटल ओनर्स एसोसिएशन (एएएचओए) के सालाना सम्मेलन भारतीय अमेरिकी होटल कारोबारियों से अपील की कि वे भारत में मिड-सेगमेंट के आतिथ्य ढांचा उद्योग की सेहत सुधारने के लिए अपनी विशेषज्ञता का इस्तेमाल करें। पित्रोदा ने कहा, ''भारत में दूसरे और तीसरे दर्जे के शहरों में पेशेवराना ढंग से संचालित सस्ते होटलों की भारी मांग है। मुझे लगता है कि एएएचओए के सदस्य इस क्षेत्र को बदलने की क्षमता रखते हैं।''

उन्होंने कहा, ''अगर ३० करोड़ की आबादी वाले अमेरिका के पास ५० लाख होटल कमरे हो सकते हैं, एक अरब से अधिक आबादी वाले भारत में भी कम से कम इतने कमरे तो होने ही चाहिए।''

उन्होंने संगठन के सदस्यों से अपील की कि वे भारत में अपनी अमेरिकी फ्रेंचाइजी लाने की बजाए खुद का उपयुक्त ब्रांड सृजित कर सकते हैं। उन्होंने कहा, ''भारत बूम के दौर से गुजर रहा है और २५ साल से कम उम्र के उसके ५५ करोड़ लोग न सिर्फ दुनिया के लिए ताकतवर श्रमपूंजी हैं, बल्कि आतिथ्य उद्योग के लिए प्रमुख बाजार भी।''

पित्रोदा ने कहा कि मध्यवर्गीय भारतीयों के पास खर्च योग्य पूंजी बढ़ने से उनका भ्रमण शौक बढ़ गया है, पर उन्हें यात्रा के वक़्त ठहरने का उपयुक्त स्थान तलाशने में परेशानी होती है।

अहमदाबाद स्थित उद्यमी हिमांशु व्यास ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''मैं एएएचओए सदस्यों को इस उद्योग में निवेश के लिए प्रेरित करने की कोशिश करता रहा हूं। पित्रोदा ने सही कहा है कि पूरे देश को आतिथ्य उद्योग के कायाकल्प का इंतज़ार है।''

पब्लिक इनफार्मेशन इंफ्रास्ट्रक्चर एंड इनोवेशंस पर प्रधानमंत्री के सलाहकार सैम पित्रोदा।

फार्चून ५०० सूची में नूयी चौथे स्थान पर

पेप्सिको की भारतीय मूल की सीईओ इंद्रा नूयी उन १८ महिला हस्तियों में शामिल हैं जिन्होंने अमेरिका की शीर्षस्थ ५०० कंपनियों में से कुछ की बागडोर संभाल रखी है। फार्चून पत्रिका की ताजा रैंकिंग में यह कहा गया है। नूयी को इस शीर्ष अमेरिकी बिजनेस पत्रिका ने टॉप महिला एग्जीक्यूटिव की सूची में चौथे स्थान पर रखा है। पत्रिका लिखती है, ''नूयी ने हाल के वर्षों में सॉफ्ट ड्रिंक की जगह अपेक्षाकृत कम लाभदायी उत्पादों, मसलन स्वास्थ्यवर्धक उत्पादों, स्नैक फूड्स के बाजार पर ज्यादा फोकस किया है।''

इस सूची में, जिसमें पहले से कहीं अधिक महिलाओं ने जगह बनाई है, हियूलेट-पैकार्ड की मेग हिटमैन (१०वें नंबर पर) और आईबीएम की गिन्नी रोमेटी (१६वें) को भी शामिल किया गया है।

इस सूची में कृषि प्रसंस्करण कंपनी आर्चर डेनियल्स मिडलैंड की पैट्रिसिया वोएट्र्ज, क्राफ्ट फूड्स की इरेन रोजेनफील्ड, ज़ेरोक्स की सीईओ उर्सूला बर्न्स एवं एवन की शेरिलीन मैककॉय भी शामिल हैं।

रोमेटी आईबीएम की प्रथम महिला सीईओ सवं ज़ेरोक्स की मुख्य उर्सूला बर्न्स फार्चून-५०० सूची की किसी कंपनी का नेतृत्व करने वाली प्रथम अफ्रीकी अमेरिकी महिला हैं।

इंद्रा नूयी अमेरिका की ४७वीं सबसे बड़ी कंपनी का नेतृत्व करती हैं।

वैश्विक सूत्रधार

यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ फ्लोरिडा ने इन्फोसिस के संस्थापक एन.आर. नारायण मूर्ति को उनकी नेतृत्व क्षमता एवं अंतर्राष्ट्रीय कारोबार दुनिया में उनके योगदानों के लिए सम्मानित किया है

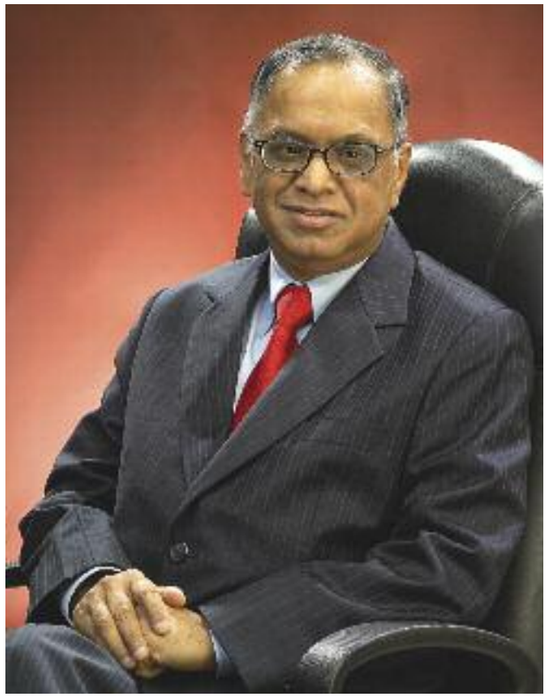

साउथ फ्लोरिडा यूनिवर्सिटी ने इन्फोसिस के संस्थापक एन.आर. नारायण मूर्ति को उनकी नेतृत्व क्षमता एवं अंतर्राष्ट्रीय कारोबार दुनिया में उनके योगदानों के लिए ग्लोबल लीडरशिप एंड फ्री इंटरप्राइज अवार्ड्स से सम्मानित किया है। हाल ही में मूर्ति को पटेल सेंटर फॉर ग्लोबल सस्टेनेबिलिटी में यह सम्मान प्रदान करते हुए यूएसएफ अध्यक्ष जूडी जेनशाफ्ट ने उनकी उद्यमिता भावना के लिए उनकी प्रशंसा की।

इससे पहले पुराने और वर्तमान छात्रों के साथ एक अनौपचारिक बातचीत में मूर्ति ने कहा कि उनकी मध्यवर्गीय पृष्ठभूमि होने के नाते उनकी कंपनी को अपने नैतिक मूल्यों को बचाए रखने में अधिक कठिनाई नहीं हुई।

उन्होंने कहा, ''आपमें त्याग की भावना होनी चाहिए। आपमें विश्वास भी भावना होनी चाहिए।''

मूर्ति ने बताया कि कैसे कंपनी की कार्य संस्कृति की जड़ आज भी कंपनी के छह सह-संस्थापकों की उस प्रथम बैठक की संवेदना से जुड़ी है, जो मुंबई में उनके घर में हुई थी।

मूर्ति ने 'आदर अर्जित करने', 'समाज के साथ तादात्म्य बनाए रखने' और 'जल्द से जल्द ग्राहक बदल लेने की हड़बड़ी से दूर रहने' की सलाह उन्हें दे। उन्होंने कहा कि अगर इन तीनों बातों का ख्याल रखा जाएगा तो निश्चित तौर पर 'राजस्व अर्जित होगा। आमदनी होगी।''

मूर्ति के राजनीति में प्रवेश की संभावना के बारे में पूछे गए एक सवाल के उत्तर में उन्होंने 'तार्किक बहस' की अपनी पसंदगी एवं इसे लेकर विश्व राजनीति की असहजता की चर्चा करते हुए राजनीति को लेकर थोड़ी हिचक जाहिर की। यूएसएफ इंफार्मेशन सिस्टम्स एंड डिसिजन साइंसेज डिपार्टमेंट के प्रमुख कौशल चारी ने इस मौके पर कहा कि छात्रों के लिए मूर्ति की कहानी बहुत प्रेरक है। चारी ने कहा, ''मूर्ति विश्वस्तरीय बिजनेस लीडर हैं।''

आपको त्याग एवं विश्वास की जरूरत है, मूर्ति ने कहा।

पर्यावरण संरक्षण के प्रेरणा पुरुष हैं कमल बावा

बावा का यह अनुदान सततता विकास को बढ़ावा देगा।

भारत में जन्मे प्रोफेसर कमल बावा ने दुनिया के प्रथम प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय सततता पुरस्कार के एवज में मिली एक मिलियन नार्वेजियन क्रोनर (करीब १० मिलियन रु.) राशि अपने द्वारा १९९६ में स्थापित भारतीय संगठन को दान दे दी है। यूनिवर्सिटी ऑफ मासाचूसेट्स, बोस्टन, में जीवविज्ञान के विशिष्ट प्रोफेसर बावा वर्ष २०१२ के लिए रॉयल नॉर्वेजियन सोसाइटी ऑफ साइंसेज एंड लेटर्स (डीकेएनवीएस) की ओर से गनरस सस्टेनेबिलिटी अवार्ड विजेता हैं।

उन्होंने यह पुरस्कार राशि बेंगलुरु स्थित अशोका ट्रस्ट फॉर रिसर्च इन इकोलॉजी एंड एनवायरमेंट (एटीआरईई), जो जैवविविधता संरक्षण एवं सतत विकास क्षेत्र का एक शोध संस्थान है, को दे दी है।

यह पुरस्कार ऐसे उत्कृष्ट वैज्ञानिक कार्य के लिया दिया जाता है जो वैश्विक स्तर पर सतत विकास को बढ़ावा देता हो। पहली बार यह पुरस्कार बावा को सेंट्रल अमेरिका, भारत के परिश्चमी घाटों और हिमालय में जैव विविधता संरक्षण कार्य के लिए दिया गया है।

बावा को हाल ही में प्रतिष्ठित अमेरिकन एकेडमी ऑफ आर्ट्स एंड साइंसेज के लिए चुना गया था। उन्हें यह पुरस्कार सततता केंद्रित लोक मंथन एवं नीति के क्षेत्र में योगदान के लिए दिया गया।

स्टाइलिश हुए रसोईघर

भारतीय घरों के रसोईघर तेजी से स्टाइलिश होते जा रहे हैं और यह बदलाव पारंपरिकता एवं आधुनिकता का मेल कहा जा सकता है

दक्षिण भारतीय घरों में अमूमन एक अलग-थलग कोने में सिमटे रहने वाले रसोईघरों की किस्मत अब तेजी से पलटने लगी है। जाने-माने भारतीय डिजाइनर वेंडेल रॉड्रिक्स, जो खाली समय में खान-पान शैली से जुड़े अपने जुनून को पूरा करने में व्यस्त रहते हैं, का मानना है कि अब इन रसोईघरों को एक खास तरह के रूहानी अहसास से लैस कर स्टाइलिश बनाने का चलन जोर पकड़ रहा है।

वे आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहते हैं, ''मैं लेखक देवदत्त पटनायक की राय से सहमत हूं जिन्होंने अपने एक आलेख 'द टॉकिंग थाली' में लिखा है कि किचन कई तरह से पवित्र स्थान है। किचन स्टाइल का मतलब किचन को सिर्फ तकनीकी सुविधाओं से लैस करना भर नहीं है। इस स्टाइल का मतलब है व्यावहारिकता में देशीयता एवं आधुनिकता का संतुलित पुट देना।''

हाल ही में भूटान में माउंटेन इकोज फेस्टिवल के मौके पर ताज ताशी होटल में 'स्टाइल इन द किचन' विषय पर व्याख्यान देने वाले रॉड्रिक्स ने कहा कि मैं उन लोगों के बीच किचन स्टाइलिंग के बारे में जागरूकता फैलाने की कोशिश कर रहा हूं जो चूल्हे के लिए ज्यादा वक्त निकालना चाहते हैं। मॉड्युलर किचन के चलन, नए इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के बढ़ते इस्तेमाल और रसोईघर के प्रारूप और खान-पान में पाश्चात्य अभिरुचि को शामिल किए जाने के कारण घर का यह उपेक्षित कोना अब आकर्षक डिजाइनर स्पेस बन गया है। पिछले कुछ वर्षों में शहरी इलाकों के घरों में यह सुरुचिपूर्ण आंतरिक सज्जा एवं प्रयोग का स्थल बन गया है। अधिक से अधिक शहरी भारतीय खान-पान शैली को आरामदेह एवं सहज बनाने के लिए डाइनिंग स्पेस के साथ प्रयोग करने लगे हैं। पर्यावरण के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण भी लोग ऑर्गेनिक किचन की ओर मुड़ने लगे हैं। रॉड्रिक्स कहते हैं कि साफ-सुथरी एवं स्वच्छ मेज़ स्टाइश किचन की शाश्वत खूबी रही है। वे कहते हैं, ''रसोईघर इसलिए भी अपेक्षित माने जाते रहे, क्योंकि इसे सिर्फ खाना पकाने का स्थान माना जाता था।''

रॉड्रिक्स कहते हैं, ''हमने रसोईघर को साज-सज्जा से भी लैस किया है। यहां कांसे के चमचमाते हुए गोवन बर्तन एवं पैन, प्याज और सॉस के लिए हैंगिंग रैक है, वहीं विशुद्धतम मिनरल वाटर में खाना पकाने की सुविधा को सुनिश्चित करने के लिए इससे एक फ्रेश स्प्रिंग वाटर वेल भी जुड़ा हुआ।''

घर में आकर्षक डिजाइनर स्पेस बन चुका किचन पिछले कुछ वर्षों में शहरी इलाकों के घरों में सुरुचिपूर्ण आंतरिक सज्जा एवं प्रयोग का स्थल बन गया है, यह कहना है भारतीय डिजाइनर वेंडेल रॉड्रिक्स (नीचे) का।

डिजाइनर मुझे पता नहीं कि मेरे जीवन में अगर रे नहीं होते तो मैं क्या होता। लेकिन, एक बात मैं यकीनन कह सकता हूं कि उनके बगैर मेरे कई सपने अधूरे रह जाते।''

डिजाइनर ने कहा कि रसोईघरों के जिन हिस्सों को स्टाइलिश बनाने की जरूरत है, वे हैं हाथ धोने, कूड़ा फेंकने, झरोखे और बल्ब वाले हिस्से। उन्होंने कहा, ''हमारे रसोईघर से एक लग्जरियस बरामदा लगा है, जो चावल धोने और सब्जी काटने के अनुभव को वाकई सुखद बनाता है।''

ऐसे स्टाइल में गहरी आस्था रखने वाले रॉड्रिक्स का कहना है, ''रेफ्रीजरेटर सॉस आदि जैसे तरह पदार्थों के परिरक्षण के लिए ही है।''

वे कहते हैं, ''किचन में ताजा फल एवं सब्जियां माहौल को जीवंत, इंद्रधनुषी बनाए रखने के लिए रखा जाता है। किचन के अंतिम छोर पर एक कंपोस्ट यूनिट है। मैंने इसे किचन के पास बनाए जाने का फैसला किया ताकि इस पर नजर रखा जा सके। हम कंपोस्ट के एक छोर पर हर्ब भी लगाते हैं।''

सचेत परवरिश

एकल परिवारों में बच्चों की परवरिश में विशेष सावधानी, विश्लेषण एवं जटिल मनोवैज्ञानिक उपचारों पर अमल किया जा रहा है, न्यूयार्क स्थित शेफाली साबरी का यह मानना है

अपना होमवर्क ठीक से करो, मेज़ पर जो भी परोसा जा रहा है उसे खाओ और शरारत मत करो। बच्चों की परवरिश आज इस तरह की डांट-फटकार एवं सख्त अनुशासन के पारंपरिक दायरे से बाहर निकल विशेष सावधानी, विश्लेषण एवं जटिल मनोवैज्ञानिक उपचारों जैसे मानकों को समाहित कर एक कला में तब्दील हो चुकी है। नए एकल परिवारों का मंत्र है स्वच्छंता एवं संवेदनशीलता, जहां बच्चों को छड़ी के खौफ़ से मुक्त होकर जीवन के टेढ़े-मेढ़े रास्ते से होकर अपनी पहचान खुद तलाशने का मौका मिलता है। यह कहना है न्यूयार्क स्थित चिकित्सीय मनोचिकित्सक एवं लेखिका शेफाली साबरी, जो दुनिया में सतर्क एवं सचेत परवरिश की अवधारणा को सशक्त बनाने के लिए परिवारों के साथ मिलकर काम करती हैं।

साबरी ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''सचेत परिवरिश की अवधारणा बच्चों के विकास की जिम्मेवारी माता-पिता पर डालती है और यह वाकई चुनौतीपूर्ण है। बच्चों को इंटरनेट की इस दुनिया में प्रभावित करने के लिए माता-पिता को अधिक जानकारी से लैस होने की जरूरत है।''

साबरी ने अपनी पुस्तक 'द कंसस पेरेंट : ट्रांसफार्मिंग आवरसेल्व्स, एंपावरिंग ऑवर चिल्ड्रेन' में माता-पिता-बच्चे के रिश्ते को परस्पर विकास के उस स्तर पर स्थापित करने की कोशिश की है, जहां माता-पिता बच्चे को 'यह सब जानना होगा' का निर्देश नहीं देते हों।

अभिनेत्री रवीना टंडन कहती हैं, ''परिवरिश का कोई एक अंतिम पुख्ता सूत्र नहीं है। मैं मां तब बनी जब मुझे मेरे बच्चे दिए गए। हम ऐसी कई बाते कहते हैं जो अनजाने ही हमारे बच्चों को आहत करती हैं।''

हाल ही में राजधानी दिल्ली में परवरिश पर एक सत्र के दौरान उन्होंने उस सीख का ज़िक्र किया जो उन्हें अपनी बेटी से मिली।

उन्होंने कहा, ''कुछ वर्ष पहले मैं अपना पसंदीदा सनग्लासेस दक्षिण अफ्रीका के एक होटल में छोड़ आया जहां मुझे इंडियन प्रीमियर लीग का एक मैच देखने के लिए आमंत्रित किया गया था। वापस लौटने के बाद मैंने होटल को फोन कर ग्लासेस के बारे में पूछा। फोन करते वक़्त जब मेरी तीन वर्षीया बेटी ने अवरोध पैदा किया तो मेरा गुस्सा भड़क उठा।'' इस पर मेरी बेटी ने संयमित आवाज़ में कहा, ''मॉम आप मेरा पिंक सिंड्रेला सन ग्लासेस ले सकती हैं।'' रवीना आगे कहती हैं, ''तब मैंने महसूस किया कि मैं आखिर कितना भौतिकवादी हुए जा रही थी। अपनी बेटी की मनःस्थिति के बारे में सोचकर मुझे खेद और पाश्चात्ताप हुआ। हमें निश्चित तौर पर अपने बच्चों के साथ यात्रा का भरपूर आनंद लेना लेना चाहिए।''

मनोचिकित्सक एवं रचनाकार शिवी दुआ, जिन्होंने पेंग्विन से सद्य प्रकाशित एक नई पुस्तक 'लेट गो मॉम ... आई विल बी फाइन' लिखी है, ने कहा, ''माता-पिता उस वक़्त लज्जित महसूस करते हैं जब बच्चे उनकी अपेक्षाओं की कसौटी पर खरे नहीं उतर पाते।''

दुआ ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''हाल में मेरा अनुभव भी कुछ ऐसा ही रहा, जब मुझे पता चला कि मेरी बेटी (जो किशोर वय की है) घर के आस-पास की दुनिया के बारे में नहीं जानती है। मैं उम्मीद करती थी कि वह अपने परिवेश के प्रति जवाबदेह हो। यह स्थापित सच है कि अक्सर हम अपनी और बच्चे की जरूरतों के बीच की संबंधहीनता से आवेश में आ जाते हैं।''

दुआ ने कहा, ''चीजें हमारे बचपन के समय से ही बदल जाती हैं और हमें यह समझना होता है कि हमारे बच्चे स्वतंत्र व स्वच्छ इंसान हैं।''

सामाजिक मुद्दों, बाल कल्याण एवं पारिवारिक मूल्यों के लिए अभियान चलाने वाले ओपनस्पेस जिंदल फाउंडेशन से संबद्ध शल्लू जिंदल का कहना, ''हमारी परवरिश दूसरे ढंग से हुई। हमें बताया गया था कि क्या करना है और क्या नहीं करना है। उन दिनों टेलीविजन या कंप्यूटर नहीं थे।''

(बायें) लेखिका शेफाली साबरी, जो बच्चों की परवरिश में स्वतंत्रता एवं संवेदनशीलता जैसे गुणों की वकालत करती हैं।

सिर्फ भुजिया भर नहीं...

राजपूती जागीरदारी व्यवस्था के सबसे पुराने गढ़ों में से एक बीकानेर ने पुराने ज़माने की अपनी संवेदनाओं और मूल्यों से समझौता किए बगैर खुद को समय के हिसाब से ढाला है, पूर्व राजकुमारी राज्यश्री कुमारी बीकानेर ने **मधुश्री चटर्जी** के साथ बातचीत में यह कहा

ऊबड-खाबड़ भूभाग वाले बीकानेर जिला, जिसे उसके प्रसिद्ध भुजिया ब्रांड नेम 'बीकानेरी भुजिया' के लिए जाना जाता है, समृद्धशाली ऐतिहासिक विरासत वाला इलाका है, जो इसे जयपुर के बाद राजस्थान का दूसरा सर्वाधिक लोकप्रिय पर्यटन केंद्र का रुतबा प्रदान करता है।

बीकानेर का आकर्षण इस तथ्य में छिपा है कि यह राजपूती जागीरदारी व्यवस्था के सबसे पुराने गढ़ों में से एक बीकानेर ने पुराने ज़माने की अपनी संवेदनाओं और मूल्यों से समझौता किए बगैर खुद को समय के हिसाब से ढाला है। यह मानना है पूर्व राजकुमारी राज्यश्री कुमार बीकानेर का, जिन्होंने अपनी नई पुस्तक 'द महाराजाज ऑफ बीकानेर' (अमारिलिस) में इस इलाके के इतिहास का अद्यतीकरण किया है।

भारतीय संघ में विलय के बाद बीकानेर एक समृद्ध कारोबार केंद्र में तब्दील हो गया, वहीं यहां के पूर्व शाही परिवार ने यहां की परंपराओं को अक्षुण्ण रखने में अभिभावक की भूमिका निभाना जारी रखा। यहां के सुव्यवस्थित अभिलेखागारों को विद्वानों के लिए खुला रखा गया है, वहीं मेहमानों एवं उन फिल्मनिर्माताओं के लिए यहां के महलों को खोला रखा गया है, जो यहां अपनी फिल्मों की शूटिंग के लिए उपयुक्त सेटिंग तलाशना चाहते हैं, पूर्व राजकुमारी ने यह कहा।

राज्यश्री कुमारी ने कहा, ''इस महल में मध्य १९५० के दशक में अपने लालन-पालन जुड़ी यादें आज भी जिंदा हैं, जहां तब भी हमारी दुनिया अक्षुण्ण थी। सबसे बड़ा झटका तब लगा जब प्रिवी पर्स खत्म कर दिया गया। जहां तक बीकानेर की बात है तो इस राशि का इस्तेमाल महल के कर्मचारियों पर होता था जो इसके संरक्षण में जुटे होते थे। यहां हमारे ऐसे कई स्टाफ थे। इस कदम के बाद हमारे पिता एवं दादा को इन कर्मचारियों की भूमिका की समीक्षा करनी पड़ी।''

पूर्व राजकुमारी ने कहा कि अपनी पूर्व रियासत पर किताब लिखने की उनकी योजना तब बाध्यता में तब्दील हो गयी जब कुछ वर्ष पहले वे घर बदल रही थी। वे कहती हैं, ''मैंने करीब २० साल पहले अपने पूर्वजों में से एक गंगा सिंह के कुछ पुराने

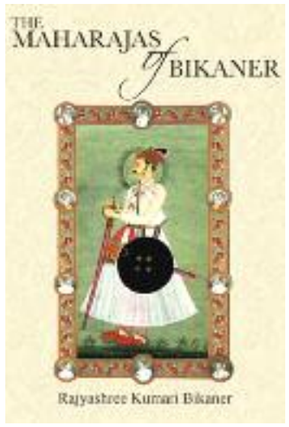

कर्मचारियों का साक्षात्कार लिया था, पर वह डायरी खो गई। जब मैं मकान बदल रही थी तो ये नोट्स मुझे मिल गए और मैंने इन्हें आधार बनाकर अपने परिवार की गाथा लिखने का फैसला किया। मेरे परिवार के इतिहास को अद्यतन बनाने की जरूरत थी।''

सरल और बोधगम्य शैली में लिखी गई इस पुस्तक में युद्ध, राजनीति, राजपूती साहस और रोजाना की शाही गतिविधियों का रोचक वर्णन है, जो पाठक को बांधे रहता है। इसके १२ अध्यायों में इस परिवार की २३ से अधिक पीढ़ियों के राजाओं की जीवनशैली एवं तत्कालीन घटनाओं का चित्रण लेखकीय दृष्टिकोण से किया गया है।

यह पुस्तक दुर्लभ ऐतिहासिक चित्रों से लैस है। किताब की शुरुआत १४६५ में राव बीका द्वारा मरूस्थलीय गांवों के विजय की गाथा से होती है। इसमें लेखिका के भाई नरेंद्र सिंह के समय तक के इतिहास को समेटा गया है।

उन्होंने कहा, ''मैं नहीं चाहती कि बीकानेर अपनी मौलिकता खो दे और किसी दूसरे शहर की तरह मेट्रो में तब्दील हो जाए। इसकी सबसे बड़ी ताकत में से एक है यहां की दुर्गमता – सिर्फ कठोर प्रवृत्ति के लोग ही यहां पहुंच सकते हैं और यही कारण है कि यह इलाका बेलगाम शहरीकरण की जद में नहीं आया है।''

वे आगे कहती हैं, ''मेरी राय में, जयपुर का इस कदर विस्तार हो रहा है कि इसकी मूल पहचान समाप्त हो जाने का खतरा है। हमें अपने इलाके की पहचान नहीं खोना है। हमें उन खूबियों को बचाए रखना है जो बीकानेर को राजपुताना का शाही भूभाग बनाती हैं।''

'भुजिया' की कहानी अलग है। पूर्व राजकुमारी का मानना है कि यह बीकानेर के कामकाजी वर्ग का सफल व्यावसायिक चेहरा है

बेस्ट सेलर

कथा साहित्य

1
कैलिको जो
लेखक : जॉन ग्रिशम
प्रकाशक : हॉडर
मूल्य : ३५० रु.

2
द सिन्स ऑफ द फादर
लेखक : जेफ्री आर्चर
प्रकाशक : पैन मैकमिलन
मूल्य : ३५० रु.

3
फिफ्थ शेड्स ऑफ ग्रे
लेखक : इ.एल जेम्स
प्रकाशक : एरो बुक्स
मूल्य : ३५० रु.

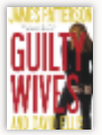

4
गिल्टी वाइव्स
लेखक : जेम्स पैटरसन
प्रकाशक : सेंचुरी
मूल्य : ४५० रु.

5
किल शॉट
लेखक : वाइस फ्लीन
प्रकाशक : सिमोन एंड स्कस्टर
मूल्य : ४६६ रु.

गैर कथा साहित्य

1
ब्रेकआउट नेशंस
लेखक : रुचिर शर्मा
प्रकाशक : पेंग्विन
मूल्य : ५६६ रु.

2
पाकिस्तान ऑन ब्रिंक
लेखक : अहमद राशिद
प्रकाशक : पेंग्विन
मूल्य : ३६६ रु.

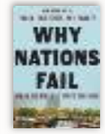

3 ह्वाई नेशंस फॉल
लेखक : डारोन एसमोगलू एंड जेम्स ए. रॉबिंसन
प्रकाशक : प्रोफाइल बुक्स
मूल्य : १,०४८ रु.

4
द मैजिक
लेखक : रोंडा बिर्ने
प्रकाशक : सिमोन एंड स्कस्टर
मूल्य : ३६६ रु.

5
बिहाइंड द ब्युटीफुल फॉरएवर्स
लेखक : कैथरीन बू
प्रकाशक : पेंग्विन
मूल्य : ४६६ रु.

स्रोत : बाहरीसन्स, डेल्ही, कैपिटल बुक डिपो, चंडीगढ़, स्पेल एंड बाउंड बुक्सशॉप एंड कैफे प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली

भारतीय ने एलविस को जीवंत किया!

जाने-माने भारतीय कलाकार जीवन जे. कांग (बायें तस्वीर में) ने 'किंग ऑफ रॉक 'एन' रॉल' एलविस प्रेस्ले को समर्पित एक नई कॉमिक पुस्तक को स्केच करने के लिए विख्यात सुपरहीरो क्रिएटर स्टैन ली के साथ गठजोड़ किया है। दुनिया के कुछ चर्चित सुपरहीरो किरदारों (स्पाइडर मैन, एक्स-मेन, फंटास्टिक फोर, आयरन मैन, डेयरडेविल, हल्क, थोर) की परिकल्पना करने वाले सह-सर्जक ली द्वारा लिखित इस नई लघु कथा को हाल ही में रिलीज किया गया।

एलविस प्रेस्ले की ३५वीं बरसी पर ली द्वारा इस कथा को प्रेस्ले को समर्पित मूलतः एक विशेष संग्रहनीय हार्डकवर पद्य संग्रह 'ग्राफिक एलविस' के हिस्से के तौर पर सृजित किया था, जिसकी सिर्फ २,५०० प्रतियां ही दुनिया भर में उपलब्ध कराई गई थी। यह चंद ऑनलाइन रिटेलरों एवं www.GraphicElvis.com पर उपलब्ध कराई गई थी। लॉस एंजिलिस स्थित लिक्विड कॉमिक्स ने अब 'फ्री कॉमिक बुक डे' के तहत स्टैन ली की गाथा 'एलविस' को लाखों लोगों के लिए निःशुल्क उपलब्ध कराया है। यह दिवस इस उद्योग की ओर से अमेरिका में ऐसे सबसे बड़े वार्षिक अवसर के तौर पर मनाया जाता है, जब लोगों को निःशुल्क कॉमिक पुस्तकें मुहैया कराई जाती हैं।

इस पुस्तक के अलावा, एक इंटरैक्टिव डिजिटल एवं मोबाइल ऐप 'ग्राफिक एलविस : द इंटरेक्टिव एक्सपीरिएंस' भी ५०० रुपये में उपलब्ध है। इसमें बोनस वीडियो, एनिमेशन एवं इंटरैक्टिव फीचर समेत 'ग्राफिक एलविस' की सभी अंतर्वस्तुओं को शामिल किया गया है। मूल चित्रणों के अलावा 'ग्राफिक एलविस' में ऐसे कई हस्तलिखित नोट एवं स्युजिंग शामिल हैं, जिन्हें पहली बार पेश किया जा रहा है। यह दुनिया भर में एलविस के चाहने वालों के लिए बेहद संग्रहनीय कहा जा सकता है। एलविस को अप्रत्याशित दृश्य शैलियों में प्रदर्शित करने के लिए इस उद्योग के कुछ और नामी ग्राफिक नोवल सृजनकर्ताओं की सेवा ली गई है। इनमें कांग, मुकेश सिंह, सौमिन पटेल एवं समित बासु शामिल हैं।

कांग को प्रसिद्ध आर्टवर्क 'स्पाइडर-मैन : इंडिया कॉमिक' विकसित करने का श्रेय जाता है। सर रिचर्ड ब्रानसन द्वार स्थापित लिक्विड कॉमिक्स, उनके वर्जिन ग्रुप, लेखक दीपक चोपड़ा, फिल्मकार शेखर कपूर एवं उद्यमी शरद देवराजन, सुरेश सीथारमन और गौतम चोपड़ा ने अपने भारतीय कामिक्स तैयार करने के लिए उन्हें साइन किया है।

उनके अन्य कॉमिक वर्क में 'द साधु' (वर्जिन कॉमिक्स, २००६) और 'सेवन ब्रदर्स' (जॉन वू के कॉन्सेप्ट पर आधारित, पांच-अकों की लघु श्रृंखला, वर्जिन कॉमिक्स, २००६) प्रमुखता से शामिल है।

'ग्राफिक एलविस' का एक पन्ना।

नए ज़माने के संग्राहक

वेजवुड कटलरी से लेकर मूरक्रॉफ्ट के ग्लास स्कल्पचर जैसे विविध उम्दा यूरोपीय एवं अमेरिकी 'आंतरिक सज्जा उत्पाद' भारत में अपना खास बाजार बना रहे हैं, **मधुश्री चटर्जी** का यह मानना है

खर्च योग्य आय में इजाफा, नायाब कला शैलियों के बढ़ते आकर्षण और बढ़ते सामाजिक संपर्क के कारण शहरी भारतीय परिवारों का झुकाव अमांडा ब्रिस्बेन, वेजवुड, रॉयल डाल्टन, मूरक्रॉफ्ट जैसे नामी ब्रिटिश ब्रांडों की उत्कृष्ट कलात्मक लाइफस्टाइल वस्तुओं की ओर बढ़ रहा है।

ब्रिटिश में रहने वाले भारतीय मूल के एक अग्रणी कला प्रोमोटर का कहना है कि अब यूरोप के अत्याधुनिक लाइफस्टाइल कला ब्रांड अपेक्षाकृत सस्ती दरों पर अपने इन उत्पादों को भारतीय बाजार में खपाकर स्वतंत्रता-पूर्व की भारतीय अर्थव्यवस्था के उस चलन की धारा को पलटने की कोशिश कर रहे हैं जब सस्ती भारतीय वस्तुएं यूरोप में कौड़ियों के भाव बिका करती थीं।

ब्रिटेन में डिजाइनर कलाकृतियों एवं मूर्तियों

(दक्षिणावर्त) दिल्ली में प्रदर्शित भारतीय रूपांकन से प्रेरित वेजवुड कटलरी, अमांडा ब्रिस्बेन द्वारा तैयार एक सी ड्रैगन स्कल्पचर एवं मूरक्रॉफ्ट की एक ग्लास आकृति।

के एक अग्रणी संग्राहक भारतीय मूल के सुनील सेठी आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहते हैं, ''भारतीय अर्थव्यवस्था विस्तार के दौर से गुजर रही है, इसलिए लोगों की रुचियां भी तेजी से बदल रही हैं। भारत के लोग ऐसे उत्पादों की खरीद में दिलेरी दिखा रहे हैं। हम इंग्लैंड से उच्च दर्जे की कला वस्तुएं भारत भेजते रहे हैं। कंपनियों को लगता है कि भारत कलाकृतियों के लिए एक हाई-एंड मार्केट है।''

सेठी कहते हैं, ''यूरोप से नायाब कला वस्तुओं का निर्यात अब आसान हो गया है, क्योंकि उत्पादक एवं कलाकार पहले की तरह विकासशील देशों में इन वस्तुओं की बिक्री को लेकर कोई शर्त नहीं थोपते। इसकी वजह है आर्थिक मंदी का दौर।''

कारपोरेट एवं निजी कला संग्राहकों को समकालीन कलाकृतियां उपलब्ध कराने वाली कंपनी इंटरआर्ट्स के संस्थापक सेठी ब्रिटेन के वेजवुड, रॉयल डॉल्टन, मूरक्राफ्ट, आर्थर प्राइस, पीपुल पोटरी, स्कैंडिनेविया के कोस्टाबोडा, पूर्वी यूरोप के स्वाजा, इटली के वर्सेस स्कल्पचर्स एवं अर्मानी, जर्मनी के रोजेनथल, स्पेन के लाड्रो, फेलिक्स वालेज ब्रॉन्ज स्कल्पचर्स, सियान ग्लास एवं फ्रांज पोर्सीलेन जैसे ब्रांडों को प्रोमोट करते हैं।

नई दिल्ली के बीकानेर हाउस में २७-२८ अप्रैल को इंटरआर्ट्स द्वारा आयोजित एक प्रदर्शनी में यूरोप एवं अमेरिका से आयातित १०० से अधिक प्रकार के डिजाइनर कला उत्पादों को प्रदर्शित किया गया।

अमांडा ब्रिस्बेन, विल शेक्सपीयर और रिचर्ड गोल्डिंग - जो शीशे के कला नमूने तैयार करने वाले सर्वश्रेष्ठ ब्रिटिश कलाकारों में गिने जाते हैं, के रंगीन ग्लास स्कल्पचर को समर्पित खंड लोगों के लिए आकर्षण का खास केंद्र था।

ब्रिस्बेन की खूबी है कीमती शेडेड ग्लास के सिंगल शीट में प्रकृति का चित्रण, वहीं शेक्सपीयर को क्रिस्टलाइन फायर ग्लास में अत्याधुनिक नायाब आकृतियां तैयार करने के लिए जाना जाता हैं। ओकरा ग्लास के संस्थापक गोल्डिंग को शीशे एवं धातु के फ्यूजन से उत्कृष्ट नमूने तैयार करने में महारत हासिल है। इन तीनों कलाकारों के

> भारत के लोग ऐसे उत्पादों की खरीद में दिलेरी दिखा रहे हैं। हम इंग्लैंड से उच्च दर्जे की कला वस्तुएं भारत भेजते रहे हैं। कंपनियों को लगता है कि भारत कलाकृतियों के लिए एक हाई-एंड मार्केट है।
>
> – सुनील सेठी
> संग्राहक

अलावा हॉट ग्लास आर्टिस्ट ईयान मैकडोनल्ड, कैमीओ ग्लास आर्टिस्ट हेलेन मिलर्ड, ग्लास रिवाइवलिस्ट एंड्रयू पॉटर, ग्लास डिजाइनर रेबेक्का मॉर्गन, इस्ले ऑफ वाइट ग्लास स्टूडियो एवं सिमोन मूर जैसे सधे हुए कलाकारों को ब्रिटेन के ग्लास आर्ट का नया चेहरा माना जा रहा है। ग्लास वर्क के क्षेत्र में ब्रिटेन का यह महत्वपूर्ण स्थान मध्यकाल के शुरू से ही वेनिस एवं मुरानो जैसी इतालवी ग्लास राजधानियों से इसके प्रगाढ़ रिश्ते का सबूत है।

(नीचे एवं दायें) नई दिल्ली में प्रदर्शित मूरक्रॉफ्ट के ग्लास स्कल्पचर।

वैसे, इतिहासकारों का कहना है कि कारीगरी के माध्यम के तौर पर शीशे का इस्तेमाल १,५०० ई.पू शुरू हुआ। चार वर्ष पहले अपनी पत्नी पूर्णिमा के साथ मिलकर इंटरआर्ट्स की स्थापना करने वाले सेठी कहते हैं, ''मैंने ग्लास का संग्रह १९९२ में शुरू किया। पहली ग्लास कलाकृति जो मैंने खरीदी, वह ओकरा ग्लास से थे। वर्षों से जारी यह संग्रह अब विशाल हो चुका था और मैंने इसे एक निर्यात प्लेटफार्म में तब्दील करने के लिए कलाकारों, ग्लास स्टूडियो और बड़े ग्लासवेयर श्रृंखलाओं के साथ गठजोड़ किया।' उन्होंने कहा कि जब हम भारत में नहीं होते हैं तो हमारी कंपनी इंटरनेट के माध्यम से भारतीय क्रेताओं के साथ कारोबार की संभावनाएं भी तलाशती है।

मंज़िल आस्ट्रेलिया

३१ मार्च, २०१२ तक की नौ महीनों की अवधि में ८,००० से अधिक भारतीयों ने आस्ट्रेलिया में पढ़ाई के लिए वीजा हेतु आवेदन किया।

ब्रिटेन का नुकसान आस्ट्रेलिया का लाभ है। ब्रिटेन के सख्त वीजा कानून भारतीय छात्रों को आस्ट्रेलिया की ओर रुख करने को प्रेरित कर रहे हैं। **पारितोष पराशर** की रिपोर्ट

इसे बाजी पलटना कहा जा सकता है। ब्रिटेन के हालिया सख्त वीजा कानून भारतीय छात्रों को आस्ट्रेलिया की ओर रुख करने को प्रेरित कर रहे हैं और भारत से ब्रिटेन में होने वाले दाखिलों में भारी गिरावट हुई है।

ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में भारत की ओर से छात्रों के दाखिलों में ३० फीसदी से अधिक की गिरावट दर्ज हो चुकी है, वहीं आस्ट्रेलिया के लिए ऐसे दाखिलों एवं वीजा की संख्या में तीन अंकों की वृद्धि दर्ज हो चुकी है।

आस्ट्रेलिया के लिए भारतीय छात्र वीजा आवेदनों की संख्या में पिछले नौ महीनों में शानदार १२० फीसदी की वृद्धि हो चुकी है, वहीं इस अवधि में वीजा स्वीकृति में भी शानदार करीब ८० फीसदी की वृद्धि हुई है।

खबर है कि यूनिवर्सिटीज यूके – ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों के लिए प्रतिनिधि संगठन– के अध्यक्ष एरिक थॉमस ने ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरन को लिखे पत्र में सावधान किया है कि आव्रजन कानूनों में सख्ती से देश को अकेले ट्यूशन फीस के रूप में ही पांच अरब पाउंड (८ अरब डालर) का नुकसान होगा।

इन कानूनी सख्ती से ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में भारतीय छात्रों की संख्या गिरने लगी है।

आस्ट्रेलिया के अलावा कनाडाई और यूरोपीय विश्वविद्यालय एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थान भी ब्रिटेन के अलावा दूसरे ठिकानों की ओर अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के रुख करने से लाभान्वित होने लगे हैं।

कुछ ऐसी स्थिति कुछ साल पहले आस्ट्रेलिया की थी, जब देश द्वारा कानूनी सख्ती के बाद आस्ट्रेलियाई शिक्षा प्रदाता संस्थानों की ओर से छात्रों ने मुंह मोड़ना शुरू कर दिया था।

अंतर्राष्ट्रीय छात्र प्रवाह के नंबर दो स्रोत रहे भारत से छात्रों के आगमन में गिरावट के बाद आस्ट्रेलियाई सरकार ने दाखिला एवं छात्र वीजा प्रक्रिया की समीक्षा का आदेश दिया था।

अन्य सिफारिशों में न्यू साउथ वेल्स के पूर्व मंत्री माइकल नाइट ने अपनी 'स्ट्रेटजिक रिव्यू ऑफ स्टूडेंट वीजा प्रोग्राम २०११' रिपोर्ट में अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए अध्ययन-बाद कार्य वीजा की सिफारिश पर बल दिया था।

दूसरी ओर ब्रिटिश अधिकारियों ने अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए पोस्ट स्टडी वर्क स्कीम समाप्त कर दिया है। कई अलोचक इसे ही छात्रों की संख्या में गिरावट की सबसे बड़ी वजह मानते हैं। भारतीय छात्रों व दूसरे देशों के छात्रों ने कार्य अधिकार समाप्त किए जाने के प्रावधान को नकारात्मक रूप से लिया है और इसकी पुष्टि भारत एवं दूसरे दक्षिण एशियाई देशों से छात्रों की संख्या में भारी गिरावट से होती है।

कैमरन की सरकार ने अधिकांश निजी कालेज छात्रों के लिए कार्य अधिकार समाप्त कर दिया है। अन्य छात्रों के लिए कार्य अधिकार को भी साप्ताहिक १० घंटा कर दिया गया है।

जादुई बांसुरी

भारतीय शास्त्रीय संगीत की महान हस्तियों में से एक पंडित हरिप्रसाद चौरसिया ने ब्रोक्लाव, क्राकोव और वारसा में पोलिश संगीत प्रेमियों को मुग्ध कर दिया। **सुरेंदर भुटानी** की रिपोर्ट

भारतीय कलाकारों के लिए पसंदीदा सांस्कृतिक ठिकाने के तौर पर पोलैंड की पहचान का लगातार सशक्त हो रही है। बॉलीवुड फिल्मों की बढ़ती पसंद एवं पोलिश भाषा में उर्दू लेखकों की रचनाओं के अनुवाद के बाद अब प्रख्यात बांसुरी वादक हरिप्रसाद चौरसिया के बांसुरी वादन से पोलैंड में कार्यक्रम पेश कर वहां भारत की उपस्थिति मजबूत की है। चौरसिया ने हाल ही में ब्रोक्लाव, क्राकोव और वारसा में पोलिस संगीत प्रेमियों को बांसुरी वादन से मुग्ध कर दिया। इस अनुभव को वे लंबे समय तक अपने दिल में निश्चित तौर पर संजोकर रखेंगे। चौरसिया खुद यहां के संगीत प्रेम से अभिभूत नज़र आये।

इन सभी स्थानों पर चौरसिया ने संगीत प्रेमियों का दिल जीत लिया। वारसा में इंडिया-पोलैंड कल्चरल कमिटी के अध्यक्ष जानुश्ज़ क्रिज़िजोव्स्की ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''वे अपनी बांसुरी से जादू पैदा करते हैं और उनकी प्रस्तुति मुग्ध कर देने वाली है। जीवन में एकाध बार ऐसा अवसर आता है और यह प्रस्तुति इतनी यादगार बन गई कि हम उसे लंबे समय तक भूल नहीं पायेंगे।''

इस कार्यक्रम का आयोजन पंडित चतुरलाल मेमोरियल सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) एवं भारतीय दूतावास के साथ संयुक्त सौजन्य में किया गया। चौरसिया को चतुरलाल म्युजिक फेस्टिवल के मौके पर पोलैंड में कार्यक्रम पेश करने के लिए बुलाया गया।

पंडित चतुर लाल को अपने समय में तबला का नामी उस्ताद माना जाता था, तब वे पंडित रविशंकर, उस्ताद अली अकबर खान और दूसरे नामी कलाकारों के साथ न सिर्फ भारत, बल्कि विदेशों में भी युगलबंदी करते थे।

महान वायलिन वादक येहुदी मेनूहिन ने चतुरलाल के बारे में एक बार कहा था, ''चतुरलाल संगीत के उन महान सूत्रधारों में से एक थे, जिन्होंने भारतीय संगीत के चाहने वाले की बड़ी वैश्विक जमात पैदा की। आज भी यह सिलसिला जारी है। वे जहां भी गए, लोगों के दिल पर राज किया।''

दुर्भाग्यवस, चतुरलाल अक्टूबर, १९६५ में महज ४० वर्ष की छोटी उम्र में दुनिया से विदा हो गए। उनकी मौत के बाद उनकी याद में एक स्मारक सोसायटी की स्थापना की गई जो उनके जन्मदिन पर मुख्य कार्यक्रम पेश करता है।

उनके ८६वें जन्मदिन पर पोलैंड में भारतीय संगीत के प्रेमियों ने 'स्मृतियां' नामक कार्यक्रम उनकी याद आयोजित किया।

इन शहरों में से प्रत्येक में स्थानीय निकाय ने कार्यक्रम का प्रायोजन किया। वारसा में इंडो-पोलिश चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (आईपीसीसीआई) ने जे.जे. सिंह के संरक्षण में इस कार्यक्रम का प्रायोजन किया। इसी तरह क्राकोव में इंडिया-पोलिश कल्चरल कमिटी (आईपीसी) ने कार्यक्रम का प्रायोजन किया।

आईपीसीसी की क्राकोव शाखा के अध्यक्ष उमेश नौटियाल ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''हम आईसीसीआर के आभारी हैं कि इसे पोलैंड की सांस्कृतिक राजधानी क्राकोव का चयन अपने एक कार्यक्रम के लिए किया है। शहरवासियों में भारतीय संगीत के प्रति प्यार जगजाहिर है और शास्त्रीय डांसर एवं संगीत पिछले १५ सालों से यहां आते रहे हैं। हमें चौरसिया के आने का बेसब्री से इंतज़ार था और उन्होंने हमें उपकृत कर दिया।'' जर्मनी से सटे होने के कारण तेजी से उभर रहे ब्रोक्लाव में भारतीय दूतावास एवं ब्रोक्लाव यूनिवर्सिटी के सौजन्य से कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह पहला मौका था जब शहर के लोगों को पंडित चौरसिया को सुनने का मौका मिला।

पोलैंड में भारत की राजदूत मोनिका कपिला मोहता ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''पोलैंड के लोगों का भारतीय कलाकारों का प्रति आकर्षक तेजी से बढ़ा है और अब कई नामी कलाकार पोलैंड आकर कार्यक्रम पेश करना चाहते हैं। लंदन के नेहरू सेंटर, जिसका मैं चार वर्षों तक निदेशक रही, की तरह यहां भी एक भारतीय सांस्कृतिक केंद्र होना चाहिए, जिससे भारतीय संस्कृति का आकर्षण और बढ़ेगा।''

पंडित हरिप्रसाद चौरसिया ने सालाना चतुरलाल म्युजिकल फेस्टिवल के मौके पर पोलैंड में तीन कार्यक्रम पेश किए।

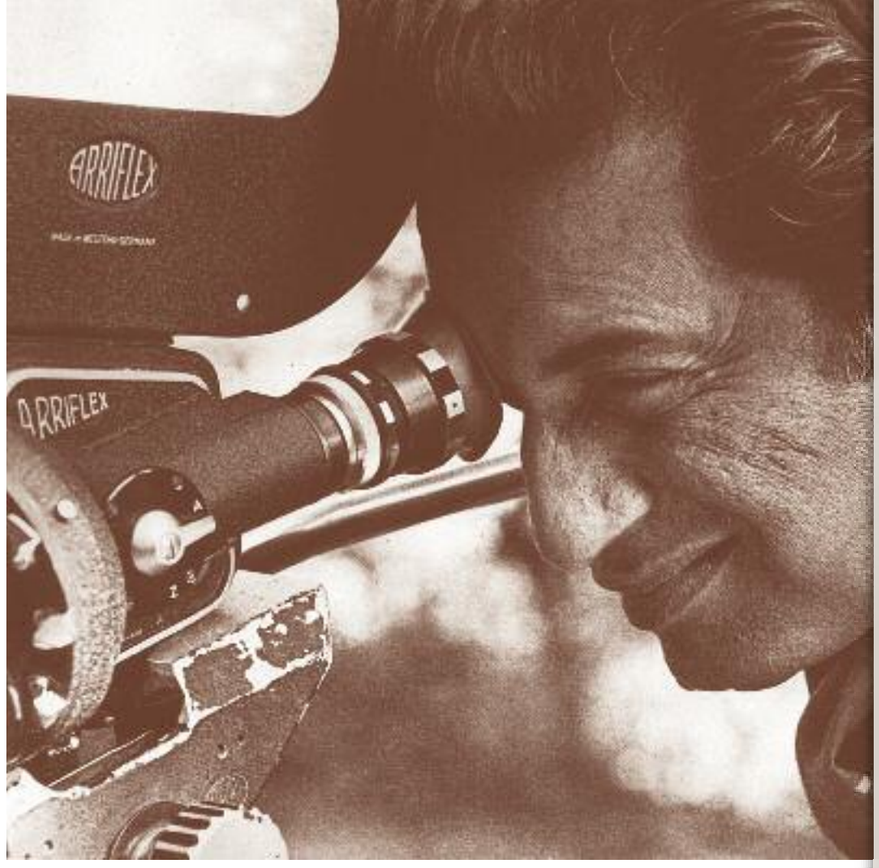

रे के कामरेड

शिखर सिने पुरुष सत्यजीत रे के साथ काम करने का मतलब क्या था, इस पर *अपुर संसार* के मुख्य अभिनेता *सौमित्र चटर्जी* ने प्रदीप्ता तपदार और सिरशेंदु पंथ से बातचीत में रोशनी डाली

अभिनेता और निर्देशक, व्यक्ति और उसका चिंतन, सौमित्र चटर्जी और सत्यजीत रे। एक अटूट रिश्ता, जिसने सिनेमाई रचनाधर्मिता के महानतम युगों में से एक को अभिव्यक्ति दी और जिसकी व्याख्या करते हुए सौमित्र चटर्जी आज भी यही कहते हैं कि रे उनमें 'आज भी ज़िंदा हैं', अपने निधन के २० वर्षों बाद भी!

सिनेमा के क्षेत्र में बेहद सराहनीय योगदान के लिए इस साल दादा साहब फाल्के पुरस्कार से नवाजे गए चटर्जी ने तीन दशकों से भी अधिक लंबे समय तक रे के साथ काम किया और उनके साथ मिलकर एक दर्जन से अधिक फिल्मी परियोजनाओं को पूरा किया। इस ऑस्कर विजेता के निधन के २० साल भी हमारा रिश्ता अटूट बना हुआ, यह कहना है चटर्जी का।

७७ वर्षीय चटर्जी कहते हैं, ''शुरू से ही हमारा रिश्ता कामरेडी था, एक ऐसा रिश्ता जो एक-दूसरे को बखूबी समझता और जानता था। मुझे पता नहीं कि मेरे जीवन में अगर रे नहीं होते तो मैं क्या होता। लेकिन, एक बात मैं यकीनन कह सकता हूं कि उनके बगैर मेरे कई सपने अधूरे रह जाते।''

इन दोनों के रिश्ते की तुलना अक्सर प्रसिद्ध अभिनेता-निर्देशक जोड़ी अकिरा कुरोसोवा-तोशिरो मिफ्यून और मार्सेलो मास्त्रोइआन्नि-फेडेरिको फेलिनी से की जाती है। फ्रांस सरकार की ओर से सर्वोच्च कला पुरस्कार 'ऑफिसियर डेस आर्ट एट मेटियर्स' से नवाजे जा चुके चटर्जी ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''अगर वे मेरी ज़िंदगी में नहीं होते तो मैं इतना नहीं सीख पाता। आज भी वे मेरे अंदर ज़िंदा हैं। आज भी वे मेरे लिए प्रेरणास्रोत हैं।''

चटर्जी ने कहा कि उन्होंने तब बॉलीवुड में काम करने के ऑफर को ठुकरा दिए थे, क्योंकि वे आजादी से काम नहीं कर पाते और न ही दूसरी साहित्यिक विधाओं में सफल हो पाते।

रे की कालजयी फिल्म अपुर संसार (अपु की दुनिया), जो १९५९ में अपु ट्रिलॉजी की तीसरी कड़ी थी, से अपने अभिनय करियर की शुरुआत करने वाले चटर्जी रे के प्रसिद्ध अभिनेता बन गए जिन्हें रे की सोनार केल्ला, जय बाबा फेलुनाथ, चारूलता, घरे बैरे, अशानी संकेत, देवी, अभिजान, अरण्यानेर दिन रात्रि और गणशत्रु जैसी यादगार फिल्मों में लीड रोल निभाने का मौका मिला।

भारत के सर्वश्रेष्ठ अभिनेताओं में शुमार चटर्जी ने प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक मृणाल सेन एवं तपन सिन्हा के साथ भी काम किया है।

(ऊपर) अभिनेत्री शर्मिला टैगोर के साथ सौमित्र चटर्जी, (सामने के पृष्ठ पर) निर्देशन में व्यस्त रे।

मुझे पता नहीं कि मेरे जीवन में अगर रे नहीं होते तो मैं क्या होता। लेकिन, एक बात मैं यकीनन कह सकता हूं कि उनके बगैर मेरे कई सपने अधूरे रह जाते।

– सौमित्र चटर्जी
अभिनेता

यूं तो वे रे को फिल्मी दुनिया में अपना आका मानते हैं, अभिनय की ओर चटर्जी को प्रेरित करने वाले शख्स से प्रसिद्ध थिएटर कर्मी शिशिर भंडारी।

उन्होंने कहा, ''यह सही है फिल्म अभिनय क्षेत्र में रे मेरे गुरू हैं। मैंने उनसे काफी कुछ सीखा है। लेकिन मैं शिशिर भंडारी के अभिनय से प्रेरित होकर इस कला की ओर मुड़ा था। उनके अभिनय को देखने के बाद ही मैंने फैसला किया कि मैं अभिनय ही करूंगा। जीवन के प्रति मेरे विचारों को भी उन्होंने दिशा दी।''

सेन – जिनके साथ उन्होंने आकाश कुसुम एवं प्रतिनिधि जैसी फिल्मों में काम किया – और रे की सिने कार्य तकनीकी में फर्क के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, ''दोनों के बीच काफी फर्क था। मृणाल सेन काफी बढ़िया लिखते थे, जिससे अभिनेताओं को काफी मदद मिलती थी।''

चटर्जी का मानना है कि बेहतर से बेहतर प्रदर्शन की उनकी भूख ने उन्हें बतौर अभिनेता परिपक्व होने में मदद दी और यही भूख उन्हें ७७ वर्ष की उम्र में भी काम करने को प्रेरित करती है। चटर्जी कहते हैं, ''मैं स्वभावतः विशुद्धतावादी हूं। अपने बचपन से ही मैं विशुद्धतावादी रहा हूं। मैं कभी संतुष्ट नहीं होता। यही असंतुष्टि मुझे अधिक से अधिक काम करने को प्रेरित करती है। मेरे लिए संतुष्टि शब्द अस्पष्ट है। यह तथ्य कि मुझे इतने लंबे समय तक काम करने का मौका मिला, मेरे लिए आश्वसनकारी है।''

वर्ष २००४ में उन्हें पद्म भूषण और २००८ में नेशनल अवार्ड दिया गया।

बहुमुखी प्रतिभा वाला यह अभिनेता अपनी सफलता का श्रेय नादिया जिले के कृष्णानगर के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को भी देता है, जहां उनका लालन-पालन हुआ।

रे के किरदार शोंकू पर बनेगी फिल्म

प्रोफेसर शोंकू (बायें) अपनी बिल्ली न्यूटन के साथ।

जल्द ही सत्यजीत रे के प्रशंसकों को उनके प्रसिद्ध किरदार प्रोफेसर शोंकू पर एक फिल्म देखने का दुर्लभ मौका मिलेगा।

२ मई को अपने पिता रे के ९२वें जन्मदिन के मौके पर उनके पुत्र संदीप रे ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''मैं प्रोफेसर शोंकू पर एक फिल्म बनाऊंगा। फिल्म, उसके सेट्स, स्पेशल इफेक्ट्स और ग्राफिक्स को लेकर बातचीत चल रही है। इस किरदार को कौन निभायेगा, यह फैसला होना अभी बाकी है।''

ऑस्कर पुरस्कार विजेता दिवंगत सत्यजीत रे के जन्मदिन के मौके पर 'गोपी गाइने बाघा बाइने' के एक कॉमिक किरदार गूपी गाइने पर एक पोर्टल भी लांच किया गया।

रे को श्रद्धांजलि देने के लिए कोलाकाता के बिशप लेफरॉय रोड स्थित उनके आवास पर कई हस्तियों का जमावड़ा हुआ।

इस मौके पर रे की पांच पसंदीदा विदेशी भाषा फिल्मों – बाइसिकिल थिव्स, राशोमॉन, मेट्रोपॉलिस, बैटलशिप पोटेमकिन और पैशन ऑफ जोन ऑफ आर्क – का प्रदर्शन नंदन थिएटर में हुआ।

अपने पिता का जन्मदिन मनाने के लिए संदीप रे ने वेस्टर्न क्लासिकल म्युजिक का प्रबंध किया। संदीप ने कहा, ''अपने जन्मदिन के मौके पर वे वेस्टर्न क्लासिकल म्युजिक सुनना नहीं भूलते थे।''

सब की लाड़ली

अभी ना जाना छोड़कर...
कि केक अभी कटा नहीं...
कि पेट अभी भरा नहीं...
(पार्टी छोड़कर अभी मत जाना, क्योंकि केक अभी कटा नहीं, पेट अभी भरा नहीं है), अपने १००वें जन्मदिन पर मनोरंजन दुनिया की 'लाड़ली' **जोहरा सहगल** केक पर छुरी चलाने से पहले इसी अंदाजा में गुनगुनाईं

उनका जन्म भारतीय सिनेमा के जन्म से भी एक साल पहले हुआ। फिल्म, थिएटर और टीवी शख्सियत जोहरा सहगल, जो २७ अप्रैल को १०० साल की हो गईं, मनोरंजन जगत की तरह ही जीवंत, रंगीन और मनोरंजक हैं।

अपने जन्मदिन पर अपनी पुत्री किरण सहगल द्वारा लिखित अपनी पहली आधिकारिक जीवनी 'जोहरा सहगल : फैटी' के विमोचन दौरान भी ज़िंदगी के प्रति उनका वही चिरपरिचित जीवंत नजरिया देखने को मिला। इसका विमोचन प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह की धर्मपत्नी गुरशरण कौर ने किया।

मनोरंजन जगत की नामी हस्तियों का भी मानना है कि ज़िंदगी के प्रति उनका सकारात्मक नजरिया, उनकी हाजिरजवाबी और जादुई आकर्षक, जो पीढ़ियों को प्रेरित करते रहे हैं, आज भी दुर्लभ है। वर्ष २००७ में अपनी फिल्म 'चीनी कम' में जोहरा सहगल को अमिताभ बच्चन की 'बिंदास मां' की भूमिका निभाने के लिए चुनने वाले फिल्मनिर्माता आर. बल्की कहते हैं, ''जितनी महिलाओं से मैं मिला हूं, उनमें वे सर्वाधिक जीवंत और अद्भुत महिला हैं। वे सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्रियों में से एक हैं।'' वे कहते हैं, ''उन्होंने यहां तक कि ४२ डिग्री तापमान में भी हमारे साथ पूरे हौंसले के साथ शूटिंग की। वे बिल्कुल तरोताजा लग रही थीं और गर्मी से बेपरवाह होकर शूटिंग और यहां तक कि डांसिग करती रहीं। वे वाकई बेजोड़ हैं।''

वर्ष २००८ में उन्हें संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनपीएफ)-लाडली मीडिया अवार्ड के तहत 'लाड़ली ऑफ द सेंचुरी' अवार्ड के लिए चुना गया और उन्होंने यह साबित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी कि वे इस पुरस्कार की सही हकदार थी।

मनोरंजन जगत के साथ उनका रिश्ता तब कायम हुआ जब १९३५ में उन्होंने उदय शंकर के साथ काम करना शुरू किया। १९४५ में उनका रिश्ता पृथ्वी थिएटर से जुड़ गया और वे नाट्य जगत की भी हिस्सा बन गईं। सहगल ने २० से अधिक फिल्मों में काम किया। उन्हें भाजी ऑन द बीच (१९९२), हम दिल दे चुके सनम, बेंट इट लाइक बेकहम (२००२), दिल से... (१९९८) और चीनी कम (२००७) जैसी फिल्मों में यादगार रोल के लिए खासतौर पर याद किया जाता है।

वर्ष १९९८ में उन्हें देश के सर्वोच्च पुरस्कारों में से एक पद्मश्री से नवाजा गया। इसके बाद २००१ में उन्हें कालिदास सम्मान, २००४ में संगीत नाटक एकेडमी पुरस्कार मिला। वर्ष २०१० में उन्हें पद्म विभूषण दिया गया। भूमिका छोटी हो या बड़ी, जोहरा आज भी मुस्कान बिखेर रही हैं

मुंबई और मंटो

महज ४३ साल की अपनी छोटी ज़िंदगी में मंटो अपने पीछे जो साहित्यिक विरासत छोड़ गए, उसे उर्दू अदब के सर्वाधिक गंभीर और लोकप्रिय अवदानों में से एक माना जाता है, **क़ैद नाजमी** का यह मानना है

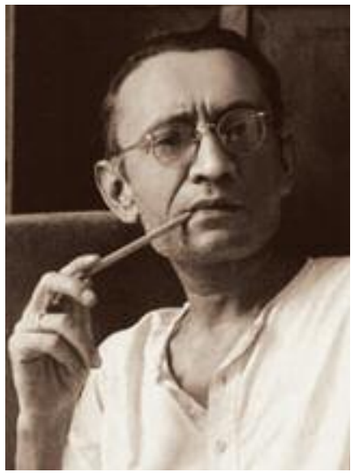

उनकी विचारोत्तेजक कहानियों में यह शहर बार-बार झांकता है। यहां तक उन्होंने इसके प्रसिद्ध फिल्मोद्योग के लिए भी पटकथाएं लिखीं और कुछ फिल्मों में भूमिका भी निभाई। अब सआदत हसन मंटो के जन्म के १०० साल बाद मुंबई ने उस ज़माने को याद किया जिसे उर्दू के इस प्रख्यात लेखक ने इस शहर में जिया था।

११ मई, १९१२ को पंजाब के समराला में जन्मे मंटो १९४० के दशक में मुंबई आये और यहां वे चार-पांच साल रहे। यूं तो उसके बारे में आधिकारिक तौर पर अधिक जानकारी नहीं है, उनकी लेखन यात्रा उनके मुंबई प्रवास के बारे में जरूर जानकारी उपलब्ध कराती है। वे दक्षिण-मध्य मुंबई के नागपाड़ा इलाके के बाइकुल्ला मोहल्ले में ग्रांट रोड की एक छोटी सी अंधेर इमारत में रहती थे।

वरिष्ठ फिल्म पत्रकार, शोधकर्ता और लेखक रफीक बगदादी कहते हैं, ''उर्दू साहित्य में मंटो का योगदान अति सराहनीय है।''

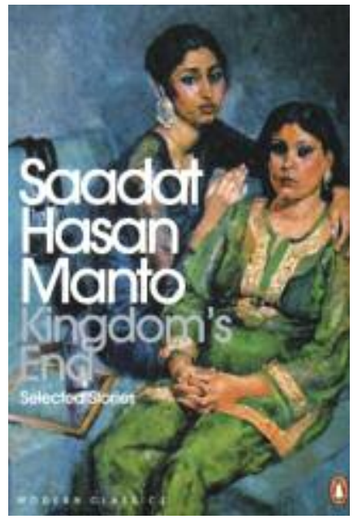

उर्दू मरकज़ के जुबैर अंसारी कहते हैं, ''यह ख्यातनामा लेखक अपनी जन्म सदी पर भरपूर श्रद्धांजलि का हकदार है।'' महज ४३ साल की अपनी छोटी ज़िंदगी में मंटो अपने पीछे जो साहित्यिक विरासत छोड़ गए, उसे उर्दू अदब के सर्वाधिक गंभीर और लोकप्रिय अवदानों में से एक माना जाता है। दो दशकों से भी छोटे अपने पेशेवर करियर में बतौर लघु कहानीकार, फिल्म एवं रेडियो पटकथा लेखक और पत्रकार मंटो अपने पीछे २२ लघु कहानी संग्रह, एक उपन्यास, पांच रेडियो नाटक संग्रह, पांच निबंध संग्रह और निजी रेखाचित्रों के दो संग्रह छोड़ गए।

'बू', 'खोल दो', ठंडा गोश्त और उनकी कालजयी कहानी 'टोबा टेक सिंह' उन्हें साहित्य के शिखर पर स्थापित करती हैं।

नूरजहां के जीवनीपरक स्केच में मंटो लिखते हैं, ''मुझे लगता है कि मैं मुंबई ७ अगस्त, १९४० को आया और शौकत (सईद शौकत हसन रिज़वी) के साथ मेरी पहली मुलाकात क्लेयर रोड स्थित १७ अडेल्फी चैंबर्स में हुई। यह उनका आवास और कार्यालय दोनों था।''

उनकी लोकप्रिय कहानी 'ए क्वेश्चन ऑफ ऑनर' शहर के उन स्थलों के बारे में गहन जानकारी देती है, जिनसे उनका रिश्ता था। यह उनके प्रवास स्थलों, खान-पान, यात्राओं आदि की भी जानकारी देती है। इसमें मंटो मुंबई की प्रसिद्ध अरब गली की चर्चा भी है। वे लिखते हैं, ''इस इलाके की एक और गली का नाम अरब गली है, जहां २०-२५ व्यापारी अरबी परिवार रहते थे। ये परिवार मोतियों के कारोबार करते थे। अन्य परिवारों में पंजाबी और रामपुरिया थे। मैंने अरब गली में एक कमरा किराये पर ले रखा था, जो इतना अंधेरा था कि हमेशा बत्ती जलाकर रखना पड़ता था। इसका मासिक किराया नौ रुपया आठ अना था।''

शुरुआती संघर्ष के बावजूद मंटो इस मामले में सौभाग्यशाली थे कि उस ज़माने के फिल्म स्टूडियो ने किस्सागोई की उनकी प्रतिभा को तुरंत पहचान लिया था और उन्होंने कई फिल्मों की पटकथाएं लिखीं। इनमें कीचड़, अपनी नगरिया, बेगम, नौकर, चल चल रे नौजवान, घमंडी, बेली, मुझे पापी कहो, दूसरी कोठी, शिकार, आठ दिन, आगोश और मिर्ज़ा ग़ालिब फिल्म प्रमुखता से शामिल हैं।

उन्होंने एट डेज और चल चल रे नौजवान जैसी कुछ फिल्मों में भी भूमिका निभाई।

२०वीं सदी के सर्वश्रेष्ठ अफसानानिगारों में शुमार मंटो सर्वाधिक विवादास्पद लेखक बने रहे। उन दिनों भारत और पाकिस्तान के समाज के लिहाज से निषिद्ध और वर्जित समझे जाने वाले कई विषयों पर उन्होंने पूरी बेबाकी और दिलेरी से कलम चलाई। मंटो को जितनी बदनामी मिली, उतना ही सम्मान भी और अक्सर उनकी तुलना ब्रिटिश साहित्यकार डी.एच. लारेंस से की जाती है।

मंटो ने पूर्व-औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक उपमहाद्वीप की विषम सामाजिक-आर्थिक स्थितियों, अन्याय के खिलाफ जमकर कलम चलाई। उन्होंने प्यार, सेक्स, कौटुंभिक व्यभिचार, वेश्यावृत्ति, अंधविश्वास, पाखंड, पुरुष आधिपत्य जैसे विवादास्पद विषयों पर कलम चलाकर समाज की तल्ख सचाइयों से मुठभेड़ की।

पाकिस्तान के लाहौर में १८ जनवरी, १९५५ को उनका निधन हो गया। उनके निधन से जो खालीपन पैदा हुआ है, उसे भरना आज भी कठिन है

बेकल

अगला ठिकाना

कोवलम, कुमारकोम, वयानाड और थेक्कडी के बाद केरल सरकार ने पुरातन और खूबसूरत बेकल शहर को वैश्विक पर्यटन मंच पर स्थापित करने का लक्ष्य रखा है, **अरविंद पद्मनाभन** की रिपोर्ट

कोवलम एवं कुमारकोम जैसे स्थलों को विश्व पर्यटन मंच पर स्थापित करने के बाद केरल सरकार ने खूबसूरत किनारों एवं जलाराशियों के शहर बेकल को 'ईश्वर की अपनी धरती' कहे जाने वाले केरल में सैलानियों के लिए अगला ठिकाना बनाने का फैसला किया है।

इस सुंदर शहर में हाल ही में ऐतिहासिक बेकल फोर्ट, जिसे पुर्तगालियों ने १६४० में बनवाया था और जो ४० एकड़ जमीन में फैला है, के नजदीक 'बेकल को जानें' नामक पर्यटन मुहिम का शुभारंभ हुआ।

राज्य के मुख्यमंत्री ऊमेन चैंडी ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''बेकल राज्य में सैलानियों के लिए अगला ठिकाना है। १७ साल पहले हमारा जो प्रयास शुरू हुआ था, अब वह रंग दिखाने लगा है। हमारी प्राथमिकता है रेल, सड़क और वायु संपर्क को सुधारना।''

गोवा जैसा दिखने वाले इस शहर में विविध विकल्पों की उपलब्धता की चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री ने पूछा, ''कुछ ही किलोमीटर के दायरे में आपको समुद्री बीच और पहाड़ियां एक साथ किन शहरों मिल सकती है?''

उन्होंने बताया, ''पिछले साल बेकल में करीब ३.२ लाख पर्यटक आये। हम चाहते हैं कि २०१५ तक यह संख्या ६ लाख से अधिक हो जाए।''

उन्होंने यह भी कहा कि यह शहर सतत एवं जिम्मेवार पर्यटन मुहिम के दायरे में कोवलम, कुमारकोम, वयानाड और थेक्कडी के बाद आने वाला पांचवां शहर है।

उत्तरी केरल में कासरगौड से १० किलोमीटर से भी कम फासला पर नेशनल हाइवे १७ पर स्थित बेकल रेल संपर्क से बेहतर तरीके से लैस है। रेल सुविधा यहां से महज आठ किलोमीटर की दूरी पर ही है। सबसे नजदीकी हवाई अड्डा है कर्नाटक का मंगलौर हवाई अड्डा, जो यहां ७० किलोमीटर दूर है।

रेलवे स्टेशन, नेशनल हाइवे की दशा सुधारने एवं एक हवाई पट्टी बनाने के लिए केंद्र सरकार से बातचीत चल रही है। रिसोर्टों को विकसित करने के लिए २३० एकड़ जमीन की जरूरत थी और इसका एक हिस्सा छह निजी परियोजनाओं के लिए आवंटित किया गया है।

केरल टूरिज्म के निदेशक रानी जॉर्ज ने आईएएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ''इस इलाके की करीब ५० आवासीय सुविधाओं में करीब १,००० कमरे हैं। यहां होम-स्टे विल्ला एवं आयुर्वेदिक केंद्र भी है। आवासीय सुविधाओं का और विकास किया जाना है और हम सस्ते होटलों में निवेशकों की ओर से निवेश का भरपूर स्वागत करेंगे।''

बेकाल और उसके आस-पास के मुख्य आकर्षणों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि न सिर्फ बेकाल फोर्ट, बल्कि होसबर्ग एवं चंद्रगिरी भी प्रमुख आकर्षण हैं। उन्होंने कहा, ''यहां कई खूबसूरत बीच, जलाशय और हिल स्टेशन हैं।''

प्राचीन मंदिर, मस्जिद, सजावटी लैंप, बर्तन जैसे हस्तशिल्प उत्पाद, थेय्यम नृत्य, कलारीपयट्टु मार्शल आर्ट आदि यहां अन्य आकर्षण हैं।

अधिकांश दूसरे मौजूदा रिसॉर्ट ठिकाने शहरी केंद्रों से सटे हैं और इसलिए वहां विकास की गुंजाइश कम रह गई है। दूसरी ओर, बेकल में समुचित विकास होना है और इसके सौंदर्य को अभी और निखारा जा सकता है।

ट्रेवल टिप्स

नेशनल हाइवे १७ पर स्थित बेकल उत्तरी केरल के कासरगौड से १० किलोमीटर से भी कम दूरी पर स्थित है, जहां रेलमार्ग से आसानी से पहुंचा जा सकता है। सर्वाधिक नजदीकी हवाई अड्डा कनार्टक का मंगलौर है, जो ७० किलोमीटर की दूरी पर है। पिछले साल ३.२ लाख से अधिक पर्यटक बेकल आये।

जीवन के लिए आहार

‘रसोईघर में कोई गोपनीयता नहीं’, यही है सेलेब्रिटी शेफ विकास खन्ना (ऊपर) का मूल मंत्र, जिनका खास व्यंजन *गोबी का पकोड़ा* हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को परोसा गया था। **मधुश्री चटर्जी** की रिपोर्ट

अमेरिका स्थित सेलेब्रिटी लेखक-शेफ विकास खन्ना, जिनका सिग्नेचर डिश ‘ट्री ऑफ लाइफ’ – एक तरह का गोबी का पकोड़ा – हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को परोसा गया था, इस अवधारणा के सशक्त पैरोकार हैं कि ‘रसोईघर में कुछ भी गोपनीय नहीं रखा जाना चाहिए।’

खन्ना ने आईएएनएनएस से बातचीत करते हुए कहा, ‘‘खान-पान की जानकारियों को चारदीवारी में जकड़ा नहीं जाना चाहिए। किचन में कोई गोपनीयता नहीं होनी चाहिए। अगर मेरी दादी मां ने अपनी यह जानकारी मुझसे छिपाकर रखा होता तो आज मैं शेफ नहीं होता।’’

उन्होंने कहा, ‘‘ट्री ऑफ लाइफ गोबी का पकोड़ा का ही एक रूप है, जिसे कुरकुरा बनाने के लिए चावल के आटे में मिलाकर फ्राई किया जाता है। इसे मसालों के साथ मिलाकर रोस्टेड टमाटर चटनी के साथ परोसा जाता है।’’

इस डिश, जो सफेद चाइना थाल में अनार के दानों एवं पुदीना के पत्तों के साथ सजाकर परोसा जाता है, ‘ट्री ऑफ लाइफ’ के नाम से जाना जाता है। दिल्ली में इसे प्रदर्शित करते हुए इसके नाम के पीछे की अवधारणा पर रोशनी डालते हुए उन्होंने कहा कि गोबी के संपूर्ण साबूत फूल, जो कि पेड़ की तरह दिखता है, को जड़ से काटकर अलग कर इसे पकोड़े में तब्दील किया जाता है।

न्यूयार्क में खन्ना के रेस्तरां ‘जुनून’ को ‘द ट्री ऑफ लाइफ’ के थीम पर ही विकसित किया गया है।

खन्ना पिछले तीन सालों से ‘फ्लेवर्स फर्स्ट’ कुकबुक पर काम कर रहे थे। उन्होंने बताया कि यह पुस्तक भारत से उनकी अमेरिका यात्रा पर केंद्रित एक डायरी की तरह है, जो व्यंजनों की दुनिया पर गहरा प्रकाश डालती है। उन्होंने कहा कि अपनी किताब के लिए उन्होंने जिन व्यंजनों का चुनाव किया, वे पश्चिम में भारतीय खान-पान के बारे में नई समझ पैदा करते हैं। और साथ ही यह भारतीय रसोईघरों के बारे में भी नई रोशनी डालते जहां महिलाओं का एकछत्र राज है। इसमें उन व्यंजनों की भी चर्चा है जिनके बारे में खन्ना ने दुनिया भर के रसोइयों के साथ अपने मोल-जोल के दौरान जाना।

यह पुस्तक कई खंडों में विभाजित है, जो भारतीय रसोइघरों के परिचय, मसालों, स्टार्टर, चावल, फलिया, रोटी, सूप, सलाद, सब्जियों, पॉल्ट्री, गोश्त, समुद्री खाद्य, डेजर्ट और ड्रिंक आदि के बारे में विस्तृत रोशनी डालते हैं। उन्होंने कहा, ‘‘मैं खाद्य के वैश्विक थीम को प्रचारित करना चाहता हूं। उदाहरण के लिए दालचीनी की तीन प्रजातियां हैं – अमेरिकी, भारतीय एवं इंडोनेशियाई।’’

खन्ना ने अपनी नई पुस्तक ‘हॉली किचन’, जो हिमालयी व्यंजनों पर केंद्रित है, भी तैयार कर ली है। वे कहते हैं, ‘‘मैं खान-पान की जानकारियों के आदान-प्रदान, एक साथ बैठकर रोटी खाने और खान-पान के जरिए रिश्तों को सशक्त बनाने की अवधारणा से प्रेरित हूं।’’

‘फ्लेवर्स फर्स्ट’

खान-पान के शौकीनों एवं कुकिंग में दिलचस्पी रखने वालों के लिए **विकास खन्ना** द्वारा कुछ व्यंजन पेश किए जा रहे हैं

चाई-इनफ्यूज्ड एंपेरर्स ग्रीन राइस

संघटक : १ कप एंपेरर्स ग्रीन राइस, २ चम्मच गैर-नमकीन बटर, ४ तेजपाता, ४ सफेद लौंग, तीन इंच लंबे दालचीनी के टुकड़े, ६ इलायची की फलिया, अदरख का दो इंच लंबा एक टुकड़ा (छिला और बारीक किया हुआ) और डेढ़ कप पानी।

दार्जीलिंग टी बैग या कड़क ब्लैक टी बैग्स (पेपल टैग हटा दें), एक चम्मच नमक और आधा कप कटे हुए ताजा धनिया पत्तों की भी जरूरत पड़ेगी।

प्रक्रिया : चावल को ठंडे पानी में ठीक से रगड़कर धो लें और फिर पानी को बहा दें। इसके बाद चावल को ठंडे पानी में ३० मिनट तक भिंगोये। फिर ओवन पर एक मध्यम आकार के बर्तन, जिसमें ढक्कन भी हो, को ३५० फारेनहाइट तापमान पर गर्म करें। मध्यम आंच पर बटर को गर्म करें।

इसमें धनिया के पत्तों, लौंग, दालचीनी, इलायची और अदरख को मिला दें। दो मिनट तक इसके तब तक हिलाकर भुने जब तक खुशबू न आने लगे। इसके बाद इसमें चावल मिला दें और कुछ मिनटों इसे तब तक पकायें जब तक चावल एवं मसाले आपस में अच्छी तरह मिल नहीं जायें। इसके बाद इसमें पानी, टी बैग एवं नमक मिलायें और फिर इसे उबलने दें।

१२-१५ मिनट तक तब तक इसे पकायें जब तक अंदर को पानी भाप बनकर उड़ नहीं जाये। टी बैग को इतनी सावधानी से बाहर निकाले कि ये फटे नहीं। फिर इसे फोर्क से मिलायें और धनिया पत्तों से सजाकर इसका लुत्फ उठायें।

मसाला हनी कॉर्निश हेन्स

संघटक : ४ एक-एक पौंड की कॉर्निश मुर्गियां, जिन्हें ठीक से धो दिया गया हो, १/२ चम्मच नमक, २ चम्मच सोया सॉस, २ नींबू जूस, १/४ कप लैवेंडर पाउडर पिसा हुआ, सजाने के लिए टहनियां एवं १/४ कप जैतून तेल।

प्रक्रिया : ओवन को ४०० डिग्री फॉरेनहाइट पर गर्म करें। मुर्गियों में नमक मिला दें और इन्हें १० मिनट के लिए हटाकर रखें। एक मंझोले बर्तन में शहद, सॉया सॉस, लेमन जूस, गरम मसाला और लैवेंडर के फूल मिलायें।

मुर्गियों को मेरिनेड के साथ रगड़ें। मध्यम उच्च तापमान पर तेल को गर्म करें और मुर्गियों को सभी तरफ से झुलसा दें ताकि तेल अंदर आसानी से अवशोषित हो सके। इसके बाद मुर्गियों को रोस्टिंग पैन में डालकर तब तक इन्हें भुनें। इसके बाद मुर्गियों की रान में थर्मामीटर घुसाकर तब तब तापमान लें जब तक रीडिंग १६५ डिग्री फॉरेनहाइट पर न पहुंच जाये। थाल में डालकर इसे लैवेंडर की डालियों से सजाकर परोसें।

फ्रेंच ब्रेकफास्ट रेडिशेज विद मस्टर्ड ड्रेसिंग (लाल-मूली एवं मूंगफली चाट)

संघटक : १ चम्मच जैतून तेल, १/४ चम्मच जीरा, १/४ चम्मच काला सरसों दाना, १ कटा हुआ छोटा लाल प्याज, १/४ चम्मच हल्दी, १/२ चम्मच नमक, २ कप कटे हुए फ्रेंच ब्रेकफास्ट रेडिश (मूली), १ चम्मच नींबू जूस, १ कप रोस्टेड मूंगफली और एक चम्मच कटे हुए धनिया पत्ते।

प्रक्रिया : एक छोटे सॉसपैन में तेल को गर्म करें। फिर इसमें जीरा एवं सरसों के दाने डालें। पैन को तब तक ढंककर रखें जब तक दानें फूटने न लगे। इसके बाद इसमें प्याज, हल्दी, नमक डालकर इसे पकायें। पैन को आंच से दूर करके पकायें। इस मसाले को किसी कटोरे रखें। मूली को किसी कटोरे में डालें और इसमें नींबू का रस डालें। फिर इसे मूली एवं धनिया पत्ते के साथ परोसें।

मस्टर्ड ड्रेसिंग के साथ फ्रेंच ब्रेकफास्ट रेडिशेज।

आईसीजे के जज नियुक्त हुए भंडारी

भारतीय सर्वोच्च न्यायालय के जज न्यायमूर्ति दलवीर भंडारी को इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस (आईसीजे) में जज नियुक्त किया गया है। पिछले दो दशकों में यह पहला मौका है जब किसी भारतीय को यह गौरव हासिल हुआ।

भंडारी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में इस पद के लिए हुए मतदान कुल १२२ मत हासिल किए, जबकि उनके फिलीपीनो प्रतिद्वन्द्वी को ५८ मत ही मिले। साथ ही न्यूयार्क स्थित संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में एक साथ हुए चुनावों में उन्होंने सुरक्षा परिषद में भी पूर्ण बहुमत हासिल कर लिया। संयुक्त राष्ट्र के इस प्राथमिक न्यायिक निकाय के चुनाव में भंडारी का मुकाबला फिलीपीन्स के जस्टिस फ्लोरेंटिनो के साथ हुआ। भंडारी ने जॉर्डन के अवान शाकत अल-खासावनेह की जगह ली है, जिन्होंने २०११ के अंत में एशिया-प्रशांत क्षेत्र सीट से इस्तीफा दे दिया था।

न्यायमूर्ति दलवीर भंडारी

उनके उत्कृष्ट योगदानों को देखते हुए शिकागो स्थित नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ लॉ ने उन्हें अपनी १५०वीं वर्षगांठ (१८५६-२००६) के मौके पर अपने १६ अति विशिष्ट पुराने छात्रों की सूची में शामिल किया है।

राजू को ह्वाइट हाउस अवार्ड

मनु राजू

भारतीय अमेरिकी पत्रकार मनु राजू २०१२ के लिए 'ह्वाइट हाउस कारेसपोंडेंट्स जर्नलिज्म अवार्ड' विजेताओं की सूची में शामिल हैं।

राजू और पोलिटको के उनके सहयोगी पत्रकार ग्लेन थ्रश, कैरी बुडोफ ब्राउन और जॉन ब्रेस्नाहैन को 'मेरिमैन स्मिथ अवार्ड फॉर एक्सीलेंस इन प्रेजिडेंशियल कवरेज अंडर प्रेशर' विजेता घोषित किया गया।

सिंह को पेंटागन में पद मिला

भारतीय मूल के विक्रम जे. सिंह को पेंटागन में दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया मामलों से जुड़ा एक अहम पद मिला है। उन्हें सीनियर एग्जीक्यूटिव सर्विस नियुक्त किया गया है और अवर रक्षामंत्री (नीति) कार्यालय में दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया का उप सहायक रक्षामंत्री बनाया गया है। इससे पहले वे इसी विभाग में विशेष सहायक के पद पर रह चुके हैं।

विक्रम जे. सिंह

'एशियन लाइट' को शीर्ष ब्रिटिश पुरस्कार

ब्रिटिश एशियाई घटनाओं एवं मसलों पर केंद्रित एवं भारतीय मूल के पत्रकार अनासुधीन अज़ीज़ द्वारा संपादित पाक्षिक पत्रिका 'एशियन लाइट' ने वर्ष २०१२ के लिए प्रतिष्ठित 'हाउ-डू-न्यूजपेपर ऑफ द ईयर' पुरस्कार जीता है। इसने पुरस्कार की होड़ में शामिल आठ ब्रिटिश टाइटिलों, जिनमें रुपर्ट मर्डोक के स्वामित्व वाली कंपनी न्यूज़ कॉरपोशन का द टाइम्स, न्यूजक्वेस्ट का द बोल्टन न्यूज़ और जॉन्सटन प्रेस ग्रुप का लैंकास्टर गार्डियन भी शामिल है, में से यह पुरस्कार जीता।

'एशियन लाइट' पत्रिका के संपादक अनासुधीन अज़ीज़ (बायें)।

कमिटी ने अपने फैसले में कहा कि 'एशियन लाइट' ने प्रकाशन के क्षेत्र में गिरती बिक्री एवं कम होती प्रसार संख्या की धारा के विपरीत विकास किया है और इसके लिए उसके पीछे उसका अभिनव समाधान भी कारण है।

OIFC
Overseas Indian Facilitation Centre

Expanding the economic engagement of the Indian diaspora with India

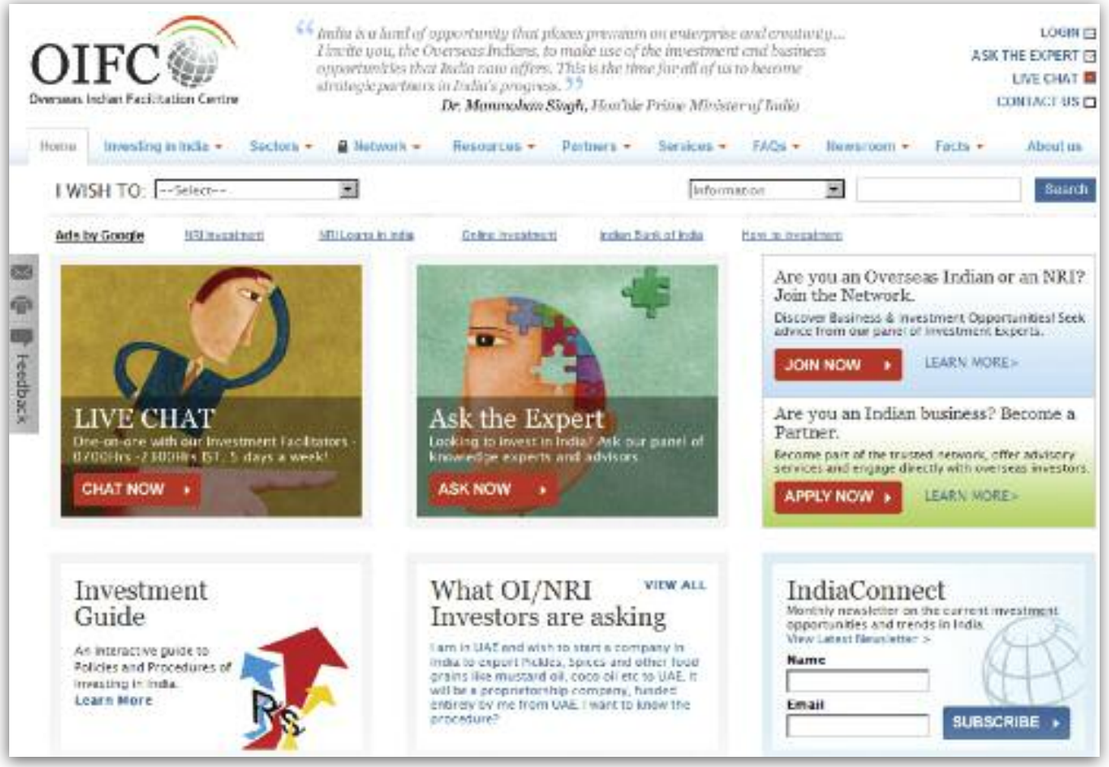

For details contact:

Ms. Sujata Sudarshan
CEO, OIFC, and Director – CII
249-F, sector 18, Udyog Vihar, Phase IV, Gurgaon —122015, Haryana, INDIA
Tel: +91-124-4014055/6 | Fax: +91-124-4309446
Website: www.oifc.in

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय
Ministry of Overseas Indian Affairs
www.moia.gov.in

CII
Confederation of Indian Industry

त्योहारों की संवेदना का उत्सव

देश के लोगों एवं दुनिया भर में फैले भारतीयों ने पारंपरिक फसली त्योहारों – बैसाखी, विशू एवं बीहू – को श्रद्धा एवं जोश से मनाया। इस मौके पर सभी को शुभकामनाएं देते हुए प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने कहा, ''ये सिर्फ फसली उत्सव नहीं है, बल्कि नई शुरुआत के स्वागत का भी अवसर है। मेरी कामना है कि यह आप सभी के जीवन में समृद्धि एवं खुशियां लाये।'' अमेरिका में मेरीलैंड के गवर्नर मार्टिन ओ'मैली ने बैसाखी मनाने के लिए अपने घर के दरवाजे खोल दिए। अन्नापोलिस में उनके घर में १५० से अधिक भारतीय एवं सिख सामुदायिक नेता यह उत्सव मनाने के लिए जमा हुए। केरल में सुबह से सबरीमाला, गुरुवायूर, श्री पद्मनाभ स्वामी मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी थी। दिन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्यक्रम की शुरुआत 'विशुकानी दर्शन' से हुई। बैसाखी का त्योहार मुख्यतः पंजाब में मनाया जाता है, जबकि विशू केरल और रोंगाली बीहू असम में मनाया जाता है।

सत्यमेव जयते

Ministry of Overseas Indian Affairs
www.moia.gov.in
www.overseasindian.in